ओ३म्

क़ुर्आने मजीद

प्रथम भाग

अनुवादक:—

श्री पं० कालीचरण शर्मा,

महोपदेशक तथा सम्पादक

आर्यमुसाफिर, आगरा

प्रथमबार

मूल्य ।)
सजिल्द ।)

* ओ३म् *

निवेदन

संस्कृत अरबी के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० कालीचरण शर्मा सम्पादक आर्यमुसाफिर आगरा की बनाई हुई कुल पुस्तकें हिन्दी, उरदू, अरबी, संस्कृत की हमारे यहां से मिलती हैं। इसके अतिरिक्त और कहीं से नहीं मिल सकेंगी और न इस पुस्तकालय के अतिरिक्त और किसी को छपाने का अधिकार है। विचित्र जीवनी नये रूप में शीघ्र प्रकाशित होकर पाठकों की सेवा में उपस्थित होगा।

नोट—कुरान के अन्य भाग भी शीघ्र प्रकाशित होने वाले हैं. पाठक सबर करें।

निवेदक—

मैनेजर, आर्य्य मुसाफिर पुस्तकालय,

आगरा

श्रीमद् दयानन्द पुस्तकालय
क्रमांक..........
आर्य समाज, बम्बई

ओ३म्

भूमिका

प्रिय सज्जनों ! मेरे बहुत से मित्रों ने मेरी हिन्दी में लिखी हुई यवनमत सम्बन्धी पुस्तकों तथा विचत्र जीवन आदि को पढ़कर ये इच्छा प्रगट की कि यदि आप कुरानका हिन्दी अनुवाद इस प्रकारसे कि जिसमें अरबीकी आयतें हिंदी अक्षरोंमें किसी माननीय बुर्जुगके तर्जुमा (अनुवाद) के साथ अपनी टीका टिप्पणी देकर करदें तो अरबी से वंचित हिन्दी साहित्य प्रेमियों के ऊपर बड़ा ही उपकार हो। क्योंकि यह कार्य ऐसा है कि जिसको हर एक मनुष्य नहीं कर सकता है मुझ को मेरे मित्रों की बार बार याद दिलाने ने विवश कर दिया कि मैं इस कार्य को पूरा करूं अब तक इस कार्य के करने में जो देर हुई उसका कारण सत्यार्थ प्रकाश आदि आर्य सिद्धान्त की पुस्तकों का अरबी अनुवाद था वह परमात्मा की कृपा से बहुत कुछ पूरा होकर अरब आदि देशों में पहुंच कर सफलता को प्राप्त हुआ जब उससे अवकाश मिला तो कुरान के इस प्रथम भागको आयतों तथा तर्जुमा के साथ अरबी के प्रसिद्ध भाष्यकार बैजावी जलालेन–कश्शाफ आदि की सम्मतियों के साथ और उन आयतों पर जो शास्त्रार्थ आदिमें प्रमाण देने में काम आती हैं टीका टिप्पणी केसाथ पाठकों की सेवा में प्रेषित करता मैं जानता हूं कि इस भाग में अरबी आयतों के शब्दार्थ की कमी है उसकी दूसरे भागों में पूर्ती करदी जावेगी इसके अतिरिक्त और जो त्रुटियां पाठक वृन्द पढ़कर बतलावेंगे वह भी अन्य भागों में पूरी कर दी जाऐंगी आशा है कि इस तुच्छ सेवक की

भेंट को पाठक गण स्वीकार करेंगे और इस्लामी मत का स्वाध्याय कर सत्य असत्य का निर्णय कर वैदिक धर्म का महत्व जानकर विधर्मियों को सत्मार्ग पर लावेंगे।

नोट—इसका हिन्दी भाषा में अनुवाद करते समय इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि उन शब्दों का हिन्दी अनुवाद नहीं किया गया है कि जिन के अनुवाद से अरबी भाषा का वह अभिप्राय जो कि उर्दू में हैं बदल जाता है और वह शंकायें अथवा प्रश्न जो कि अरबी व उर्दू के कुरान पर हो सकते हैं हिन्दी अनुवाद में नहीं होते।

विनीत—कालीचरण शर्मा
सम्पादक आर्य मुसाफिर
आगरा

पठनार्थ सूची

पाठकगण नीचे लिखी हुई सूची को कुरान के पढ़ने से पहिले अवश्य पढ़लें ताकि मतलब के समझने में आसानी हो।

अरबी शब्द	हिन्दी अनुवाद	अरबी शब्द	हिन्दी अनुवाद
मंजिल	सोपान	मक्की	जो सूरत मक्के में हज़रत मुहम्मद पर उतरी।
पारा	अध्याय		
सूरत	परिच्छेद	मदनी	जो सूरत हज़रतपर मदीने में उतरी।
रुकूअ.	पाठ		

इस भाग में ढ़ाई अध्याय और ४१ पाठ व २९२ आयतें हैं प्रथम परिच्छेद फ़ातिहा नामक मक्के में उतरा और दूसरा परिच्छेद बक़र नाम का मदीने में उतरा जिसका विवरण इस प्रकार है।

फ़ातिहा परिच्छेद में, ७ आयतें और एक पाठ है और बक़र परिच्छेद २८६ आयतें और ४० पाठ हैं।

पाठकों की सुगमता के कारण अरबी की आयतों के अक्षरों को हिन्दी में इस प्रकार अनुवाद किया है कि उनके स्वर उत्तम, मध्यम लघु उच्चारण के अलग बताने की कोई आवश्यकता नहीं हिन्दी अक्षरों के उच्चारण करते समय वह ध्वनि प्रकट होगी जो अरबी आयतों के पढ़ते समय होती है किन्तु नीचे लिखे हुये अक्षरों का शुद्ध उच्चारण करना सीखलें।

अरबी शब्द	हिन्दी शब्द
ऐन	आ–ई.–ऊ.
ग़ैन	ग़
फ़े	फ़
क़ाफ़	क़
हे	ह़
तोय	त़
ज़ोय	ज़

अरबी शब्द	हिन्दी शब्द
ज्वाद	ज
स्वाद	स.
ज़े	ज
से	स.
ख़े	ख
जाल	ज
हमज़ा	अ.

पूरे कुरान का नकशा

कुल सूरतें (परिच्छेद)	११४
,, रुकूअ (पाठ)	५४०
,, हुरूफ (अक्षर)	३२१२६५
,, कलमात (शब्द)	८६४३०
,, आयतें	३७७९४

नोट—ऊपर का नकशा संक्षिप्त रीति से दिया गया है कुरान का पूरा अनुवाद होने पर उसके अन्त में यह नकशा पूर्णरीति से दिखलाया जावेगा।

विनीत:—

कालीचरण शर्मा, सम्पादक,

आर्यमुसाफिर-आगरा

ॐ

कुरान

प्रथम सोपान, प्रथो ऽध्याय (अ, ल, म)

प्रथम परिच्छेद (सूरतु ल्फातिहा) (मक्की)

प्रथमो पाठ

बिस्मिल्लाहि र्रह्मानिर्रहीम् (१)

भाषार्थ:—मैं अल्लाह के नाम के साथ शुरूअ् करता हूं जो कि बख़्शिश करने वाला और महरबान है।

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन् (२)

भाषार्थ:—सब प्रशंसा अल्लाह के वास्ते है। जो कि दोनों लोकों का पालक है।

अर्रह्मा निर्रहीम् (३)

भाषार्थ:—वह दाता और दयालु है।

मालिके यौमिद्दीन् (४)

भाषार्थ:—वह क़यामत के दिन का स्वामी है।

ईयाका ना'बुदो व ईयाका नस्तईन (५)

भावार्थ:—तेरी ही हम इबादत करते हैं और तुझ ही से हम मदद चाहते हैं।

एहे दिनास्सिरा त्वल मुस्तक़ीम् (६)

भावार्थ:—हम को सीधी राह दिखा।

सिरातल्लज़ीना अनअ़म्ता अ़लैहिम् ग़ैरिल मग़ज़ूबे अ़लैहिम्वलज़्ज़ाल्लीन् (७)

भावार्थ:—उनलोगों की जिन पर तूने महरबानी की है और उनके सिवाय जिन पर गुस्सा किया है राह दिखा न कि रास्ता गुमराहों का।

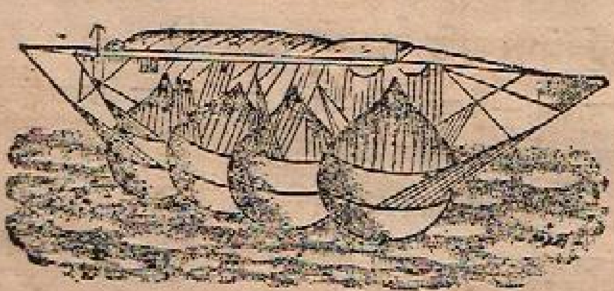

द्वितीय परिच्छेद

(सूरतुल्बक़र) [मदनी]

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् (१)

भावार्थ:—(देखिये सो० १, अ० १, (अ, ल, म,) प० पा० १)

अलिफ़् लाम् मीम् (ज)

भावार्थ:—निरर्थक।

ज़ालिकल्किताबो लारेबाफ़ीहे हुदन्लिल्मुत्तक़ीन् (२)

भावार्थ.—इसमें शक नहीं है कि यह किताब परहेज़ गारों को राह दिखाती है।

अल्लज़ीना योमिनूना बिलग़ैबे व युक़ीमून स्सलाता व मिम्मा रज़क़ नाहुम युन्फ़ेक़ून (३)

भावार्थ:—और जो गुप्त रीति से ईमान लाते हैं और नुमाज़ को क़ायम रखते हैं वो उस चीज़ को खर्च करते हैं जो कि हमने उनको दी है।

वल्लज़ीना योमिनूनाबिमाउन्ज़िला इलयका वमाउन्ज़िला मिनक़ब्लिका व बिल आख़िरतेहुम योक़िनून।

भावार्थ:—और जो लोग ईमान लाते हैं उस चीज़ के साथ जो तेरी तरफ़ उतारी गई है और जो तुम से पहिले उतारी गई है १, वह क़्यामत के साथ यक़ीन रखते हैं.

ऊलाइका अ़ला हुदम्मिरंब्बिहिम व ऊलाइका हुम्मुल मुफ़्लिहून (४)

भावार्थ:—ये लोग अपने परवर्दिगार से हिदायत के पाने वाले हैं. और ये ही लोग छुटकारा पाने वाले हैं।

इन्नल्लज़ीना कफ़रू सवाउन अलैहिम् अनज़रतहुम् अम् लम् तुन ज़िरहुम् लायोमिनून (५)

भावार्थः—जो लोग काफ़िर हैं उनको तेरा डराना या न डराना बराबर है वे ईमान नहीं लायेंगे।

ख़तमल्लाहो अला क़ुलूबे हिम् व अला समअ् हिम् व अला अब सारे हिम् ग़िशावा वलहुम् अज़ाबुन अज़ीम (६)

भावार्थः—अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर की है और उनके कानों व आँखों पर परदा डाला है और उनके वास्ते बड़ा अज़ाब (दुःख) है।

वमिनन्नासे मँइयक़ूलो आमन्ना बिल्लाहे व बिलयौमिल आख़िरे व माहुम् बि मोमिनीन (७)

भावार्थः—और बाज़ लोगों में से वो हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह और पिछले दिन के साथ ईमान लाए और (दर असिल) ईमान लाने वाले नहीं।

युख़ादेऊनल्लाह वल्लज़ीना आमनू वमाँ यख़्दऊना इल्ला अन्फ़ुसहुम् वमायश्उरून (८)

भावार्थः—जो अल्लाह को और उन लोगों को जो कि ईमान लाए हैं धोखा देते हैं वो (दरअसिल) अपनी जानों को धोखा देते हैं (न कि अल्लाह को) और बुद्धि हीन रहते हैं।

फ़ीक़ुलूबेहिम् मरज़ुन् फ़ज़ादहुमुल्लाहो मरज़ा, वलहुम् अज़ाबुन् अलीम् बिमा कानू यक्ज़िबून (९)

भावार्थः—उनके दिलों के बीच बीमारी है, पस (समझ ले कि) अल्लाह ही ने उनकी बीमारी को बढ़ाया है और उनके वास्ते दर्द नाक अज़ाब उनके झूठ बोलने के कारण है।

वइज़ा क़ीला लहुम्‌ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़े क़ालू इन्नना नह्‌नो मुस्‌लिहून्‌ (१०)

भापार्थः—और इनके वास्ते जब यह कहा जाता है कि ज़मीन पर फ़िसाद मत करो तो वे यही कहते हैं कि हम (ज़मीन) पर सुलह करते हैं (नकि फ़िसाद)

आला इन्नहुम्‌ हुम्मुल्‌ मुफ़्सिदूना व लाकिन्लायश उरून्‌ (११)

भापार्थः—(ऐपाठको) ख़बरदार हो दर असिल फ़िसाद करने वाले वे ही हैं लेकिन वे नासमझ हैं।

व इज़ा क़ीला लहुम्‌ आमिनू कमा आमनन्नासो क़ालू अनूमिनो कमा आमनस्सुफ़हाओ आला इन्नहुम्‌ हुम्मुस्सुफ़हाओ वलाकिंल्लायालमून्‌ (१२)

भापार्थः—और उनको जब ईमान लाने के वास्ते कहा जाता है जैसे कि (और) लोग ईमान लाए हैं (तो वे) कहते हैं कि क्या हम बेवक़ूफ़ों की तरह से ईमान लावें। ख़बरदार! (ऐसा कहने वाले) वे लोग बेवक़ूफ़ हैं लेकिन (फिर भी) नहीं समझते।

वइज़ा लक़ुल्लज़ीना आमनू क़ालू आमन्ना () व इज़ा ख़लौ इला शयातीने हिम्‌ () क़ालू इन्नामाकुम्‌ () इन्नमा नह्‌नो मुस्तहज़ेऊन्‌ (१३)

भापार्थः—और जब उन लोगों से जो ईमान लाए हैं मिलते हैं (तो) कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं और जब अकेले होते हैं (तो) अपने सरदारों से कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं और दर असिल उनके साथ ठट्ठा करते हैं।

अल्लाहो यस्तहज़ीओ बिहिम्‌ व यमुदोहुम्‌ फ़ीतु-ग़ियाने हिम्‌ यामहून्‌ (१४)

भावार्थ:—अल्लाह उनको उनके घमंड में खींचता है और उनसे ठट्ठा (भी) करता है और (वे) बहकते हैं।

ऊलायकल्लज़ीना अश्तरो-उज़्ज़लालता बिलहुदा फ़मा रबिहत् त्तजारतोहुम व माकानू मुहतदीन (१५)

भावार्थ:...ये वे ही लोग हैं जिन्होंने हिदायत १४ के बदले गुमराही मोल ली, लेकिन उनकी (इस) तिजारत ने लाभ न उठाया और न राह पाने वाले हुये।

मसलोहुम् कमसलिल्लज़ी अस्तौ क़द नारन् (०) फ़लम्मा अज़ाअ़त माहौलहू ज़हबल्लाहो बिनूरे हिम् व तरकहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्लायुबसिरून (१६)

भावार्थ:...उनकी मिसाल ऐसे शख्स की है जो आग जलादे, पस जब रोशन किया तो जो कुछ उसके पास था (सब) लेगया तब अल्लाह ने उनकी रोशनी लेकर उन्हें अँधेरे में छोड़ दिया (तब उन्हें कुछ) दिखाई नहीं देने लगा।

सुम्मुन बुक्मुन उमियुन फ़हुम् ला यर्जऊन (१७)

भावार्थ:...बहरे, गूंगे, अन्धे हैं अत एव वो नहीं फिरते (अर्थात्) रास्ते पर नहीं आते)

औकसैयबिम् मिनस्समाऐ फ़ीहे ज़ुलमा तुम् वराअ़दुम् वरकुन् (०) यजअ़लूना असाबेअ़ाहुम् फ़ी आज़ाने हिम् मिनस्सवाइक़े हज़रलमौत वल्लाहो मुहीतुन् बिल काफ़िरीन् (१८)

भावार्थ:—या मानिन्द मेंह के आसमान से बीच उसके अंधेरा है गरज है और बिजली है और उसकी कड़क और मौत के डरसे कानों के बीच उँगली करते हैं और अल्लाह घेरने वाला है काफ़िरों को।

भावार्थ—इस आयत में काफ़िरों के कुफ़्र को दरशाया है कि वे

मानो आसमान मेंसे मेंह बरसते हुये, अन्धकारमय बिजली चमकते हुये तथा कड़कते हुये, बादल गरजते हुये मौत के समय का अवलोकन करते हैं और उस भय से कानों में उँगली डालकर भागते हैं परन्तु अल्लाह उन्हें घेर २ कर फिर लाता है।

यकादुल बरक़ो यख़्तफ़ो अबसा़रहुम् कुल्लमा अज़ाआ लहुम् मशु फ़ीहे व इज़ा अज़्लमा अ़लैहिम् क़ामू व लौशा अल्लाहो लज़हबा बिसमअ़हिम व अबसा़रे हिम इन्नल्लाह अ़ला कुल्ले शैयन क़दीर (१६)

भावार्थः—सम्भव है कि बिजली उनकी आँखें उचक ले जावे (बेकार करदे) जब उनको (बिजली) रोशनी देती है (तब) चल लेते हैं (परन्तु) जब अँधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं अगर अल्लाह चाहे तो उनकी आँखें और कान ले जावे (बेकार करदे) निश्चय है कि अल्लाह हर चीज के ऊपर क़ादिर (शक्तिमान) है।

इति प्रथमो पाठः

अथ द्वितीयो पाठ

या ऐयो हन्नासो अ'बुदो रब्ब कुम्मुल्लज़ी ख़लक़ कुम् वल्लज़ीना मिन क़ब्लि कुम् ला अ़ल्लकुम् तत्तक़ून् (२०)

भावार्थः—ऐ लोगो अपने परविर्दिगार की जिसने तुम्हें और जो तुमसे पहिले थे उन्हें पैदा किया है अपने बचने के लिये इबादत करो।

अल्लज़ी ज'अ़ला लकमुलअरज़ा फ़िराशम् वस्समाआ़ बिना अम् व अनज़ला मिनस्समाए मा अन् फ़अख़रजा बिही मिनस्समराते रिज़क़ल्लकुम् फ़ला तज अ़ल् लिल्लाहे अन्दादम् व अन्तुम् ता'लमून् (२१)

भावार्थः—(अल्लाह वही है) जिसने तुम्हारे वास्ते जमीन बिछौना और आसमान को छत बनाया है। आसमान से वर्षा की और उससे फलों को तुम्हारे वास्ते पैदा किया पस अल्लाह के साथ किसी को शरीक मुक़र्रर न करो (जैसा कि) तुम जानते हो।

व इनकुन्तुम फ़ीरैबिम् मिम्मा नज़्ज़लना अ़ला अ़ब्दिना फ़ातू बिसूरतिम मिम्मिस्लेही वअ़दऊ शो-हदाअकुम् मिन्दू निल्लाहे इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् (२२)

भावार्थः—अगर तुमको उस चीज़ में जो कि हमने अपने बन्दे के ऊपर उतारी शक है तो (१)परिच्छेद (सूरत) उसकी मानिन्द बना लाओ और अपने गवाहों को अल्लाह के सिवाय पुकारो यदि तुम सच्चे हो।

फ़इ'न्लम् तफ़अ़लू वलन्तफ़अ़लू फ़अत्तक़ून् नारल्लजीवक़ूदोहन्नासु वलहिजारतो उइ'द्दतलिल काफ़िरीन् (२३)

भावार्थः—पस यदि तुम (उपरोक्त कार्य) न करोगे और कदापि न करोगे तो उस अग्नि से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं और जो काफ़िरों के हेतु तय्यार की गई है।

व बश्शेरिल्लज़ीना आमनू व आमिलुस्सालेहाते अन्नालहुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तहतहलअनहारो कुल्लमा रुज़िक़ू मिनहा मिन्स्समरातिर्रिज़क़न्क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़क़िना मिन क़ब्लो व ऊतू बिही मुतशा-बिहन् वलहुम् फ़ीहा अज़वाजुम् मुतहहरातुव्वं वहुम् फ़ीहा खालिदून् (२४)

भावार्थः—और उनलोगों को खुश खबरी दे जोलोग कि ईमान लाए और श्रेष्ठ काम किये उन के लिये बहिश्तें हैं जिनमें नहरें बहती हैं और उनकोजब मेवे खाने को दिये जाएंगे तो वे कहेंगे कि यह वह चीज़ है कि जोहमको इससे पहिले दिये गये थे (अर्थात् इन चीज़ों का हमको वादा किया गया था) और एक दूसरे के समान लाए जाएंगे. और उन को अच्छी स्त्रियां मिलेंगी और वे वहाँ सदैव रहेंगे.

इन्नल्लाह लायस्तह्यी अँइ यज़्रिबा मसलम् मा बऊज़ तन् फ़मा फ़ौक़हा फ़अम्मल्लज़ीना आमनू फ़यालमूना अन्नहुलहक्क़ोमिर्रब्बिहिम् व अम्मल्लज़ीना कफ़रू फ़ यकूलूना माज़ा अरादल्ला हो बिहाज़ा मस्लन् युज़िल्लो बिही कसीरम्व्व व यहदी बिही कसीरा व मा युज़िल्लो बिही इल्लल्फ़ासिक़ी। (२५)

भावार्थः—अल्लाह मच्छरकी मिसाल बयान करनेसे नहीं शर्माता है जो कि उसके ऊपर है. जो लोग कि ईमान लाए वे जानते हैं कि वह उन के परवर्दिगार की तरफ़ से सच है और जो लोग कि काफ़िर हुए वे कहते हैं कि अल्लाहने ऐसी मिसाल से क्या चाहा है ? (बल्कि) उसके साथ बहुतों को गुमराह करता है और राह दिखाता है.

और फ़ासिक़ों के (क़ुरान पर अमल न करने वालों के) सिवाय किसी को गुमराह नहीं करता है.

अल्लज़ीना यन्क़ुज़ूना अहदल्लाहे मिनबादेमे साक़िही व यक़्त,ऊ,ना मा अमरल्लाहो बिही ऐंयूसला व युफ़्सिदूना फ़िल अरज़े ऊलायका हुम्मुल ख़ा-सिरून (२६)

भावार्थः—जो लोग कि अल्लाह का क़ौल उसकी मज़बूती के पीछे तोड़ते हैं और जो हुक्म अल्लाह ने किया है उसे काटते हैं. ये कि मिलाया जावे और फ़साद करते हैं ज़मीन के बीच, ये लोग टोटा पाने वालों में से हैं.

कैफ़ातकफ़ुरूना बिल्लाहे वकुन्तुम अमवातन फ़अहियाकुम सुम्मा युमेतुकुम सुम्मा युहेयकुम सुम्मा इलहे तुर्जऊन (२७)

भावार्थः—तुम अल्लाह के साथ क्यों कर कुफ़्र करते हो तुम मुर्दे थे पस तुम्हें जिलाया फिर तुमको मुर्दा करेगा फिर तुम्हें जिलावेगा फिर तुमको उसी की तरफ़ फिराया जावेगा. (अर्थात् उसकी आज्ञाका पालन कराया जावेगा.)

हुवल्लज़ी ख़लक़ालकुम्माफ़िल अरज़े जमीअनसुम्म स्तवा इलस्समाए फ़सव्वहुन्ना सबआसमावात वहुवा बिकुल्ले शैयन अलीम् (२८)

भावार्थः—अल्लाह वही है जिसने तुम्हारे वास्ते जो कुछ ज़मीन के बीच है तमाम पैदा किया फिर आसमान की तरफ़क़स्द किया और सात आसमानों को बनाया और वह सब चीज़ों को जानने वाला है.

* इति द्वितीय पाठ *

अथ तृतीय पाठः ।

वइज़ क़ाला रब्बोकालिलमलायेकते इन्नी जायेलुन् फ़िलअरज़े ख़लीफ़ा क़ालू अ तजअलो फ़ीहा मँइ युफ़्सिदो फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमाअ़ वनहनोनुसव्वि हो विहम्दिका व नुक़द्दिसो लका () क़ाला इन्नी आलमो माला ता लमून (२६)

भावार्थ—जब तेरे परवर्दिगारने फ़रिश्तोंके लिये कहा कि मैं ज़मीन के बीच ख़लीफ़ा (सरदार) बनाने वाला हूं तो उन्होंने कहा कि उसके (ज़मीन) के बीच फ़साद करने और ख़ून बहाने वाले शख़्स को क्यों बनाता है हम तेरी पाकी बयान करते हैं तेरी तारीफ़ करते हैं (ख़ुदा) ने कहा कि मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते ।

वअ़ल्लमा आदमल् असमाअ कुल्लहा सुम्मा अर-ज़हुम अ़लल् मलायेकते फ़क़ाला अन् बि ऊनी बि अस्माए हाउलाए इनकुन्तुम् सादिक़ीन् (३०)

भावार्थ—और आदम को सारे नाम सिखाये फिर आदम को फ़रिश्तों के सामने किया फिर कहा (फ़रिश्तों से ख़ुदा ने) मुझको इनके (चीज़ों के जो आदम जानता है) नाम बताओ अगर तुम सच्चे हो ।

क़ालू सुबहानका ला इल्मा लना इल्लामा अ़ल्लम्तना इन्नका अन्तल अ़लीमुल् हकीम् (३१)

भावार्थ—उन्होंने (फरिश्तों ने) कहा कि तू पाक है हमको इल्म नहीं है (जो तूने सिखाया है उसके सिवाय) तूही जानने वाला और हिकमत वाला है ।

क़ाला या आदमो अनबेहुम् बि असमाएहिम् फ़ल-म्मा अनबाहुम् बि अस्माए हिम् क़ाला आलम् अक़ुल

लकुम् इन्नी आलमो ग़ैबस्समावाते वलअर्ज़ो व आलमों मातु व् दूना व माकुन्तुम् तक्तु मून (३२)

भावर्थ—कहा (खुदा ने) ऐ आदम् तू उनको (फरिश्तों को) उनके (चीजों के) नाम बता दे जब उनको उनके नाम बता दिये तब (खुदा ने) कहा, क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं आसमानों, व जमीनां की छिपी चीजें जो तुम जाहिर करते हो और जो तुम छिपाते थे वो सब चीजें जानता हूं ?

व इज़ क़ुलना लिल् मलायेकते अस्जुदूलेआदमा फ़सजदू इल्ला इब्लीसा अबा व अस्तकबरा व काना मिनल् काफ़िरीन् (३३)

भावार्थः—और जब हमने फ़रिश्तों से आदम को सिजदा (दण्डवत् प्रणाम) करने लिये कहा तो सिजदा किया। मगर शैतान ने न माना और ग़रूर किया और (इसलिये) वह क़ाफ़िरों में से था।

व क़ुलना या आदमो अस्कुन् अन्ता व ज़ौजुकल्ल-जन्नता व कुला मिनहा रग़दन् हैसो शैतुमा व लातक़-रबा हाज़ेहिश्शजरताफ़तकूना मिनज़्ज़ालिमीन् (३४)

भावार्थः—और हमने कहा ऐ आदम तू और तेरी जोरू बहिश्त में रह। और उसमें से तुम जहां चाहो आराम के साथ खाओ और उस (गेंहू के) दरख्त के पास मत जाओ (नहीं तो) ज़ालिम हो जाओगे।

फ़ अज़ल्ल हुमश्शैतानो अनहा फ़अखरज हुमा मिम्मा काना फ़ीहे व क़ुलना अहबेतू बाअज़ुकुम् लिबाजिन् आदुव्वुन् व लकुम् फ़िलअर्ज़े मुस्तक़र्रु म्व मताउन इला हीन् (३५)

भावार्थः—पस उनको (आदम का और उसकी स्त्री को) शैतान ने उससे (अर्थात् गेंहू खिला दिया) डिगाया तो उन दोनों को उस चीज से जिसके बीच (बहिश्त) थे निकाल दिया। और हमने कहा उतरो !

तुम्हारे बाज़े (लोग) बाज़ के दुश्मन हैं और तुम्हारे लिये ज़मीन में ठिकाना है। और एक वक़्त तक फ़ायदा है (अर्थात् क़यामत तक)

फ़तलक़्क़ा आदमो मिर्रब्बिही कलेमातिन् फ़ताबा अलैहे इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम् (३६)

भावार्थ—पस आदम ने अपने परवर्दिगार से कुछ बातें सीख लीं उस पर आया (अमलकिया) निश्चय है कि वही फिराने वाला और महरबान है।

कुलना अह्बेतू मिनहा जमीअन फ़इम्मा याते यन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़मन्तबिआ हुदाया फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह़ ज़नून् (३७)

भावार्थ—हमने कहा (आदम से) कि इससे (बहिश्त से) सब उतरो और जो कोई हिदायत मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास आवेगी और जो कोई मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो उन पर कोई डर नहीं है और न वो ग़म खायेंगे। (अर्थात किसी प्रकार का दुख न होगा)

व ल्लज़ीना कफ़रु व कज़्ज़बू बि आयातिना ऊलायका असहाबुन्नारे हुमफ़ीहा ख़ालिदून् (३८)

भावार्थ—और जो लोग कि क़ाफ़िर हुए और हमारी निशानियों को झूठा बतलाया, वे लोग आग (दोज़ख़) के रहने वाले हैं और उसमें सदैव रहेंगे।

इति तृतीय पाठः

अथ चतुर्थ पाठ ।

या बनी इसराईला अज़्कुरू निअ्मतिल्लती अन-अम्तो अलैकुम् व औफु बे अ्हदी ऊफ़े बि अ्हदे कुम् व ईय्या या फ़अ्रहबून् (३९)

भावार्थ—ऐ याकूब के पुत्रो मेरी निआमत को याद करो जो मैंने तुम्हें बख्शी है और मेरे अहद को पूरा करो मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा और मुझ से डरो।

व आमिनू बिमा अन्ज़लतो मुसद्दिक़ं-ल्लमा मअ् कुम् वलातकूनू अव्वला काफ़िरिन् बिहीवलातश्तरू बिआयाती समनन् क़लीलम् व ईय्याया फ़त्तकून् (४०)

भावार्थ—और उस चीज के साथ जो मैंने उतारी ईमान लाओ उस चीज को जो तुम्हारे पास है (तौरात और इञ्जील) उसको सच्चा करने वाली है उसके साथ पहले काफ़िर मत बनो मेरी आयतों के बदले मोल थोड़ा मत लो और मुझ से डरो।

वलातल्बिसुल् हक़्क़ा बिल्बातिले व तक्त मुल हक़्क़ा व अन्तुम् ताअ्लमून् (४१)

भावार्थ—सच को झूठ के साथ मत मिलाओ और सच को मत छिपाओ (जैसा कि) तुम जानते हो।

व अक़ीमुस्सलाता व आतुज़्ज़काता व अर्कऊमा अर्राकिईन (४२)

नुमाज़ को क़ायम करो ज़कात (दान) दो और सिजदा (झुको) करो सिजदा करने वालों के साथ।

आता मुरू नन्नासा बिल बिर्रे व तन्सौना अन फुसकुम् व अन्तुम तत लूनल् किता बा आफ़लाताअ्क़िलून (४३)

भावार्थ—तुम लोगों को भलाई के साथ क्या हुक्म करते हो और अपनी जानों को भूले जाते हो और तुम किताब को पढ़ते हो क्या (फिर भी) नहीं समझते हो।

व इस्तईनु बिस्सब्रेवस्सलाते व इन्नहा लेकबीरतुन् इल्ला अलल खाशेईन् (४४)

भावार्थ—मदद चाहो (अल्लाह से) सब्र करो नमाज़ के साथ और यह निश्चय है कि वह बड़ी है मगर आजिज़ी (खाकसारी) करने वालों पर।

अल्लज़ीना यज़ुन्नूना अन्नहुम् मुलाकू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहे राजेऊन (४५)

भावार्थ—वह लोग जानते हैं कि वह अपने ईश्वर से मिलने वाले हैं और वह उसकी तरफ फिर जाने वाले हैं।

इति चतुर्थ पाठ

अथ पांचवा पाठ

याबनी इसराईला अज़ कुरूनये मयस्ततो अन अमतो अलैकुन व अन्नी फ़ज़्ज़लतोकुम् अलल आलमीन (४६)

भावार्थ-ऐ इस राईल के बेटो तुम मेरी महर्बानियों को याद करो जो मैंने तुमको दी हैं और यह कि मैंने तुमको दोनों जहान (लोक तथा परलोक) पर बड़ाई दी है।

व अत्तकू यउमल्लातजज़ी नफ़ सुन अन नफ़ सिन शय अंव्वला युक़बलो मिनहाशफ़ाअतुंव्वला यूख़ज़ो मिनहा अदलुंव्वलाहुं व युन सरून (४७)

और उस दिन से डरो कोई किसी की मदद न करेगा और न उससे शिफारस कबूल की जावेगी और न उससे बदला लिया जावेगा और न उसकी मदद की जावेगी (यह कियामत का दृश्य है)॥

व इज़नज्जी नाकुम्मिन अलि फ़िरऊ़ना यस् मून कुन सूअ तअज़ाबि यूज़ ब्बिहहूना अबना अकुंम व यस्त हुयू‌ना निसा अकुंव फ़ी ज़ालिकुम बला उंव मिर्रबिबकुंम अज़ीम (४८)

भावार्थ-और जब हमने तुमको फ़िर ऊ़न कौम से छुड़ाया कि वे तुमको अत्यन्त दुख देते थे वह तुम्हारे बेटों का काटते थे और तुम्हारी बेटियों को जीता रखते थे इसमें तुम्हारे ईश्वर की बड़ी जांच थी॥

व इज़ फ़रक़ना बिकुमुल बहराफ़अंजीनाकुंम व अग़रक़ना आला फ़िरऊ़ना व अतुंम तंज़ुरून (४६)

और जब हमने तुम्हारे लिये दरिया को फाड़ा तो हमने तुमको छुटकारा दिया और फिर यून के लोगों को डुबो दिया (जिसको) तुम देखते थे।

व इज़ वाअ़दना मूसा अरब ईना लैइलतन सुम्मा अत् ख़ज़ तुमुल इजला मिन बादही व अन्तुम ज़ालिमून (५०)

भावार्थ—जब हमने मूसाको चालीस रातका वादा किया फिर तुमने गाय का बच्चा पकड़ा। (अर्थात् तुम उसकी पूजा करने लगे) और तुम जालिम थे।

सुम्मा अ़फ़ूना अ़नकुम मिन बादि ज़ालिका ला अ़ल्ल कुम तश् कुरून (५१)

भावार्थ—फिर हमने तुम को इसके पीछे माफ़ किया ताकि तुम शुक्र करो।

व इज़ आतैना मूसल किताबा वल फुरक़ाना ला अ़ल्ल कुम तहतदून (५२)

भावार्थ—और जब हमने मूसा को किताब और करामात दी ताकि तुम राह पाओ।

व इज़क़ाला मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि इन्नकुमज़लमतुम् अन फुसकुम बित्तख़ाज़िकुमुल इजला फ़तूबू इलाबारीयकुम फ़क़्तुलू अन फुसकुम ज़ालिकुम ख़ैरुल लकुम इन्दा बारीयकुम, फ़ताबा अलइकुम, इन्नहू हुव त्तव्वाबु-र्रहीम (५३)

भावार्थ—और जिस वक्त मूसा ने अपनी क़ौम के वास्ते कहा ऐ मेरी क़ौम तुमने बछड़े को पकड़ कर (अर्थात् पूज कर) अपनी जानों पर जुल्म किया पस अपने पैदा करने वाले की तरफ़ तोबा करो और अपनी जानों को मारो [अर्थात् पश्चाताप करो] यही तुमको पैदा करने वाले के नजदीक बेहतर है पस फिराया तुम्हारे ऊपर वह निश्चय है कि वह फिराने वाला महरबान है।

व इज़्कुल्तुम् या मूसा लन्नूमि-ना लकाहत्ता नर-ल्लाहा जाहरतन् फ़अख़जतकुम्मुस्साइक़तु व अन्तुम्त-न्ज़ुरून (५४)

भावार्थः—और जब हमने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ ईमान न लावेंगे। तेरे वास्ते यहां तक कि हम देख लें अल्लाह को ज़ाहिर तब तुम पर बिजली पड़ी और तुम देखते थे।

सुम्मा बअस्नाकुम् मिन्बाऽअ़दे मउनिकुम् लअ़ल्-लकुम् तश्कुरून (५५)

भावार्थः—फिर हमने तुम को तुम्हारे मरने के बाद जिलाया ताकि तुम अल्लाह का शुक्र करो।

व ज़ल्लल्ना अलइकुमुल् ग़मामा व अन्ज़ल्ना अलयकुमुल् मन्ना वस्सल्वा, कुलूमिन्तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम, वमाज़लामूना वला किन् कानू अन्फु-साहुम् यज़्लिमून (५६)

भावार्थः—और हमने तुम्हारे ऊपर बादल का सायबान [छप्पर] किया और हमने तुम्हारे ऊपर मन्ना और सलवा [एक प्रकार के पक्षियों का मांस] उतारा कि खाओ उस पाक चीज़ से जिसको हमने तुमको दिया और उन्होंने हम पर ज़ुल्म न किया बल्कि वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

नोट—यह उस वक़्त का क़िस्सा है कि जब फ़िरऊन बादशाह दरयामें डूब गया और इस्राईल नाम की क़ौम उसकी जेल से छूट कर जंगल में चली तो उनको बहुत कष्ट हुआ तो खुदा ने मन्ना और सलवा नाम का खाना उतारा और उन्होंने बहुत दिन खाया फिर उनके जीने उससे उचाट खाकर खुदा से लहसन और प्याज़ मांगा।

वइज़ कुल्ना अद्ख़ुलू हाज़िहिल क़रीयता फ़कुलू मिनहा हैसो शैतुम् रग़दम् वअ़द ख़ुलुल्बाबा सुज्जदम् वक़ूलू हित्तःतुन्नग्फ़िर लकुम् ख़ताया कुम् () वसन-ज़ीदुल्मुहसेनीन (५७)

भावार्थ—और जब हमने कहा कि इस गाँव में दाख़िल हो जाओ इस में जहां तुम चाहो फ़राग़त के साथ और दरवाजे में सिजदा करते हुये दाख़िल हो और कहो कि हम बख़शिश मांगते हैं हम तुम्हारी ख़ताऐं बख़शेंगे और नेकी करने वालों को हम जरूर जियादा देंगे।

फ़बद्दलल्लज़ीना ज़लमू क़ौलन ग़ैरल्लज़ी क़ीलालहुम् फ़अन्ज़लना अ़लल्लज़ीना ज़लमू रिजज़म् मिनस्समाये बिमा कानू यफ़सुक़ून (५८)

भावार्थ—पस उन लोगों ने जिन्होंने जुल्म किया थी बात को जो उनको कही गई थी बदल डाला तो हमने उन लोगों पर जो जुल्म करते थे आसमान से अज़ाब (दुख) उतारा इस कारण कि वह गुनाह करते थे।

* इति पांचवां पाठ *

अथ छटवां पाठ

व इज़ इस्तसक़ा मूसा लिक़ौमहीफ़ कुलना अज़-रिब बिअसाकल हजरा () फ़अन्फ़जरत मिनहो असनता अशरता अैनन क़द अलिमा कुल्ल उनासिम् मशरबंहुम () कुलू अशरबू मिररिज़ क़िल्लाहे व ला तासौफ़िलअरज़े मुफ़सिदीन (५९)

भावार्थ—और जब मूसा ने अपनी क़ौम के वास्ते पानी मांगा तो हमने कहा कि तू अपनी लाठी को पत्थर के साथ मार पस उसमें से बारह चश्मे बह निकले निश्चय कर हर आदमी ने अपना घाट जाना तुम खाओ और पीओ अल्लाह के दिये में से और ज़मीन के बीच फ़िसाद करते हुये मत फिरो।

व इज़्क़ुल्तुम् या मूसा लन्नस्बिरा अ़ाला तआ़ऽमिव्वाहिदिन् फ़द्उलना रब्बकायुख़्रिजलनामिम्मा तुन्बितुल अर्ज़ुमिन् बक़्लिहा व क़िस्सा इहा वफ़ूमिहा व अदसिहा व बसलिहा क़ाला अतस्तब्दिलूनऽल्लज़ी हुवा अद्ना बिल्लज़ी हुवा खय्रुन, इह्बितू मिस्रन् फ़इन्ना लकुम्मासा अल्तुम्, व ज़ुरिबत् अ़लय्हिमु-ज़्ज़िल्लतु वल्मस्कनतु व बाऊ बिग़ज़बिम्मिनल्लाहि, ज़ालिका बिअन्नहुम् कानू यक्फ़ुरूना बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलून-न्नबिय्यीना बिग़य्रिल् हक़्क़ि, ज़ालिका बिमाअ़सउ् ऽव्वाकानूयाअ़्तदून (६०)

भावार्थ—और जब तुमने कहा ऐ मूसा हरगिज़ हम सबर न करेंगे एक खानेपर परन्तु हमारे वास्ते अपने खुदासे उस चीज़ को मांग कि जो कि ज़मीन उगाती है साग ककड़ी गेहूं मसूर और प्याज़ कहा (हमने) क्या बदलतेहो अच्छी चीज़से बुरी को और उतरो किसी शहरमें निश्चय करतुम्हारेलिये वही है जो तुमने मांगा और पड़ी उनपर (अपमान) ज़िल्लत और फ़क़ीरी (कंगाली) और फिर गुस्से के साथ अल्लाह से आये इसका कारण यह है कि खुदा की निशानियों के साथ कुफ़्र (दुष्टता) करते थे और पैगम्बरों को नाहक़ (बिना कारण) मार डालते थे यह इसलिये कि उन्होंने खुदा के हुक्मों को न माना और उसके नियमों को तोड़ दिया था।

* इति छटवां पाठ *

अथ सातवां पाठ

इन्नल्लज़ीना आमनू वल्लज़ीना हादूवन्नसारा वस्साबिईना मन् आमिना बिल्लाहि वल्यउमिल् आख़िरि वअमिला सालिहन् फ़लहुम् अजुरुहुम् इन्दा रब्बिहिम्, वलाऽख़उफ़ुन् अलयहिम् वलाऽहुम् यह् ज़नून

भावार्थ—निश्चय है कि जो लोग ईमान लाये और वह लोग कि जो यहूदी हुये और ईसाई और वे दीन जो कोई ईमान लावे खुदा के साथ और पिछले दिन के साथ और काम करे अच्छे पस उसका फल उनको उनके मालिक के नज़दीक है और न उन पर कोई डर है और न वह दुख उठावेंगे ।

व इज़् अख़ज़नाऽ मीसाऽक़कुम् व रफ़अ्नाऽफ़उ् काकुमु त्तूर, ख़ुज़मा आतय्नाकुम्बिक़ुव्वतिंव्वअज़्कुरू माफ़ीहि लअल्लकुम् तत्तक़ून (६१)

भषार्थ—और जब हमने तुम्हारा अहद लिया और तुम्हारे ऊपर पहाड़ को हमने उठाया पस जो कुछ हमने तुम को दिया है मजबूती से पकड़ो और जो कुछ उसमें है उसको याद करो ताकि तुम बचो (गुनाहों से)

सुम्मा तवल्लय्तुम्मिनबाअ्दि ज़ालिका, फ़लउ् लाऽ फ़ज़्लुऽल्लाहि अलय्कुम् व रहमतुहू लकुन्तुम् मिनऽल्ख़ासिरीन (६२)

भावार्थ—फिर उसके पीछे तुम फिर गये अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल (ईश्वर की कृपा) और रहमत न होती तो जरूर तुम नुक़सान पाने वाले हो जाते [मर जाते]

व लाक़द् अलिम् तुमुल्लज़ीनाश्रा दउमिन्कुम् फ़ि स्सब्ति फ़कुल्ना लहुम् कूनू क़िरादतन् खासिईन (६३)

भावार्थ—और निश्चय कर तुम यह जानते हो उन लोगों को कि जो तुम में से हफ्ते के बीच हद (धर्म की सीमा से) निकल गये पस हमने उनको कहा कि तुम ज़लील बंदर हो जाओ ।

फ़जाअल्नाहा नकालल्लिमा बय्ना यदइ हाऽ वमाखल्फ़हा वमउइज़ातल्लिल्मुत्तक़ीन (६)

भावार्थ—पस हमने इस किस्से को बंदिश के तौर पर उनको जो आगे पीछे उनके थे किया और परहेजगारों को नसीहत के लिये

व इज़क़ाला मूसा लिक़उमिही इन्नल्लाहा यामुरुकुम् अन्तज्बहू बक़रतन् क़ालूआ अतत्तख़िज़ुना हुज़ुवन् क़ाला अऊज़ु बिल्लाहि अन् अकूना मिनऽल् जाहिलीन ६५)

भावार्थ—जब मूसा ने अपनी क़ौम के वास्ते कहा कि निश्चय कर अल्लाह यह हुक्म करता है कि तुम एक बैल जिबह करो उन्होंने कहा क्या तू हमारे साथ ठट्ठा करता है तो कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूं क्योंकि मैं जाहिलों में से हूं ।

क़ालुऽऽदुउ लना रब्बका युबय्यिंल्लनामाहिया क़ाला इन्नहू यक़ूलु इन्नहा बक़रतुल्ला फ़ारिज़ुव्वला बिक्रुन् अवानुन् बय्ना ज़ालिक, फ़ऽफ़्अलू मातूमरून (६६)

भावार्थ—उन्होंने कहा कि अपने रब से हमारे वास्ते दुआ करो कि हमारे लिये बतलावे कि वह बैल क्या है (तो) कहा कि वह कहता है निश्चय कि वह बैल न बड़ा है न बूढ़ा न जवान है उसके बीच का है पस करो जो तुम को आज्ञा दी जाती है ।

क़ालुऽऽद्उलना रब्बका युबय्यिंल्लना मालउ-नुहा क़ाऽला इन्नहू यक़ूलु इन्नहा बक़रतुन् सफ़्राउ फ़ाक़िउल्लउनुहा तसुर्रुन्ना ज़िरीन ॥६७॥

भावार्थ—उन्होंने कहा कि अपने रब से हमारे लिये दुआ कर कि हमको बतलावे कि उसका रंग कैसा है तो कहा कि निश्चय कर रब कहता है कि वह बैल जर्द डहडहा है उसका रंग देखने वालों को खुश करता है।

क़ालुऽद्उलना रब्बका युबय्यिँ ल्लनाऽमाहिया, इन्नल् बक़रा तशाबहा अलयना, व इन्ना इन्शाअल्लाहु लमुह्तदून (६८)

भावार्थ—उन्होंने कहा तू हमारे वास्ते अपने परवरदगार से दुआ कर कि बयान करे वह हमको कि क्या है वह बैल निश्चय कर मिल गया हमको और अगर अल्लाह ने चाहा तो जरूर हम राह पाने वाले हैं।

क़ाऽला इन्नहू यक़ूलु इन्नहा बक़रतुल्लाऽज़लूलुन् तुसीरुल् अर्ज़ा वला तस्क़िल्हर्सा, मुसल्लमातुल्ला शियता फ़ीहा क़ालू अल्आनाजइना बिल्हक़्क़ि, फ़ज़ा-बहूहा वमा कादूयफ़्अलून (६६)

भावार्थ—कहा निश्चयकर वह कहता है कि वह बैल न जोता हुआ है कि जमीन को फोड़े और न पानी देने वाला है खेती को बल्कि वह हृष्ट पुष्ट है और न उसमें कोई दाग है। जैसे कि निशान का दाग देकर चढ़ावा चढ़ाते हैं उन्होंने कहा अब तूने सच बताया तो उन्होंने उसको जिबह किया हालां कि वह करने वाले न थे।

* इति सातवाँ पाठ *

अथ अठवां पाठ

व इज़्क़तल्तुम् नफ़सन् फ़द्दारातुम्फ़ीहा वल्लाहु मुख़्रि.जुम्माकुन्तुम् तक्तुमून (७०)

भावार्थः—और जब तुमने एक जान को मार डाला और फिर तुमने उसमें इख़्तलाफ़ किया और जो तुम छिपाते थे उसको अल्लाह निकालने वाला है।

फ़क़ुल्नाअज़्रिबूहु बिबअज़िहा कज़ालिका युह्यिल्ला-हुल्मउ्ता वयुरीकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् ताअ्-क़िलून (७१)

भावार्थः—तो हमने कहा कि उसको एक टुकड़े के साथ मारो इसी तरह अल्लाह मरे हुओं को जिन्दा करता है और तुम को अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझो।

नोट—इस राईल की क़ौम में एक शख़्स मारा गया था। उसका मारने वाला मालूम न था उसके मालिक हर किसी पर दावा करते थे ईश्वर ने उसको इस तरह जिलाया फिर उसने बताया कि इन दोनों ने ही मारा था।

सुम्मा क़सत्कुलू बुकुम्मिनबाअ़्दि ज़ालिका फ़हिया कल्हिजारति अउ् अशद्दु क़स्वतन्, व इन्ना मिनल्हिजारति लमा यतफ़ज्जरु मिनहुल अनहारु, व इन्ना मिन्हा लमा यश्शक़्क़ु फ़यख़्रुजु मिन्हुल्माउ, व इन्ना मिनहा लमा यह्बितु मिन्ख़श्यतिल्लाहि, व माल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा ताअ्मलून (७२)

भावार्थः—और फिर उसके पीछे तुम्हारे दिल सख़्त हो गये और वह मानिन्द पत्थरों के ज्यादह सख़्ती में हैं और निश्चय कर

बला मन् कसबा सय्यिअतव्व आहातत् बिही खतीअतुहू फ़उलाइका अस्हाबुन्नारि, हुम् फ़ीहा खालिदून (७९)

भावार्थः—हां जो कोई बुराई करे और उसकी खता उसको घेर ले ये लोग निश्चय कर आग के बीच (दोज़ख) में सदैव रहने वाले हैं।

वल्लज़ीना आमनू व आमिलुस्सालिहाति उलाइका अस्हाबुल्जन्नति, हुम फ़ीहा खालिदून (८०)

भावार्थः—और जो लोग ईमान लाये (अल्लाह और रसूल पर) और श्रेष्ठ काम किये यह लोग बहिश्तमें सदैव रहने वाले हैं।

* इति अठवां पाठ *

अथ नवां पाठ

व इज् अख़ज़्ना मीसाक़ा बनी इस्राईला लातअ्-बुदूना इल्लल्लाहा, व बिल् वालिदय्नि इह्सानउव्वज़िल् क़ुर्बा वल् यतामा वलमसाकीनि व क़ू.लू लिन्नासि हुस्नउव्व अक़ीमुस्सलाता व आतु-ज़्ज़काता, सुम्मा तवल्ल-यतुम् इल्ला क़लीलम्मिनकुम व अन्तुम्मुअ्‌रिज़ून (८१)

भावार्थ—और जब हमने बनीइसरायल का क़ौल लिया कि न पूजा करो तुम सिवाय अल्लाह के और मा बाप और क़रीबी रिश्ते-दार और यतीम (अनाथ) और फ़क़ीरों पर अहसान करो और कहो लोगोंके लिये भलाई कहो और नुमाज़ को क़ायम रक्खो और ज़कात (ईश्वर की राह में ख़ैरात करना) को दो किन्तु (शोक) तुम फिर गये और विशेषतया तुम में से थोड़े और (निश्चय कर) तुम मुंह फेरने वाले हो।

व इज् अख़ज़्ना मीसाक़कुम् ला तस्फ़िकूना दिमा-अकुन् व ला तख़्रुजूना अन्फ़ुसाकुम्मिन् दियारिकुम् सुम्मा अक़्रतुंम व अन्तुम् तश्हदून

भावार्थ और जब हमने तुमसे क़सम अर्थात् शपथली कि तुम आपस में ख़ून न बहाओ और न अपने घरों में से किसी अपने को निकालो फिर तुमने इक़रार किया तुम स्वयं साक्षी हो।

सुम्मा अन्तुम् हा उलाइ तक़्तुलूना अन्फ़ुसाकुम् व तुख़्रिजूना फ़रीक़म्मिनकुम्मिन्दियारिहिम् तज़ाहरूना अलयहिम् बिल इस्मि वल् उद्वानि, व इँय्यातू कुम (८२)

उसारा तुफ़ादूहुम् व हुवा मुहर्रमुन् अलयकुम् इख़्रा जुहुम्, अफ़ातुमिनूना बिब़अ्ज़िल्किताबि व तक्फु-रूना बिबअ्ज़िन्, फ़मा जज़ाउ मँय्यफ़्अलु ज़ालिका मिन्कुम् इल्ला खिज़युन् फ़िल् हयातिद्दुन्यावयउमल् क़ियामति युरद्दूना इला अशद्दिल् अज़ाबि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा ताअ्मलून (८३)

भाषार्थ—तुम वह लोग हो जो अपने को मार डालते हो और अपने में से एक फिर्के को उनके घरों में से स्वयं निकाल देते हो और उन पर तुम गुनाह और जुल्म करते हो अगर तुम्हारे पास वह बन्दीवान होकर आते हैं तुम उनको बदला देके छुड़ाते हो उनका निकाल देना तुम पर हराम (निषेध) है क्या तुम बाज़ (कुछ) किताबों पर ईमान लाते हो और कुछ के साथ कुफ़ (अधर्म) करते हो तुम में से जो शख्स संसार में बुराई करे उस पर क्या दंड है और कयामत के दिन इन लोगों पर कठोर दंड होगा ईश्वर इस चीज से वे खबर नहीं कि जिसको तुम करते हो।

उलाइकल्लज़ीनाअश्तरावुल्हयातद्दुन्याबिल्आ-खिरति, फ़ला युखफ़्फ़फ़ु अन्हुमुल् अज़ाबु वलाहुम् यु-न्सरून (८४)

भाषार्थ—यह वह लोग हैं कि जिन्होंने दुनियां की जिन्दगी को आखरत के बदले में मोल लिया है पस उनसे (खुदा का) दंड हलका न किया जायगा और न उनकी मदद की जायगी.

* इति नवां पाठ *

अथ दसवां पाठ

वलक़द् आतय्ना मूसल्किताबा व क़फ़्फ़य्नामिन बाअ्दिही बिर्रुसुलि, व आतय्ना ईसाइब्ना मर्यमल् बय्यि-नाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल् क़ुदुसि, अफ़ा कुल्लमा जाअकुम् रसूलुन् बिमाला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुं अस्त-क्बर्तुम, फ़फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून (८५)

भावार्थ—और निश्चय कर हमने मूसा को किताब दी और उसके पीछे हमने पैगम्बर भेजे और हमने मरियम के पुत्र ईसा को करामातें दीं प्रत्यक्ष और हमने उसकी पाक रूह (पवित्र आत्मा) को शक्ति दी तुम्हारे पास जब हमारा पैगम्बर (मुहम्मद साहब) आया उस वस्तु के साथ जिसको तुम्हारे जी नहीं चाहते तुमने घमंड किया कि एक गिरोह को झूट लाते हो और दूसरे को मार डालते हो.

व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल्लअनहुमुल्लाहु बि-कुफ़्रिहिम् फ़क़लीलम्मा यूमिनून (८६)

भावार्थ—और उन्होंने कहा कि हमारे दिल गिलाफ़ में हैं (अर्थात् लिपटे हुए हैं) खुदा ने उनके कुफ़्र के कारण उन पर लानत की उनमें से बहुत थोड़े (इस क़ुरान पर) ईमान लाते हैं.

व लम्मा जाअहुम् किताबुम्मिन् इन्दिल्लाहि मुस-द्दिक़ुल्लिमा माअहुम् व कानूमिन्क़ब्लु यस्तफ़्तिहूना अ़लल्लज़ीना कफ़रू, फ़लम्मा जाअहुम्मा अ़रफ़ू कफ़रू बिही, फ़लाअ़नतुल्लाहि अ़लल् काफ़िरीन (८७)

भावार्थ—और जब अल्लाह के पास से उनके पास किताब आई जो कि उस चीज़ को सिद्धि करने वाली है जो उनके साथ है (अर्थात् तौरेत व इंजील) और इससे पहले काफ़िर लोगों के ऊपर

फ़तह मांगते थे पस जब उनके पास जो कुछ कि पहिचाना था आया और उससे मुकर गये तो अल्लाह् की मुकरने वालों पर लानत है.

बिअ्समश्तरउ बिही अन्फ़ुसाहुम् अँय्यक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़यन् अँय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन्फ़ज़्लिही अ़ला मँय्य शाउ मिनइबादिही, फ़बाऊ बिग़ज़बिन् अ़ला ग़ज़बिन् , वलिल्काफ़िरीना अ़ज़ाबुम्मुहीन (८८)

भाषार्थ---जो कुछ उन्होंने अपनी जानो के बदले मोल लिया है बुरा है और यह कि जिस चीज़ को अल्लाह् ने उतारा सरकशी के साथ मुकर जावें (अर्थात् कुरान को नहीं मानें) और खुदा उतारे अपनी महरबानी से अपने बन्दों में से जिस पर चाहे फिर अत्यंत क्रोध किया और मुकरने वालों के लिये (अल्लाह का) बदनाम करने वाला दंड है.

व इज़ा क़ीला लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नूमिनु बिमा उन्ज़िला अलय्ना व यक्फ़ुरूना बिमा वराअहू, व हुवल् हक्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा मआहुम् क़ुल्फ़लिमा तक़्तुलूना अन्बियाअल्लाहि मिन्क़ब्लु इन्कुन्तुम्मोमिनीन (८९)

भाषार्थ---और जब कि कहा जाता है कि उस चीज पर ईमान लाओ जो अल्लाह् ने हम पर उतारा है और उस चीज के साथ (कुरान) जो कि स्वयं सत्य है और जिसकी वह मानते हैं सच्चा करने वाला है उससे विमुख होते हैं तू कह (मुहम्मद) अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह् के पैगम्बरों को पहले क्यों मार डालते थे.

वला क़द्जाअकुम्मूसा बिल् बय्यिनाति सुम्मात्तख़ज़्तुमुल् इज्ला मिन् बाअ़दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (९०)

भावार्थ--निश्चय कर मूसा तुम्हारे पास दलीलों(प्रमाणों) के साथ आया और तुम उसके बाद गाय के बछड़े को पूजने लगे और तुम जुल्म करने वाले हो.

व इज् अख़ज़्ना मीसाक़कुम् व रफ़अ़्ना फ़ौक़कुमुत्तूरा, ख़ुज़ू मा आतय्नाकुम बिक़ुव्वतिंव्वअ़्समऊ, क़ालू समिअ़्ना व अ़सय्ना, व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल् इज्ला बिकुफ़्रिहिम् क़ुल्बिअ़्समायाअ्मुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन्कुन्तुम्मोमिनीन् (९१)

भावार्थः—और जब हमने तुम्हारा अहद लिया और तुम्हारे ऊपर पहाड़ को उठाया जो कुछ तुमको हमने दिया है। उसको जोर से पकड़ो और सुनो उन्होंने कहा हमने सुना और हमने न माना। और उनके दिलों में बछड़े की मुहब्बत पिलाई गई थी उनकी विमुखता के कारण तू कह वह बुरा है कि तुम्हारा ईमान तुमको हुक्म करता है अगर तुम ईमान वाले हो।

क़ुल इन्कानत् लकुमु-दारुल् आख़िरतु इ़न्दल्लाहि ख़ालिसतम्मिन्दूनि-न्नासि फ़तमन्नवुल मउता इन्कुन्तुम सादिक़ीन (९२)

भावार्थः—तू कह तुम्हारे वास्ते अल्लाह के निकट आखिरत का घर है सिवाय खास लोगों के पस तुम मौत की आरजू करो यदि तुम सच्चे हो।

वलँ य्यतामन्नउहु अबदन् बिमा क़द्दमत् अय्दीहिम् वल्लाहु अ़लीमुन् बि-ज़्ज़ालिमीन (९३)

भावार्थः—और हरगिज वह कभी इसकी आरजू न करेंगे। इस कारण कि यह उन के हाथों भेजा गया है। (अर्थात् वह स्वयं मौत को बुलाने वाले हैं) और अल्लाह जालिमों को जानता है।

वल तजिदन्नहुम् अह्रसन्नास अ़लाहयातिन व मिनल्लज़ीना अश्रकू यवद्दु अहादुहुम् लउ् युअ़म्मरु अल्फ़ा सनातिन् वमा हुवा बिमुज़हज़िहिही मिनल् अ़ज़ाबि अँय्युअम्मर, वल्लाहु बसीरुन् बिमा याअ़्मलून (६४)

भावार्थ:—और निश्चय कर तू उनको अपनी जिन्दगी पर और उन लोगों पर जो ईश्वर का शरीक़ मानते हैं अधिक लालची पायेगा और हर एक उनमें से यही याचना करता है। कि मेरी उमर हज़ार वर्ष की हो किन्तु वह उसको अज़ाब से नहीं छुड़ा सकता। अगर उसकी उमर बढ़ जावे और अल्लाह देखता है जो कुछ वह करते हैं।

* इति दशवां पाठ *

अथ ग्यारहवां पाठ

कुलमन्काना अदुव्वलिल जिब्रीला फ़इन्नहू नज़्ज़लाहू अ़ला क़ल्बिका बिइज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बय्ना यदइहि वहुदउ व्वबुश्रालिल्मौमिनीन् (९५)

भावार्थः—कह जो कोई दुशमन है जबराईल के वास्ते पस निश्चय कर उसने (अल्लाह ने) उतारा है तेरे दिल पर उसको हुक्म अल्लाह के साथ वह उस चीज को सच्चा करने वाला है जो उसके आगे है और ईमान वालों के लिये हिदायत और खुश खबरी है।

नोट—यह उस समय की कहावत है जब कि हजरत पर जब राईल फरिश्ता वही (कुरान की सूरत) लाता था तो यहूद लोगों ने कहा कि वह हमारा दुश्मन है। उसकी बात हम नहीं मानेंगे तो अल्लाह ने उसके जबाब में ऊपर लिखी आयत उतारी।

मन्काना अ़दु व्वल्लिल्लाहि व मलाइकतिही वरुसुलिही व जिब्रीला व मैकाईला फ़इन्नल्लाहा अ़दुव्वुलिल्काफ़िरीन (९६)

भावार्थः—जो कोई अल्लाह और उसके फरिश्तों और पैग़म्बरों और जब राईल और मैकाईल का दुश्मन है पस निश्चय कर अल्लाह काफिरों का दुश्मन है।

वलाक़द् अन्ज़ल्ना इलय्काआयातिन् बय्यिनातिन, वमा यकफुरु बिहा इल्लल्फ़ासिक़ून (९७)

भावार्थः—और निश्चय कर हमने तेरे ऊपर अपनी निशानियां प्रकट की और सिवाय बदकारों (दुर्जनों) के कोई उससे विमुख नहीं होता।

अवाकुल्लमा आहदूअहदन्नबजहू फ़रीकुम्मिनहुम, बल अक्सरुहुम् ला यूमिनून (९८)

भावार्थ:--और जब उनके पास अल्लाह का अहद आया तो एक फिरके ने उनमेंसे (उस अहद को) फेंक दिया और बहुत से उनमें से ईमान नहीं लाते।

व लम्मा जाआहुम् रसूलुम्मिन् इन्दल्लाहि मुसद्दिकुल्लिमा मआहुम् नबजा फ़रीकुम्मिनल्लज़ीना ऊतुल्किताबा, किताबल्लाहि वराआज़ुहूरिहिम् कअन्नहुम् लायाअ्लमून (९९)

भावार्थ:--और जब उनके पास अल्लाह के निकट से रसूल आया। जोकि उनके पास (किताब तौरात इंजील आदि) है उसको सच्चा करने वाला है तो एक जमातने उनमें से अल्लाह की किताब को जो दी गई है अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया जैसे कि वह कुछ जानते ही नहीं।

वत्तबाऊ मा तत्लु-श्शयातीनु अलामुल्कि सुलइमान, वमा कफ़रा सुलय्मानु वला किन्न-श्शयातीना कफ़रू युअ़ल्लिमून-न्नासस्सिहरा, वमा उन्ज़िला अलल् मलाकइनि बिबाबिला हारूता व मारूत, वमा युअ़ल्लिमानि मिन् अहादिन् हत्ता यकूला इन्नमा नन्हु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर, फ़या तअल्लमूना मिनहुमा मायुफ़र्रिकूना बिही बयनल मरइ व ज़उजिही, वमाहुम् बिज़ारीना बिही मिन अहदिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि, वया तअल्लमूना मा यज़ुर्रुहुम् वला यन्फ़उहुम्, वला क़द्

अलिमू लमनि इस्तराहु मा लहूफ़िल् आखिरति मिन् ख़लाक़ि, वला बिअसामाशरउ्सा बिही, अन्फुसाहुम्, लउकानू याअ्लमून (१००)

भावार्थ—और उस चीज की पैरवी करते हैं कि जिसको सुलैमान के वक्त में शैतान पढ़ते थे और सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया था लेकिन शैतानों ने कुफ्र किया था वह लोगों को जादू सिखाते थे और उस चीज (पुस्तक) की कि जिसको दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर बाबुल शहर में उतारा था पैरवी करते थे और वह दोनों किसी को नहीं सिखाते थे और कहते थे कि हम लड़ाई हैं और तुम इसको सीख कर कुफ्र न करो और उस चीज को सीखते हो उन दोनों से जो कि मर्द और उस की जोरू के दरमियान जुदाई डालते हैं किन्तु वह बिना ईश्वर की आज्ञा के किसी को हानि पहुँचाने वाले नहीं और उस वस्तु को सीखते हैं जोकि हानि कारक है और लाभ दायक नहीं और वह निश्चय कर जानते हैं जो कोई उसको मोल लेगा उसको कयामत के दिन कुछ भाग न मिलेगा और जो कुछ उन्होंने अपनी जानों के बदले बेचा है यदि वह जानते होते—

व लउ अन्नहुम् आमनू वत्तक़उ लमसूबतुम्मिन् इन्दिऽल्लाहि खय्रुन्, लउ कानूऽयाअ्लमून (१०१)

भावार्थ—और यदि वह ईमान लाते और परहेजगारी करते तो निश्चय कर अल्लाह के निकट सवाब (पुण्य) का काम था यदि वह जानते होते—

* इति ग्यारहवां पाठ *

अथ बारहवां पाठ

या अय्युहाल्लज़ीना आमनू ला तक़ूलूराइ नाऽ वक़ूलुअन् ज़ुर्ना वस्माऊ व लिल्काफ़िरीना अ़ज़ाबुन् अलीम (१०२)

भावार्थ—ऐ मनुष्यो जो ईमान लाये हो राइना मत कहो अंज़ुरना कहो अर्थात् हमारा इ'तिज़ार करो और सुनो काफ़िरों के वास्ते अतयंत दुःख देने वाला रंज है—

मा यवद्दुल्लज़ीना कफ़रू मिन् अह्लिल्किताबि वलल्मुश्रिकीना अँय्युनज़्ज़ला अ़लइकुम्मिन्ख़यरिम् मिर्रब्बिकुम् वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मतिही मँय्यशाउ, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम (१०३)

भावार्थ—और वह लोग जो काफ़िर है अहल किताब (यहूदी ईसाई मुसलमान) मे दोस्ती रखते और न मुशिरिकों के साथ सिर्फ़(मूर्ति पूजन) करने वालों पर तुम्हारे ईश्वर की तरफ़ से कोई पुस्तक उतरती है और ईश्वर अपनी कृपा का पात्र जिसको चाहता है बनाता है क्योंकि वह विशेष कृपा का स्वामी है—

मानन्सख़मिन् आयातिन् अउ्नुन्सिहानाति बिख़इरिम्मिन्हा अउ्मिस्लिहा अलम् ताअ्लम् अन्नऽल्लाहा अ़ला कुल्लि शय्इन् क़दीर (१०४)

भावार्थ—और जितना हम आयतोंमें से अलग करदेते हैं या भुला देते हैं (अर्थात् क़ुरान में से) हम उनको मानिन्द या उनसे बढ़ कर और ले आते हैं क्या तू नहीं जानता है कि अल्लाह हर चीज़ के ऊपर शक्तिमान है—

आलम् ताअ्लम् अन्नल्लाहा लहू मुल्कुस्समावाति वल् अर्ज़ि वमा लकुम्मिन्दूनिल्लाहि मिं व्वलिय्यिं व्वला नसीर (१०५)

भावार्थ—क्या तूने यह बात नहीं जानी कि अल्लाह के वास्ते ज़मीन और आसमानों की बादशाही है और सिवाय अल्लाह के कोई तुम्हारा दोस्त और मददगार नहीं है—

अम्तुरीदूना अन्तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइला मूसा मिन्क़ब्लु वमंय्यतबद्दलिल्कुफ़्रा बिल् ईमानि फ़क़द् ज़ल्ला सवाअ-स्सबील (१०६)

भावार्थ—क्या तुम यह इरादा रखते हो कि अपने पैगम्बर से ऐसा सवाल करो जैसा मूसा से पहले किया गया था और जो कोई ईमान को कुफ्र से बदल ले तो निश्चयकर वह सीधी राह से भटक गया

वद्दा कसीरुम्मिन् अह्लिल् किताबि लउ् यरुद्दूनकुम्मिन् बाअ्दि ईमानिकुम् कुफ्फ़ारन् हसदम्मिन् इन्दि अन्फुसिहिम्मिन् बाअ्दिमा तबय्यना लहुमुलहक़्क़ु फ़अ्फ़ूऽवस्फ़हू हत्ता यातियल्लाहु बिअम्रिही इन्नल्लाहा अला कुल्लि शय्इन् क़दीर (१०७)

भावार्थ—बहुत से अहल किताब (इंजील और तौरात के मानने वाले) तुमको दोस्त रखते हैं सम्भव है कि वे तुम्हारे ईमान को कुफ्र से फेर देवें उस डाह से जो कि वह हृदयों में रखते हैं इसके पीछे सत्य प्रकाशित हुआ पस छोड़ दो उनको जब तक कि ईश्वर की आज्ञा न आवे निश्चय है कि ईश्वर सब पर शक्तिमान है—

व आक़ीमु-स्सलाता व आतुज़्ज़काता व मातुक़-द्दिमू इलिअन्फुसिकुम् मिन ख़ैरिन् तजिदूहु इन्द-ल्लाहि इन्नल्लाहा बिमा ताअमलूना बसीर (१०८)

भावार्थ—और तुम ज़कात दो और जो कुछ अपनी जानों के लिये भेजोगे उसको अल्लाह के निकट श्रेष्ठता से पाओगे यह निश्चय है कि अल्लाह उसको जो तुम करते हो देखने वाला है—

व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल् जन्नता इल्लामन्काना हूदन् अउ नसारा तिल्काअमानिय्युहुम् क़ुल्हातू बुर्हानकुम् इन्कुन्तुम् सादिक़ीन (१०९)

भावार्थ—और उन्होंने कहा कि सिवाय यहूदी और ईसाइयों के कोई बहिश्त में दाखिल नहीं होगा यह उनकी अभिलाषा हैं कह तू (ऐ मुहम्मद) यदि तुम सच्चे हो तो अपनी सत्यता को सिद्ध करो—

बला, मन् अस्लमा वज्हाहू लिल्लाहि व हुवा मुह्-सिनुन् फ़लहू अज्रुहू इन्दा रब्बिही, व ला ख़ौफ़ुन् अलय्हिम् व ला हुम् यह्ज़नून (११०)

भावार्थ—जो मनुष्य अपने मुख को अल्लाह के वास्ते सौंप दे (अर्थात् अल्लाह का नाम ले) और वह नेकी करने वाला हो तो उस के लिये उसका फल अल्लाह के निकट मिलेगा और न उनको कोई डर है और न कोई रंज है—

* इति बारहवां पाठ *

अथ तेरहवां पाठ

व क़ाल तिलयहूदु लयसतिन्नसारा अ़ला शयइंव्व, व क़ालतिन्नसारा लयसतिल् यहूदु अ़ला शयइंव्वंहुम् यत्लूनल् किताब, कज़ालिका क़ालल्लज़ीना ला यात्र्अलमूना मिस्ला क़ौलिहिम्, फ़ल्लाहु यह्कुमु बयनहुम् यउ मल् क़ियामति फ़ीमाकानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (१११)

भावार्थ:—और यहूदियों ने कहा कि न सारे किसी वस्तु के ऊपर नहीं (अर्थात् उनका कोई ईमान नहीं) और नसारों (ईसाइयों) ने कहा कि यहूदी किसी वस्तु के ऊपर नहीं (अर्थात् इनका कोई ईमान नहीं) वह किताब यों ही पढ़ते हैं और उसी तरह उन लोगों ने कहा जो उनकी बात को नहीं जानते हैं। अर्थात् जो अन्य मत वाले हैं। पस अल्लाह कयामत के दिन उनके दर्मियान हुक्म करेगा कि जिसमें इख़्तिलाफ़ करते थे।

व मन् अज़्लमु मिम्मँम्मनाअ़ा मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्करा फ़ीहास्मुहू व सात्र्आ फ़ी ख़राबिहा उलाइका माकाना लहुम् अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ाइफ़ीन, लहुम्फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्व लहुम् फ़िल् आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (११२)

भावार्थ—और उस मनुष्य से कौन अधिक दुष्ट है जो अल्लाह की मसजिदों में उसका नाम लेने से मनै करे और उनके नष्ट करने का प्रयत्न करे यह लोग इस लायक़ नहीं कि उसमें दाखिल हों सिवाय इस डरके कि जो दुनियां की बदनामी और क़यामत के बड़े दुःख से (जो उनको मिलेगा) डरते हों

व लिल्लाहिल्मश्रिकु वल्मग़रिबु, फ़अयनमा तुवल्लू फ़सम्मा वज्हुल्लाहि, इन्नल्लाहा वासिउन् अलीम(११३)

भावार्थ—और अल्लाह के लिये पूरब और पश्चिम है पस जिधर को मुंह करो उधर ही को अल्लाह का मुंह है (अर्थात् अल्लाह हर तरफ़ को है) और निश्चय करके अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है—

व क़ालुत्तख़ज़ल्लाहु वलदन् सुब्हानहू, बल्लहू माफ़िस्समावाति वल अर्ज़ि कुल्लुल्लहू क़ानितून(११४)

भावार्थ—और उन्होंने कहा कि अल्लाह ने अपनी औलाद को पकड़ा है (अर्थात् उन पर महरबानी की है)उसी को सब पाकी है और जो कुछ जमीन और आसमान के बीच है वह सब उसके हुक्म के मानने वाले हैं—

बदीउस्समावाति वल् अर्ज़ि, व इज़ाक़ज़ा अम्रन् फ़इन्नमा यकूलु लहू कुन्फ़याकून (११५)

भावार्थ—अल्लाह जमीन और आसमानों का बनाने वाला है और जब कोई काम मुक़र्रर करता है तो इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं केवल (हो) कहता है पस हो जाता है—

व क़ालल्लज़ीना ला याअ्लमूना लउला युकल्लिमुन्नल्लाहो अउता तीना आयातुन, कज़ालिका क़ालल्लज़ीना मिन्क़ब्लिहिम्मिस्ला क़उलिहिम् तशाबहत् कुलूबुहुम् क़द् बय्यन्नल् आयाति लिक़-उमिय्यूक़िनून (११६)

भावार्थ—और उन लोगों ने जो नहीं जानते हैं कहा कि अल्लाह हमसे क्यों नहीं बात करता और हमारे पास क्यों नहीं निशानी आती और इसी तरह उन लोगों ने जो उन से पहले थे कहा था (किन्तु) उनके दिल एक से होगये और हमने यह निशानी या उस कौम के लिये बयान की है जो उस पर निश्चय करती है—

इन्ना अर्सल्नाका बिल्हक्कि बशीरउव्वं नज़ीर व्वला तुस्अलु अन अस्हाबिल् जहीम (११७)

भावार्थ—और निश्चय कर हमने तुझको हक़ के साथ भेजा खुश खबरी देने वाला और डराने वाला और दोजक़ के रहने वाले तुझे नहीं पूछेंगे—

वलन्तर्ज़ा अ़न्कल् यहूदु वलन्नासारा हत्ता तत्तबिअ़ा मिल्लतहुम्, क़ुल् इन्ना हुदऽल्लाहि हुवऽल्-हुदा, वलाइनिऽत्तबाअ़्ता अह्वाअहुम् बाअ़्दऽल्लज़ी जाअका मिनऽल्इल्मि माऽलका मिनऽल्लाहि मिंव्वलि-य्यिंव्वलाऽनसीर ॥११८॥

भावार्थ—और तुझ से यहूदी और नसारा हरगिज राज़ी न होंगे चाहें तू उनके दीन की पैरवी करने लगे कह निश्चय कर अल्लाह की वह ही हिदायत है यदि तू उनकी इच्छाओं के पीछे चलेगा उस चीज के बाद जो तेरे पास ज्ञान से आती है तेरे वास्ते अल्लाह से (बढ़कर) कोई दोस्त और मददगार नहीं है।

अल्लज़ीना आतय्ना हुमुल्किताबा यत्लूनहू हक़्क़ा तिलावतिही, उलाइका यूमिनूना बिही व मँय्यक्फ़ुर्बिही फ़ऊलाइका हुमुल्ख़ासिरून ॥११९॥

भावार्थ—और *जिन लोगों को हमने किताब दी है* और जिसको पढ़ने के तरीके पर वह पढ़ते हैं यह लोग उस पर ईमान लाते हैं और जो लोग उसके साथ कुफ़र करते हैं (अर्थात् उसको मानने से इन्कार करते हैं) यह लोग घाटा पाने वाले हैं।

❁ इति तेरहवां पाठ ❁

अथ चौदहवां पाठ

या बनी इस्राईलाअज़कुरू,निअ् मतियल्लती अन् अम्तु अलय्कुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ लल् आलमीन ॥१२०॥

भावार्थ—ऐ याक़ूब के बेटो मेरी नैमत को जो मैंने तुम पर इनाम की है और जो मैंने तुमको बड़ाई दोनों जहान पर दी है उसको याद करो।

वत्तक़ू यउ्मल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अन्नफ़्सिन् शयअन्वंला युक़्बलु मिन्हा अ़द्लुन्वलातन्फ़उ़हा शफ़ाअ़तुन्वंलाहुम् युन्सरून ॥१२१॥

भावार्थ—और उस दिन से डरो कि कोई किसी की क़िफ़ायत (अर्थात् मदद करना।) न करैगा और न बदला उसको क़बूल किया जायगा और न किसी की शिफ़ारिश काम देगी और न कोई उनकी मदद करेगा।

व इज़िब्तला इब्राहिमा रब्बुहू बिकलिमातिन् फ़अतम्मा हुन्ना, क़ाला इन्नी जाइलुका लिन्नासि इमामन्, क़ाला व मिन्ज़ुर्रिय्यती क़ाला लायनालु अ़हदि-ज़्ज़ालिमीन ॥१२२॥

भावार्थ—और जिस समय इब्राहीम को उसके ख़ुदा ने कई बातों के साथ उसकी परीक्षा की तो उनको पूरा किया और कहा कि मैं तुझको लोगों का सरदार करने वाला हूं और मेरी औलाद से कहा कि मेरा अहद (क़ौल) ज़ालिमों को पहुंचेगा।

व इज़्जाअ़ल्नल्बय्ता मसाबतल्लिन्नासि व अम्नन्, वअत्तख़िज़ू मिंम्मक़ामि इब्राहिमा मुसल्ला,व अ़हिद्ना इला इब्राहिमा व इस्माईला अन्तह् हि रा

बयूतिय लिस्साइफ़ीना वल् अ़ाक़िफ़ीना व-र्रुक्काइ-स्सुजूद ॥१२३॥

भावार्थ—और जब हमने काबे को लोगों के लिये सवाब और अमन वाला बनाया और तुम इब्राहीम के मक़ाम (काबा) को नुमाज़ की जगह बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माईल के लिये अहद किया कि मेरे घरको उसके परिक्रमा करने वालों और उसके मानने वालों तथा उसके सिजदा करने वालों (दंडवत करने वालों) के लिये पाक करो।

व इज़् क़ाला इब्राहिमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ा बलदन् आमिनं व्वंअरज़ुक़् अह्लहू मिनस्समराति मन् आमना मिन्हुम् बिल्लाहि वल् यउमिल् आख़िरि, क़ाला वमन् कफ़रा फ़उमत्तिउहू क़लीलन् सुम्मा अज़्तर्रुहू इला अ़ज़ाबि-न्नारि, व बिअ्सल् मसीर ॥१२४॥

भावार्थ—और जब इब्राहीम ने कहा ऐ मेरे रब इस जगह (काबा) को अमन वाला शहर और उसके रहने वालों को मेवों की रोज़ी (आहार) देने वाला बनादे और जो कोई ईमान लावे अल्लाह के साथ और क़यामत के दिन पर और जो कोई कुफ़्र करै तो उसको थोड़ा लाभ दूंगा फिर बेबश करूंगा उसको दोज़क की आग की तरफ़ और फिर जाने की बहुत बुरी जगह है (अर्थात् कुरान से विमुख होजाने का बुरा दंड है)

व इज़् यर्फ़उ इब्राहिमुल् क़वाइदा मिनल् बय्ति व इस्माईलु, रब्बाना तक़ब्बल् मिन्ना, इन्नका अन्त-स्समी-उ़ल् अ़लीम ॥१२५॥

भावार्थ—और जब इब्राहीम घरकी नींवें (अर्थात् काबे की नींवें) उठाता था और इस्माईल (उसके साथ था) (कहा) ऐ हमारे रब तू हमसे (इस घरको जो काबा था) स्वीकार कर निश्चय कर तुही सुनने वाला और जानने वाला है।

रब्बनावइज्अ़ल्नामुस्लिमीनि लका व मिन्ज़ुर्रिय्यतिना उम्मतम्मुस्लिमतल्लका, व आरिना मनासिकाना व तुब् अ़लय्ना, इन्नका अन्तत्तव्वाबु-र्रहीम (१२८)

भावार्थ—ऐ हमारे रब हम दोनों को अपना तावेदार बना और हमारी औलाद में से एक गिरोह को अपना हुकम मानने वाला बना और हमको हमारी उपासना की तरह (उपासना करते हुये) दिखा और (उनको) हमारे ऊपर फिरा (अर्थात् हमारा मानने वाला बना) निश्चय कर तुही फिराने वाला और महरवान है।

रब्बाना वअ़ब अ़स्फ़ीहिम् रसूलम्मिन्हुम् यत्लूअ़लय्हिम् आयातिका व युअ़ल्लिमुहुमुल् किताबा वल् हिक्मता व युज़क्कीहिम्, इन्नका अन्तल् अ़ज़ीज़ुल हकीम (१२७)

भावार्थ—ऐ हमारे रब उनके बीच उन्हीं में से पैग़म्बर भेज कि उनके ऊपर तेरी आयतें पढ़े और उनको किताब और हिकमत सिखावे निश्चय कर तूही बड़ा हिकमत (विशेष ज्ञान) वाला है।

* इति चौदहवां पाठ *

अथ पंद्रहवां पाठ

व मँय्यरग़बु अँम्मिल्लति इब्राहिमा इल्ला मन् सफ़िहा नफ्सहू, वलक़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल् आख़िरति लमिन-स्सालिहीन॥१२८॥

भावार्थ—और कौन इब्राहीम के दीन से फिरता है सिवाय (ऐसे मनुष्य के) कि जिसने अपनी जान पर बेवकूफी की और निश्चय कर हमने इब्राहीम को दुनिया में पसन्द किया है और आख़िरत के दिन वह सुधारने वालों में से होगा।

इज़् क़ाला लहू रब्बुहू अस्लिम, क़ाला अस्लम्तु लिरब्बिल् आलमीन ॥१२९॥

भावार्थ—और जब उसको उसके मालिक ने कहा कि तू तावेदार हो उसने कहा कि दोनों जहान (लोक और परलोक) के मालिक का तावेदार हुआ।

व वस्सा बिहा इब्राहिमु बनीहि व याअ़्कूबु, या बनिय्या इन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमु-दीना फ़लातमूतुन्ना इल्ला व अन्तुम्मुस्लिमून ॥१३०॥

भावार्थ—और इब्राहीम ने अपने वेटों और याकूब ने अपने वेटों को उपदेश दिया ऐ मेरे वेटो अल्लाह ने तुम्हारे वास्ते दीन पसन्द किया है पस तुम न मरो (उससे अलग न हो) और तुम उसके मानने वाले हो जाओ।

अम कुन्तुम् शुहदाआ इज़् हज़रा याअ़्कूबल् मउतु, इज़्क़ाला लिबनीहि माताअ़्बुदूना मिन् बाअ़्दी क़ालू नाअ़्बुदु इलाहका व इलाहा आबाइका इब्राहिमा व इस्माईल व इस्हाक़ा इलाहन्वाहिदन्, व्वं नहनु लहू मुस्लिमून ॥१३१॥

भावार्थ—क्या तुम नहीं देखते थे जब याक़ूब को मौत आई और उसने अपने बेटों को बुलाकर कहा कि तुम किस वस्तु की पूजा करोगे मेरे पीछे उन्होंने कहा कि हम तेरे और तेरे बाप दादे इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ के एक उपासदेव को हम पूजेंगे और हम उसके लिये तावेदार हैं।

तिल्का उम्मतुन् क़द्ख़लत्, लहामा कसाबत् व लकुम्मा कसब्तुम्, वलातुस्अलूना अम्माकानूयाअ्.म-लून ॥१३२॥

भावार्थ—यह एक उम्मत (मज़हब) थी जो गुज़र गई और उनके लिये था जो उन्होंने किया और तुम्हारे लिये है जो तुमने किया और तुमसे वह बात न पूछी जायगी जो वो करते थे।

व क़ालू कूनू हूदन्, अउनसारा तह्तदू कुल् बल्मिल्लता इब्राहिमा हनीफ़न्, वमाकाना मिनल् मुश्रिकीन् ॥१३३॥

भावार्थ—और उन्होंने कहा कि तुम ईसाई या मूसाई हो जाओ तब राह पाओगे कह (ऐ मुहम्मद) हम पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो एक तरफ़ का था और मुशरिकों में से न था।

क़ूलू आमन्नाबिल्लाहि वमा उन्ज़िला इलयना वमा उन्ज़िलाइला इब्राहिमा व इस्माईला व इस्हाक़ा व याअ्.क़ूबा वल् अस्बाति व मा ऊतिय मूसा व ईसा वमा ऊतियन्न-बिय्यूना मिर्रब्बिहिम्,लानुफ़र्रिक़ु बय्ना अहादिम्मिन्हु म्, वनह्नुलहू मुस्लिमून ॥ ॥१३४॥

भावार्थ—कहो हम ईमान लाये, अल्लाह के साथ और जो कुछ उतारी गई हमारी और इब्राहीम और इस्माईल और इस हाक़ और याक़ूब और उसकी औलाद की तरफ और जो कुछ दीगई अपने

मालिक की तरफ़ से ईसा मूसा और पैग़म्बरों की हम किसी के बीच जुदाई नहीं डालते हम सब के आज्ञाकारी हैं।

फ़इन् आमनू बिमिस्लिमाआमन्तुम् बिही फ़क़ादिअह्तदउ, व इन् तवल्लउफ़इन्नमाहुम् फ़ीशिक़ाक़िन, फ़सायक्फ़ीका हुमुल्लाहु, वहुवस्समीउल् अलीम ॥१३५॥

भावार्थ--पस अगर उस चीज़ पर ईमान लावें कि जिसके साथ *तुम ईमान लाये हो तो निश्चय कर राह पाई और यदि उससे फिर जावें तो निश्चय कर वह उसके विपरीत है शीघ्र अल्लाह तेरे ऊपर* कृपा करेगा क्योंकि वह सुनने वाला और जानने वाला है।

सिब्गतल्लाहि, वमन् अह्सनु मिनल्लाहि सिब्गत्वं, व नह्नु लहू आबिदून ॥१३६॥

भावार्थ—तुमको अल्लाह ने (अपने रंग में) रंग दिया है अल्लाह से रंग में कौन बहतर है हम उसी की इबादत करने वाले हैं।

क़ुल् अतुहाज्जूनना फ़िल्लाहि व हुवा रब्बुना व रब्बुकुम्, वलना आअ्मालुना वलकुम् आअ्मालुकुम् व नह्नो लहू मुख़्लिसून ॥१३७॥

भावार्थ—कह तुम अल्लाह के बारे में हमसे क्या झगड़ते हो वह हमारा और तुम्हारा पालने वाला है हमारे लिये हमारे अमल है और तुम्हारे लिये तुम्हारे अमल हैं हम उसके साथ प्यार करने वाले हैं।

अम्तक़ूलूना इन्ना इब्राहिमा व इस्माईला वइस्हाक़ा व याअ्क़ूबा वल् अस्बाता कानू हूदन् अउ नसारा क़ुल् आ अन्तुम् आअ्लमु अमिल्लाहु, व मन् अज़्लमु

मिम्मन् कतमा शहादतन् इ़न्दहू मिनल्लाहि वमाल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मातामलून (१३८)

भावार्थ—तुम इब्राहीम इसमाईल इसहाक और याकू़ब और उसकी औलाद को क्या कहते हो (ये लोग) यहूदी और नसारा थे। (ऐ मुहम्मद) कह क्या तुम बहुत जानने वाले हो या अल्लाह और वह शख्स बहुत ज़ालिम है जो अल्लाह की तरफ़ से गवाही जो उसके पास है छुपाता है और जो तुम करते हो उससे अल्लाह वे ख़बर नहीं अर्थात् सर्कस है।

तिल्का उम्मतुन् क़द् ख़लत्. लहामाकसबत् वलकुम्माकसबतुम्, वलातुसअलूना अ़म्माकानूयाअ़मलून (१३९)

भावार्थ—यह एक उम्मत (मत) थी जो गुज़र गई जो कुछ उन्होंने कमाया था उनके लिये था और जो तुमने कमाया तुम्हारे लिये है तुमसे वह बात न पूछी जायगी जो वह करते थे।

❀ इति पंद्रहवाँ पाठ ❀

अथ सोलहवां पाठ

सयाकूलु-स्सुफ़हाउ मिन-न्नासि मावल्लाहुम् अन् क़िब्लति हिमुल्लती कानू अ़लय्हा, कुल्लिल्लाहिल् मश्रिकु वल् मग्रिबु, यह्दी मँय्यशाउ इला सिरातिम्मुस्तक़ीम (१४०)

भावार्थ—शीघ्र ही वेवकूफ़ तुमसे कहेंगे कि कौन सी वस्तु ने उनको उनके क़िवले से जिस को वह मानते थे फेर दिया कह (ऐ मुहम्मद) पूर्व और पश्चिम सब खुदा के लिये है जिसको चाहता है राह सीधी दिखाता है (नोट) जब हज़रत मुहम्मद साहव मक्के से मदीने में आये तो सवा वर्ष बैतुल मुक़द्दस की तर्फ़ मुंह करके निमाज़ पढ़ी फिर हुक्म आया कि काबे की तरफ़ मुंह करके नुमाज़ पढ़ो तब बहुत से यहूद और कच्चे मुसलमान हज़रत पर शुबहा करने लगे कि आज तक जितने नबी आये सबने बैतुल मुक़द्दस को क़िवले माना है और यह (हज़रत मुहम्मद साहव) काबेको अपना किवला बताते हैं इसलिये यह नबी नहीं हैं तब वह ऊपर के आयत अल्लाह ने उतार कर हज़रत की बातों की पुष्टि की और उनके भ्रम को निवारण किया।

व कज़ालिका जअ़ल्नाकुम् उम्मत व्वसतिल्लितकूनू शुहदाआ अ़ल-न्नासि वयकू-नर्रसूल अ़लय्कुम् शहीदन् वमाजाअ़ल्नल्क़िब्लतल्लती कुन्ता अ़लय्हा इल्लालिनाअ़्लमा मँय्यत्तबिउ़-र्रसूला मिम्मँय्यन्क़लिबु अ़ला अक़िबय्हि, वइन् कानत् लकबीरतन् इल्ला अ़लल्लज़ीना हदल्लाहु, वमा कानल्लाहु लियुज़ीअ़ ईमानकुम् इन्नल्लाहा बि-न्नासिलरऊफुर्रहीम (१४१)

भावार्थ--और इसी प्रकार से हमने तुमको बीच की उम्मत बनाया
(अर्थात् सबसे बहतर) और तुम लोगोंपर गवाह हुये औरपैग़म्बर गवाह
तुम्हारे ऊपर हुये औरजिसको तू(ऐ मुहम्मद) किबला मानता था वह हमने
क़िबला नहीं किया था। किंतु इस कारण कि हम जाने की कौन रसूल
की पैरवी करता है उस मनुष्यसे (जो फिर गया हो) जो अपने पैरोंसे फि
जाता है और यह बात जरूर उन लोगों के लिये बड़ी है कि अल्लाह
उन लोगों को राह दिखाई और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हारा
ईमान बिगाड़े निश्चय कर अल्लाह लोगों के साथ महरबानी कर
वाला है।

क़द् नरा तक़ल्लुबा वज्हिका फ़िस्समाइ, फ़लानु
वल्लियन्नका क़िब्लतन् तर्ज़ाहाफ़वल्लिवज्हका शत्र
मस्जिदल् हरामि, व हयसुमा कुन्तुम् फ़वल्लू वुजूहकु
शत्रहू, व इन्नल्लज़ीना ऊतुल्किताबा लयाअ्लमू
अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम्, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्
याअ्मलून (१४२)

भावार्थ--निश्चय कर तेरे मुंह का फिरना आसमान में देखते
हम तुमको जरूर फेरेंगे उस क़िबले की तरफ़ जिसको तू पसन्द
पस तू अपने मुंह को मसजिदे हराम (अर्थात् मक्का) की तरफ़ फेर
जहां कहीं तुमहो अपने मुंह को उसकी तरफ़ फेरो और जो लोग
किताबों (इंजील क़ुरान इत्यादि) को अल्लाह की किताब जानते हैं
उसको सच जानते हैं अल्लाह उस चीज से बे ख़बर नहीं कि जो
करते हैं।

वला इन् आतइतल्लज़ीना ऊतुल् किता
बिकुल्लि आयातिम्मातबिऊ क़िब्लतका, वमा अ
बिताबिइन् क़िब्लतहुम्, वमाबाअ्ज़ुहुम बिताबि
क़िब्लता बाअ्ज़िन,वलाइ.निअत्तबाअ्ता अह्वा
मिम्बाअ्दि माजाअका मिनल् इ.ल्मि, इन्
इज़ल्लमिनज़्ज़ालिमीन (१४३)

भावार्थ—और अगर तू उन लोगों को जिनको तेरी निशानियों के साथ किताबें दी गई हैं लावे तो वह तेरे क़िब्ले की पैरवी (मानता) नहीं करेंगे और न तू उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाला है और न उनमें का कोई किसी के क़िब्ले की पैरवी करने वाला है और अगर तू उन की इच्छाओं के पीछे चलेगा उस चीज़ के पश्चात् जो तेरे पास ज्ञान (कुरान) से आई तो तू जालिमों में से है।

अल्लज़ीना आतय्ना हुमुल् किताबा याअ्रिफ़ूनहू कमा याअ्रिफ़ूना अब्ना अहुम,व इन्ना फ़रीक़म्मिन्हुम् लयक्तुमूनल् हक़्क़ा वहुम् याअ्लमून (१४४)

भावार्थ:—और जो लोग कि जिनको हमने किताब (कुरान) दी है उसको ऐसा पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहिचानते हैं, और एक समूह उनमें से ऐसा है जो सत्य को छिपता है और वह जानता है।

अल् हक़्क़ु मिर्रब्बिका फ़ला तकूनन्ना मिनल् मुम्तरीन (१४५)

भावार्थ.—(इसका ऊपर के अर्थ से संबंध है) तेरे पालने वाले की तरफ से सत्य है तू शक करने वालों में से मत हो।

❀ इति सोलहवाँ पाठ ❀

अथ सत्तरहवां पाठ

व लि कुल्लिव्विजहतुन् हुवा मुवल्लीहाफ़स्त-बिकुल् खय्राति, अय्ना मातकूनूयातिबिकुमुल्लाह जमीअन्, इन्नल्लाहा अ़लाकुल्लि शय्इन क़दीर (१४६)

भावार्थ:—और हर एक के लिये एक तरफ़ (किनारा) है वह उस तरफ़ को मुंह फेरता है जहां कहीं हो भलाई की तरफ़ दौड़ो तुम सब को अल्लाह इकट्ठा कर देगा वह हर चीज पर शक्तिमान है।

व मिन् हयसु खरजूता फ़वल्लि वज्हका शतरल् मस्जिदिल् हराम, व इन्नहू लल्हक्कु मिर्रिब्बिका, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा ताअ़्मलून (१४७)

भावार्थ—और जहां से तू निकले पस अपने मुंह को मसजिद हराम (काबा) की तरफ़ फेर ले और निश्चय कर तेरे पालने वाले की तरफ़ से सत्य है और अल्लाह उस चीज से बे खबर नहीं जिसको तुम करते हो।

व मिन् हयसु खरजूता फ़वल्लि वजहका शतरल् मस्जिदिल हराम् व हयसुमाकुन्तुम फ़वल्लू वुजूहकुम् शतरहू, लिअल्ला यकूना लिन्नासि अ़लय्कुम् हुज्जतुन, इल्लल्लज़ीना ज़लामू मिन्हुम्, फ़ला तख्शऊ हुम् अख्शऊनी, वलिउतिम्मा निअ़मती, अ़लयकुम् व लअ़ल्लकुम तहतदून (१४८)

भावार्थ—और जहां से तू निकले अपने मुंह को मसजिद हराम की तरफ़ फेर और जहां कहीं तुम (सब मुसलमान) हो पस अपने मुंह को उसकी तरफ़ फेरो ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत (अर्थात् झगड़ा) न हो किन्तु जिन्होंने उनमें से ज़ुल्म किया है उनसे मत डरो और मुझसे डरो और (तू कह) कि मैं अपनी नयमत को तुम्हारे ऊपर पूरा करूं संभव है कि तुम राह पा जाओ।

कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्मिन्कुम् यत्लू अ़लय्कुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् वयुअ़ल्लिमुकुमुल किताबा वल् हिक्मता व युअ़ल्लिमुकुम्मा लम्तकूनू ताअ़लमून (१४९)

भावार्थ—जैसा कि हमने तुम्हीं में से तुम्हारे बीच पैग़म्बर भेजा कि जो हमारी आयतें पढ़ता हैं और तुम को पाक करता है और तुमको किताब (क़ुरान) और हिकमत सिखाता है और तुमको वह चीज़ सिखाता है जिसको तुम नहीं जानते थे।

❀ इति सत्तरहवां पाठ ❀

अथ अठारहवां पाठ

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम् वअश्कुरू लीविला तक्फ़ुरून (१५०)

भावार्थ—पस तुम मुझको याद करो मैं तुमको याद करूंगा और मेरे वास्ते शुक्र करो और मुझ से न फिरो।

या अय्युहल्लज़ीना आमनुस्ताईनूबि-स्सब्रि व-स्सलाति, इन्नल्लाहा मअ.-स्साबिरीन (१५१)

भावार्थ—ऐ लोगो जो ईमान लाये हो (अल्लाह पर) सब्र के साथ और नमाज़ के साथ अल्लाह से मदद चाहो निश्चय कर अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

वलातकूलू लिमँय्युक़्तलु फ़ीसबीलिल्लाहि अम्वातुन्, बल्, अह्याउव्वलाकिंल्ला तश्उरून (१५२)

भावार्थ—और वह लोग जो अल्लाह की राह में मारे जाते हैं उनको मुर्दा मत कहो वह जिन्दा हैं किन्तु तुम नहीं समझते।

व लानब्लुवन्नकुम् बिशय इम्मिनल् ख़ौफ़ि वलजूइ, व नक़्सिम्मिनल् अम्वालि वल् अन्फ़ुसि व-स्समराति, व बश्शिरि- स्साबिरीन (१५३)

भावार्थ—हम तुमको निश्चय कर एक चीज के डर से, और भूख से और मालों की कमी से और जानों से और फलों से आज-माऐंगे (ऐ मुहम्मद) तू सब्र करने वालों को खुश खबरी दे।

अल्लज़ीना इज़ा असाबत् हुम्मुसीबतुन् क़ालू इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलय्हि राजिऊन (१५४)

अथ अठारहवां पाठ

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम् वश्कुरू लीविला तक्फ़ुरून (१५०)

भावार्थ—पस तुम मुझको याद करो में तुमको याद करूंगा और मेरे वास्ते शुक्र करो और मुझ से न फिरो।

या अय्युहल्लज़ीना आमनुस्ताईनू बि-स्सब्रि व-स्सलाति, इन्नल्लाहा मअ-स्साबिरीन (१५१)

भावार्थ—ऐ लोगो जो ईमान लाये हो (अल्लाह पर) सब्रके साथ और नुमाज़ के साथ अल्लाह से मदद चाहो निश्चय कर अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

वलातकूलू लिमँय्युक्तलु फ़ीसबीलिल्लाहि अम्वातुन्, बल् अह्याउव्वलाकिन्ला तश्उरून (१५२)

भावार्थ—और वह लोग जो अल्लाह की राह में मारे जाते हैं उनको मुर्दा मत कहो वह ज़िन्दा हैं किन्तु तुम नहीं समझते।

व लानब्लुवन्नकुम् बिशय इम्मिनल् ख़ौफ़ि वल्जूइ, व नक्सिम्मिनल् अम्वालि वल् अन्फ़ुसि व-स्समराति, व बश्शिरि-स्साबिरीन (१५३)

भावार्थ—हम तुमको निश्चय कर एक चीज के डर से, और भूख से और मालों की कमी से और जानों से और फलों से आज़-माएँगे (ऐ मुहम्मद) तू सब्र करने वालों को खुश खबरी दे।

अल्लज़ीना इज़ा असाबत्हुम्मुसीबतुन् क़ालू आइन्नालिल्लाहि व इन्ना इलय्हि राजिऊन (१५४)

में बयान किया इन लोगों को अल्लाह लानत करता है और उनके लानत करने वाले लानत करते हैं।

इल्लल्लज़ीना ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़ ऊलाइका अतूबो अलैहिम् व अनत्तव्वाबुर्रहीम (१५८)

भावार्थ—किन्तु जिन्होंने तोबा की और नेकी की और बयान किया (मुझ को) पस यह लोग हैं जिन पर मैं अपनी (रहमत) फिराता हूं और मैं फिराने वाला महरबान हूं।

इन्नल्लज़ीना कफ़रू व मातू वहुम् कुफ़्फ़ारुन् ऊलाइका अलैहिम् लानेतुल्लहि वल्मला एकतही वन्नासे अजमाईन् (१५९)

भा०—निश्चय कर जो लोग काफिर हुये हैं और मर गये और काफ़िर रहे इन लोगों पर खुदा और फ़रिश्तों और सब लोगों की लानत है।

खालिदीना फ़ीहा लायुखफ़फ़ो अंनहुमुल अज़ाबो वलाहुम् युन्ज़रून (१६०)

भा०—और वह ऐसी जगह में सदैव रहेंगे जहां उनसे दुःख हलकाना किया जायेगा और न वह छोड़े जावेंगे।

* इति अठारवां पाठ *

उन्नीसवां पाठ

व इलाहुकुम् इलाहुन् वाहिदुन् ला इलाहा इल्ला हुवर्रहमानुर्रहीम (१६१)

भा०—और तुम्हारा ईश्वर एक है और उसके सिवाय कोई पूजने के योग्य नहीं किन्तु वही दयालु और कृपालु है।

इन्ना फ़ीख़ल क़िस्समावाते वल अरज़े व इख़्तिला फ़िल्लैले वन्नहारे वल फुल किल्लती तंजरीफ़िल् व हरे बिमायन्फ़उन्नासा व मा अंज़ल्लाहो मिनस्समाये मिम्माइन् फ़ अह या बिहिल् अरज़ा व अ़दा मौतिहा वबस्सा फ़ीहामिन् कुल्लिदाब्बतिम् व तसरींफ़िर्रीहे वस्सहाबिल् मुसख़रे बैन स्समाये वल अरज़े ल आयातिल्लिक़ौमई या क़िलून् (१६३)

भा०—निश्चय कर आसमानों की पैदाइश के बीच और पृथ्वी और राति और दिन का होना और किश्तियां जो दरया में चलती हैं और लोगों को फायदा देती हैं, और जो कुछ उतारा अल्लाह ने आसमान से पानी आदि पस उससे जमीन को जिलाया उस की मौत के पश्चात् (अर्थात् उसको हरा भरा किया) और हर प्रकार के जानवर उसमें अलग २ पैदा किये और हवाएं चलाईं और बादल जो आसमान और जमीन के बीच हुक्म के साथ बांध दिये हैं (अर्थात् ईश्वर जब कहता है तब चलते हैं) यह अक़लमंद क़ौम के लिये अल्लाह की निशानियाँ हैं।

व मिनन्नासे मईं यत्तख़िज़ो मिन्दूनिल्लाहे अन्दादन युहिब्बूनहुम् कहुब्बिल्लाहे वल्लज़ीना आमनू अशद्दो हुब्बन् ललिल्लाह वलौयरल्लज़ीना ज़लमू इज़

यरू नल अज़ाबा अन्नल कुव्वता लिल्लाहे जमीअंम् व अन्नल्लाह शदीदुल् अज़ाब (१६३)

भावार्थ—और बाज़े लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवाय उसका शरीक मानते हैं और उनसे खुदा की तरह मुहब्बत करते हैं और जो लोग कि (अल्लाह पर) ईमान लाये हैं वह मुहब्बत करने में अल्लाह के वास्ते अधिक हैं और क्या ही अच्छा हो जो लोग कि ज़ालिम हैं वह खुदा का दण्ड देखें क्योंकि सारी शक्ति अल्लाह के लिये है और ईश्वर अत्यन्त कष्टमय दन्ड देने वाला है।

इज़् तबर्रल्लज़ीना अत्तुबिऊ मिनल्लज़ीना अत्तबऊ वराउल अज़ाबा व तक़त्तअत् बिहुमुल अस्बाब (१६४)

भा०—जिस समय वह लोग जो कि उन लोगों (खुदा के साथ शिर्क करने वालों) के जो कि पैरवी करते थे और उनके पेशवा थे बेज़ार (दुखित) होगये और वह खुदा के दन्ड को देखेंगे तो उनके सब ज़रिये अलग हो जायेंगे अर्थात् कोई काम न आवेगा।

व क़ालल्लज़ीना अत्तबऊ लौ अन्ना लना कर्रतन् फ़नतबर्रा मिनहुम् कमा तबर्राऊ मिन्ना कज़ालिका युरीहुमुल्लाहो आमालहुम् हसरातिन् अलैहिम् व माहुम् बिख़ारिजीना मिनन्नार (१६५)

भा०—और वह लोग कहेंगे जो कि (बुतों की) पैरवी करते थे क्या ही अच्छा होता कि हम दुनियां की तरफ़ फिर जाते। अर्थात् बुत परस्त नहीं होते। जैसे उन्हों (बुतों) ने हमसे अपना मुख मोड़ा हम भी मोड़ते इस प्रकार अल्लाह उनको उनके कर्मों का फल दिखायेगा उन पर शोक है कि वह सदैव की भड़कती हुई आग (दोज़ख़) से नहीं निकलेंगे।

* इति उन्नीसवां पाठ *

अथ बीसवां पाठ

याअय्युहन्नासो कुलू मिम्मा फ़िल अरज़े हलालन् तय्यबम् वला तत्तबिऊ ख़ुत वातिश्शैतान इन्नहूलकुम् अदुव्वुम् मुबीन (१६६)

भा०—ऐ लोगों उस चीज़ को खाओ जो कि पृथ्वी पर पाक है और शैतान के क़दमों की पैरवी मत करो क्योंकि वह तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है।

नोट—ऊपर की तीनों आयतें उस समय मुहम्मद साहब पर उतरीं जब कि उनकी क़ौम बुतपरस्ती करती थी और सूंअर खाती थी।

इन्नमा या मुरकुम बिस्सूये वल फ़हशाये व अन्त कूलू अलल्लाहे माला तालमून (१६७)

भा०—इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि वह (शैतान) हुकम करता है तुमको बेहयाई और बुराई के लिये और यह अल्लाह के ऊपर उन लोगों से कहो कि तुम कुछ नहीं जानते हो अर्थात् क़ाफ़िर हो।

व इज़ा क़ीला लहुम् अत्तबिऊ मा अंज़लल्लाहो कालू बल्नत्तबिओ मा अलफ़ैना अलैहे अबाअना औलौकाना अंबाओहुम् लायाकिलू ना शैअम् वला यह तेदून (१६८)

भा०—जब उनसे कहा जाता है कि तुम उसकी पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा है वो कहते हैं हम उसकी पैरवी करेंगे जो हमने अपने बापों से पाया है क्या उनके बाप न समझते और वह न राह पाते थे।

व मसलुल्लज़ीना कफ़रू कमसलिल्लज़ी यानिको बिमाला यस्मओ इल्ला दुआअंम् व निदाअं सुम्मुन बुकुम् उम्मियुन फ़हुम्लाया क़िलून (१६९)

भा०—और उन लोगों की मिसाल जो काफ़िर हुए उस शख्स के मानिन्द है जो कि उस चीज़ के साथ चिल्लाता है जो कि न सुने सिवाय बुलाने और पुकारने के बहरे गूंगे और अन्धे हैं पस वह नहीं समझते हैं।

या अय्युहल्लज़ीना आमनू कुलू मिन्तय्यबाते मा रज़क़ना कुम् व अश्कुरू लिल्लाहे इन्कुन्तुम् ईयाहो ताबुदून (१७०)

भा०—ऐ मनुष्यो जो अल्लाह पर ईमान लाये हो खाओ पवित्र उस वस्तु को जो हमने तुमको दी है और खुदा का शुकर करो यदि तुम उसकी इबादत करने वाले हो।

इन्नमाहर्रमा अलैकुमुलमयतता वद्दम्मा वलह मल् ख़िन्ज़ीरे वमा उहिल्ला बिही लि ग़ैरिल्लाहेफ़ मन अज़्तुर्रा ग़ैरा बाग़िम् वला आदिन फ़ला इस्मा अलैहे इन्नल्ला ग़फ़ूरुर्रहीम (१७१)

भा०—सिवाय इसके नहीं कि हमने तुम्हारे ऊपर मरा हुआ और खून और सूअर का मांस और वह चीज़ जिस पर खुदा के सिवाय दूसरे का नाम लिया गया हो हराम किया किन्तु जो बेबस है और नियम से बाहर नहीं जाता और न छुटने वाला है उस पर कोई गुनाह नहीं (अर्थात् वह इन चीजों को खा सकता है) क्योंकि खुदा दयालु और मेहरबान है।

नोट—ऊपर की आयत में खुदा ने मुर्दा और खून और शूअर का गोश्त और वह चीज जिस पर खुदा के सिवाय दूसरे का नाम लिया गया हो यानी देवी आदि पर चढ़ा हुआ भैंसा या बकरा इन सबको हराम बता दिया किन्तु एक मुसलमान पर आपत्ति काल में खा लेना कोई गुनाह नहीं है।

इन्नल्लज़ीना यक्तुमूना मा अंज़लल्लाहो मिनल्कि-ताबे व यश्तरूना बिही समनन् क़लीलन ऊलाइका मा या कुलूना फ़ी बुतूनहिम् इल्लन्नारा वला युकल्लिमु हुमुल्लाहो यौमल क़यामते वलायुज़क्कीहिम् वलहुम् अज़ाबुन अलीम (१७२)

भा०—निश्चय कर जो लोग अल्लाह की किताब में से जो उसने उतारा है छुपाते हैं और उसका मोल थोड़ा लेते हैं इन लोगों का खाना पेट में आग के मानिन्द है और अल्लाह क़यामत के दिन उनसे न बोलेगा और न इनको पाक करेगा और उनके लिये अत्यन्त दुखदाई दण्ड है।

ऊलाइकल्लज़ीना अश्तरवुज़्ज़लालता बिलहुदा वल अज़ाबा बिल्मग़फ़िरते फ़ मा अस्बराहुम् अलन्नार (१७३)

भा०—यह वो लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही और दया के बदले दण्ड मोल लिया है इन लोगों का आग (दोज़ख़) पर सबर करना कुछ हकीक़त नहीं रखता।

ज़ालिका बि अन्नल्लाह नज़्ज़लल् किताबा बिलहक़्क़े व इन्नल्लज़ीना अख़्तलफ़ूफ़िल किताबे लफ़ीशिक़ाक़ि न्बईद (१७४)

भा०—यह इस वास्ते है कि अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी और जिन्होंने निश्चय कर किताब में इख़्तिलाफ किया और उस इख़्तिलाफ के कारण वह (अल्लाह से) दूर हैं।

नोट—यह ऊपर की आयत यहूदियों के किताब के बारे में जिन्होंने अपनी किताब में बहुत कुछ परिवर्तन कर डाला था नाज़िल हुई है।

* इति बीसवां पाठ *

अथ इक्कीसवां पाठ

लैसल बिर्रा अन्तवल्लू वुजूहकुम् क़िबल ल्मशरिके वल मग़रिबे वलाकिन्नल बिर मिन आमना बिल्लाहे वल यौमिल आख़िरे वल मलाइकते वल किताबे वन्नबी ईना व आतल् माला अ़ला हुब्बिही ज़विल् क़ुरबा वलयतामा वलमसाकीना व इबनस्सबीले वस्साइ लीना व फ़िर्रिक़ा बे व अक़ामस्सलाता व.आतज़्ज़काता वलमूफ़ूना बि अहदिहिम् इज़ा आहदू वस्साबिरीना फ़िल बासाये वज़्ज़राये व हीनल्बासत ऊलाइकल्लज़ीना सदक़ूत व ऊलाइका हुम्मुल मुत्तक़ून (१७५)

भा०—इसीमें भलाई नहीं कि तुम अपने मुंह को पूरब और पच्छिम की तरफ़ फेरो किन्तु भलाई उसको है कि जो अल्लाह और पिछले दिन (क़यामत) फ़रिश्तों और किताब और पैगम्बरों पर ईमान लाया और उसकी मुहब्बत में निजी मनुष्यों और अनाथों व फ़क़ीरों और मुसाफ़िरों और सवाल करने वालों और गरदनों के छुटाने में अर्थात् क़ैद से छुड़ाने में अपना माल लगाया और नमाज़ और ज़कात (खुदा की राह में खैरात करना) को पूरा किया और जिन लोगोंने लड़ाई के समय और बीमारी और तंगी के समय सब्र किया और अपने अहद को करके पूरा किया यही लोग सत्य बोलने वाले और परहेज़गार हैं।

या अय्युहल्लज़ीना आमनू कुतिबा अलैकुमुल क़िस्सो फ़िलक़त लाल अलहुर्रो बिलहुर्रे वल अब्दो बिल अब्दे. वल उन्सा बिल उन्सा फ़मन उफ़िया लहूमिन अखीहे शैउन फ़ अत्तिबा उन बिल मारूफ़े व अदाउन्

इलैहे बिअहसानिन ज़ालिका तख़्फ़ीफ़ुम्म मिर्रब्बिकुम वरहमातु न फ़ मन आतदा बअ़्दा ज़ालिका फ़लहू अज़ाबुन् अ़लीम (१७६)

भा०—ऐ मनुष्यो जो ईमान लाये हो तुम्हारे ऊपर मारे हुओं की बराबरी करना यानी क़स्सास लेना आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत लेना लिखा गया है और जिस किसी का खून उसके भाई से माफ़ किया जावे तो उस को अच्छी तरह नेकी के साथ अदा कर देना चाहिये यह उस पर वाजिब है और यह तुम्हारे खुदा की तरफ़ से आसानी और दया है जिसने उसमें जियादती की उसके लिये अत्यन्त दुःखदाई दण्ड है।

वलकुम् फ़िल क़िसासे, हयातुन याउलिल्बाबें ला अ़ल्लकुम् तत्तक़ून (१७७)

भा०—ऐ बुद्धिमानों तुम्हारे लिये बराबरी में ही जिन्दगी है इस कारण तुम बचो।

कुतिबा अ़लैकुम् इज़ाहज़ारा अहदकुम्मुल मौतो इन्तरका ख़ैरल्वसीयतो लिल्वालिदैने वल अक़रबैना बिल मारूफ़ हक़्क़न अ़ल्लमुत्तक़ीन (१७८)

भा०—तुम्हारे लिये लिखा गया है कि जब तुममें से कोई मरे और यदि वह अपने माल की वसीयत अपने माता पिता और रिश्तेदारों के लिये अच्छी तरह से कर जावे तो यह परहेजगारों पर हक़्क़ है (अर्थात् उसकी वसीयत को पूरा करें।

फ़मन बद्दालहू बाअ़्दा मासमिअ़ाहू फ़इन्नमा इस्मुहू अ़ालल्लज़ीना युबद्दिलूनहू, इन्नल्लाहासमीउ़न् अ़लीम (१७९)

भा०—जो कोई बदल डाले उस चीज़ को जो उसके पीछे सुना तो सिवाय इसके यह कि उस(बदल डालना]का गुनाह उन लोगोंपर है जो उसको बदलते हैं निश्चय कर अल्लाह सुनने वाला और जाननेवाला है।

* इति इक्कीसवांपाठ *

अथ बाइसवां पाठ

फ़मन् ख़ाफ़ा मिम्मूसिन जनफ़न् अउ् इस्मन् फ़ अस्लह् । बयनहुम् फ़लाइस्मा अ़लयहि, इन्नल्लाहा ग़फ़ूरुर्रहीम (१८०)

भा०—पस जो कोई वसीयत करने वाले से कजी (कमी) या गुनाह के कारण डरे तो उसको चाहिये कि उनके दरमियान दुरुस्ती कर दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं है निश्चय है कि अल्लाह दयालु और महरबान है।

या अईयुहल्लज़ीना आमनू कुतिबा अ़लयकुमुस्सियामु कमाकुतिबा अ़ल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् लाअ़ल्लकुम तत्तक़ून (१८१)

भा०—ऐ मनुष्यों जो ईमान लाये हो तुम्हारे ऊपर रोजा रखना लिखा गया जैसा कि तुमसे पहले लोगों पर लिखा गया था इसलिये कि तुम परहेजगारी करो।

अय्यामम्ममादूदातिन् ,फ़मन् काना मिन्कुम्म मरीज़नअउ् अ़ला सफ़रिन फ़इद्दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़रा, व अ़ल्लज़ीना युतीक़ूनहू फ़िद्‌यतुन् तआ़मु मिस्कीनिन् फ़मन् ततव्वआ़ ख़यरन् फ़हुवा ख़यरुल्लहू व अन्तसूमू ख़यरुल्लकुम इन्कुन्तुम् ताअ़लमून (१८२)

भा०—गिन्ती के दिनों में (तुम लोग) रोजा रक्खो, और जो कोई तुममें से बीमार या सफ़र के ऊपर हो उसके लिये रोजे के दिनों की गिन्ती और है और उन लोगों के लिये जो कि उसकी ताक़त रखते हैं उन पर एक फ़कीर का खाना वाजिब है और जो कोई अधिक नेकी करे उसके लिये और अच्छा है और बहतर तुम्हारे लिये यही है कि तुम रोजे रक्खो यदि तुम बुद्धिमान हो।

शह्रु रमज़ानल्लज़ी उन्ज़िला फ़ीहिल् कुराआनु हुदल्लिन्नासि व-बय्यिनातिम्मिनल् हुदा वल् फ़ुर्क़ानि, फ़मन् शहिदा मिन् कुमु-श्शाह्रा फ़ल् यसुमूहु, व मन् काना मरीज़न् अउ् अ़ला सफ़रिन् फ़इ.दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़रा, युरीदुल्लाहु बिकुमुल् युस्रा वला युरीदु बिकुमुल् उस्रा, वलि तुक्मिलुल् इ.दता व लितु-कब्बिरुल्लाहा अ़ला माहदाकुम् व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (१८३)

भा०—रमज़ान के महीने में जिसमें कुरान मजीद उतारा गया है लोगों के लिये हिदायत और उसके [अनकूल दलीलें और मौजिज़े [अद्भुत बातें] हैं तुममें से कोई इस महीने में उपस्थित हो [अल्लाह के सामने) उसको चाहिये कि वह रोज़ा रक्खे और जो कोई बीमार या सफ़र की हालत में हो उसके लिये [रोजों की] गिनती के दिन और हैं अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का इरादा करता है न कि तुम्हारे लिये कठिनाई का तुमको चाहिये कि (रोजों की) गिनती को पूरा करो और अल्लाह की बड़ाई करो उस चीज़ से जिससे तुम को हिदायत की है और चाहिये कि शुकर करो।

वइज़ा सालका इ.बादी अ़न्नी फ़इन्नी क़रीबुन्, उजीबु दाअ़्वत-दाइ, इज़ादाअ़ानिफ़ल् यस्तजीबूली वल् यूमिनूबी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून ()

उहिल्ला लकुम् लय् लति-स्सियामि-र्रफ़ासु इला निसाइकुम, हुन्ना लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासु-ल्लहुन्ना, अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख्ताना नूना अन्फ़ुसाकुम् फ़ताब। अलय्कुम्, वअ़फ़ा अ़न्कुम्

फ़ल्आना बाशिरू हुन्ना वब्तग़ू माकतबल्लाहु लकुम् वकुलू अश्रबूहत्ता यतबय्यना लकुमुल् ख़य्तुल अबयज़ु मिनल् ख़य्तिल् असवदि मिनल् फ़जरि, सुम्मा अतिम्मुस्सियामा इलल्लय्लि, वलातुबाशिरू हुन्ना व अन्तुम् आकिफ़ूना फ़िल् मसाजिदि. तिल्का हुदूदुल्लाहि फ़ला तक़्रबूहा कज़ालिका युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (१८४) ।

भावार्थ—और जब मेरे बन्दे तुझ को मुझ से सवाल करें तो मैं उनके निकट हूं और पुकारने वालों को मैं उत्तर देता हूं जब कोई पुकारने वाला मुझको पुकरता है पस (लोगों को) योग्य है कि मेरे हुक्म को मानें और मुझ पर ईमान लावें संभव है कि भलाई को प्राप्त हों और तुम्हारे लिये रोजों की रात में अपनी बीवीयों के साथ विषय भोग करना हलाल (जायज) किया गया क्योंकि वे तुम्हारे लिये और तुम उनके लिये परदा हो यह अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों के लिये पाप करते थे पस अल्लाह तुम्हारे निकट आया और तुमको क्षमा किया अब तुम उनसे मिला करो और अल्लाह ने जो तुम्हारे लिये लिखा है उस को ढूढ़ों (अर्थात् औलाद पैदा करो) और खाओ पियो जब तक कि तुम्हारे लिये काले तागे से सफेद तागा सुबह से दिखाई दे (अर्थात् जब पौ फटे तब अलग हो जाओ) और फिर रोजे को रात तक पूरा करो और उन से (बीवीओं से) न मिलो क्योंकि तुम मसजिदों के बीच) अल्लाह के हुक्म को) स्वीकार करने वाले हो यह अल्लाह की हदें हैं उनके निकट न जाओ इस प्रकार अल्लाह अपनी निशानियां लोगों के लिये बयान करता है ताकि वह बचें ।

वला ताकुलू अम्वालकुम् बय्नकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इलल् हुक्कामि लिताकुलू फ़रीक़-

म्मिन् अम्वालि-न्नासि बिल् इस्मि व अन्तुम् ताअ्ल-मून (१८५)

भावार्थ—और माल को अपने दरमियान नाहक़ के साथ मत खाओ और उनको हाकिमों के पास खींच के न ले जाओ इस कारण कि लोगों के माल का भाग तुम पाप के साथ में खाओ तुम (इन सब बातों को जानते हो ।

नोट:—ऊपर की आयत में रिशवत का देना और हाकिमों से मिलकर दूसरों का माल खाना निषेध किया है लेकिन मुसलमान नहीं मानते ।

* इति बाइसवां पाठ *

(रजिस्टर्ड) (रजिस्टर्ड)

निपट बहिरेपन

कानों से कम सुनने कान बहिने शब्द होने दर्द घाव नासूर सूजन खुजली खुशकी संसनाहट, फुंसी, बिलकुल न सुनने व कान के सर्व रोगों की, स्वदेशी अनुभवी रामबाण दवा वल्लभ ऐण्ड संस पीलीभीत का जगद विख्यात करामाती तैल है फी शीशी सवा रुपया १।) तीन शीशी एक साथ मंगाने पर डाक व्यय मुफ्त । हिमादि रसायन—अनेक प्रकार की निर्बलता पुरानी खांसी स्वांस फेफड़ों की कमजोरी व नजला और जुकाम की अद्वितिय महौषधि है । फी बक्स सवा दो रुपया २।) धोखा देने वाले ठगों से सावधान जिन्हें विश्वास न हो वह यहां पधार कर चिकित्सा करा सकते हैं अपना पता साफ लिखें । हाल सहित हमारा पता यह है ।

बहिरेपन की दवा—वल्लभ एण्ड सन्स,
पीलीभीत—यू० पी० ।

अथ तेईसवां पाठ

यस्अलूनका अनिल् अहिल्लति, कुल्हिया मवाक़ीतु लिन्नासि वल् हज्जि, व लय्सल्बिर्रो बिअन्नातुल् बियूता मिन्ज़ुहूरिहा वलाकिन्नल्बिर्रो मनित्तक़ा वआ तुल्बुयूता मिनअब्वाबिहा वत्तक़ुल्लाहा लअ़ल्ल कुम् तुफ्लिहून (१८६)

भावार्थ—तुझ से ऐ मुहम्मद लोग चांद के महीनों (अर्थात् हज्ज के महीनों) के बारे में लोग पूछते हैं उनको बतला कि लोगों के लिये और हज्ज करने वालों के लिये समय निश्चित किये हुये हैं और इसमें तुम्हारे लिये भलाई नहीं है कि तुम पीछे से आओ किन्तु भलाई और श्रेष्ठता इसमें है कि घरों में दरवाजों से आया करो और अल्लाह से डरो ताकि तुम भलाई को पहुंचो।

नोटः—यह आयत उस समय हजरत मुहम्मद पर उतरी जब कि लोगों ने यह सवाल किया कि चांद एक सी हालत पर क्यों नहीं रहता इसका अल्लाह ने जवाब दिया कि चंद्र का परिवर्तन महीनों के कारण है—इसी प्रकार जो लोग हज्ज को जाने का प्रण कर लेते थे घर से बाहर निकल कर फिर उस द्वार से दाखिल नहीं होते थे बल्कि पीछे से आते थे इसका भी अल्लामियां ने निषेध कर दिया—

व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीना युक़ातिलूनकुम् वलातअ्तदू इन्नल्लाहा ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन (१८७)

भावार्थ—जो कि तुम को क़तल करते हैं अल्लाह की राह में तुम उनको क़तल करो और जियादती मत करो क्योंकि अल्लाह जियादती करने वालों को दोस्त नहीं बनाता—

वअक़्तुलूहुम् हय्सु सक़िफ़्तुमूहुम् वाअख् रिजूहुम्मिन् हय्सु अख्रजूकुम् वल् फ़ित्नुन अशद्दु मिनल् क़त्लि, वला तुक़ातिलूहुम् इन्दल मस्जिदिल् हरामि हत्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि, फ़इन् क़ातलूकुम् फ़क़्तुलूहुम्, कज़ालिका जज़ाउल् काफ़िरीन (१८८)

भावार्थ—और उनको जहां पाओ मार डालो और उनको निकाल दो जहां से तुम को निकाल दिया है क्योंकि कुफ़्र क़तल करने से भी अधिक बुरा है और मसजिद हराम (काबे की चार दीवारी) में उनको मत क़तल करो यदि वो तुम से उसमें लड़ें तो वहां उनको क़तल कर दो काफ़िरों की यही सजा है।

फ़ इनअन्तहू फ़इन्नल्लाहा ग़फ़ूररहीम (१८९)

भावार्थ—यदि वह न लड़ें तो निश्चय कर अल्लाह दयालु और महरबान है।

व क़ातिलूहुम् हत्ताला तकूना फ़ित्नतुम्व यकून दीनुलिल्लाहि, फ़ इनिन्तहू फ़ला उद्वाना इल्ला अल-ज़ालिमीन (१९०)

भावार्थ—और उनसे यहां तक लड़ो कि उनका कुफ़्र दूर होजावें (अर्थात मुसलमान होजावें) यदि वह न लड़ें तो जालिमों को छोड़ कर उन पर जियादती करना—

अश्शहरुलहरामु बि-श्शहरिल् हरामि वल् हुरुमातु क़िसासुन, फ़मनअअ्तदा अलयकुम् फ़ाअ्तदू अलयहि बिमिस्लिमाअ्तदा अलयकुम् वअत्तक़ुल्लाहा वाअ्लमू अन्नल्लाहा मा अल मुत्तक़ीन (१९१)

व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि वला तुल्क़ू बिअयदी-कुम् इलत्-तह्लुकाति, व अह्सिनू, इन्नल्लाहा युहिब्बुल् मुह्सिनीन (१९२)

भाषार्थ—हुर्मत (बुज़र्गी) वाला महीना हुर्मत वाले महीने के बदले में है और वह हुर्मतों का बदला है यदि तुम पर कोई जियादती करे तो तुम उस पर उसी प्रकार जियादती करो जैसी वह तुम पर करता है और अल्लाह से डरो और यह समझो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ और अल्लाह के राह में ख़र्च करो और अपने हाथों को हलाकत (मौत) की तर्फ़ मत डालो और नेकी करो क्योंकि नेकी करने वालों को अल्लाह अपना दोस्त रखता है—

व अतिम्मुल् हज्जा वल् उम्रता लिल्लाहि, फ़इन् उह्सिर्तुम् फ़मास्तय्सरा मिनल् हद्यि, वला तह्लिक़ू रुउसकुम् हत्ता यब्लुग़ल् हद्यु महिल्लहू, फ़मन्काना मिन्कुम्मरीज़न् अउबिही अज़म्मिर्रासिही फ़फ़िद्यतुम्मिन् सियामिन् अउसदक़ातिन् अउनुसुक, फ़इज़ा आमिन्तुम् फ़मन्तमत्तआ बिल् उम्रति इलल्हज्जि फ़मास्तय्सरा मिनल् हद्यि, फ़मँल्लम् यजिद्फ़सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल् हज्जि वसब्अतिन् इज़ारजअ्तुम्, तिल्का अशरतुन् कामिलातुन्, ज़ालिका लिमँल्लम्यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल् मस्जिदिल् हरामि, वत्तक़ुल्लाहा वाअ्लमू अन्नल्लाहा शदीदुल् इक़ाब (१९३)

भाषार्थ—और तुम हज्ज और उमरा को पूरा करो अल्लाह के लिये यदि तुम बंद किये जाओ तो जो कुछ मैस्सर (प्राप्त) हो सके क़ुर्बानी दो और तुम अपने सिरों को न मुंडाओ यहां तक कि

कुरबानी हलाल होने की जगह पहुंचे यदि तुम में से कोई बीमार हो या कोई रोग हो तो उसका बदला रोजेया खैरातया जिबह(जानवर काटना) से करो और जब तुम अमन में हो और तुम में से कोई उमरा (कंकड़ी मारना)से फ़ायदा हज्ज में उठाये तो यथाशक्ति कुरबानी करो यदि कोई कुरबानी न कर सके तो हज्ज में ३ रोजे और फिरने पर ७ रोजे रक्खे यह पूरे १० रोजे उस शख्स के लिये हैं कि जिसकी स्त्री आदि मसि-जिदे हराम में रहने वाले नहीं और अल्लाह से डरो और यह जानो कि अल्लाह अत्यन्त कठोर दंड देने वाला है—

* इति तेईसवां पाठ *

अथ चौबीसवां पाठ

अलहज्जु अश्हुरुम्माअ लूमातुन, फ़मन् फ़रजा फ़ी हिन्नल् हज्जा फला रफ़सा वला फुसूक़ा वला जिदाला फ़िलहज्जि, वमा तफअलू मिन् खय्रिय्यं-अलमहुल्लाहु, वतजव्वदू फ़इन्ना खय्र-ज्जादित्तक्वा, वअत्तकूनि या ऊलिल् अल्बाब (१९४)

भावार्थ—हज्ज करने के महीने मालूम हैं जो कोई उनमें हज्ज करना निश्चय करै तो उसको गुनाह की तरफ़ रग़बत न करनी चाहिये और न हज्ज के दिनों में लड़ाई करनी चाहिये और यदि तुम भलाई सेकरौगे तो अल्लाह उसको जान लेगा और और ऐ बुद्धि मानो सब से श्रेष्ठ नेकी का करना मुझ से डरना है—

लय्सा अलयकुम् जुनाहुन् अन्तब्तग़ू फ़ज्लम्मिर्रं-ब्बिकुम्, फ़इज़ा अफ़ज्तुम्मिन् अरफातिन् फ़अज्कुरुल्लाहा इन्दलमश्अरिल्हरामि, वअज्कुरूहु कमा हदाकुम्, वइ-न्कुन्तुम्मिन्क़ब्लिही लमिन-ज्ज़ाल्लीन (१९५)

भाषार्थ—और तुम पर नहीं गुनाह है कि हज्ज करते समय तुम अपनी जीविका का यत्न करो और जब तुम इरफ़ात (हज्ज की रस्म) से फिरो तो अल्लाह को याद करो मशरुलहराम (जगह का नाम है) के निकट और उसको इस प्रकार याद करो जिस प्रकार तुम को बतलाया है—क्योंकि तुम पहले भटके हुओं में से थे—

नोट—हज्ज करने की ऊपर बयान की हुई आयतों पर बैजावी भाष्यकार इस प्रकार लिखता है कि पहले हज्ज करने की नीयत बांधे फिर उर्के (रस्म) के दिन इरफ़ात (जगह का नाम) में आये फिर वहां से चलकर एक रात मशारुलहराम (मसजिद का नाम है) में रहे फिर ईद की प्रातः मन्ना (जगह का नाम) में पहुंच कर कंकड़ फेंके और हजामत कराके हज्ज करने की नियत को खोले फिर मक्के में जाकर काबे का परिक्रमा करे फिर सफा और मरवा (*दो मक्के के पहाड़ों के नाम हैं) के बीच में दौड़े अर्थात् उनका भी परिक्रमा करे फिर मन्ना में आकर तीन दिन रहे और प्रति दिन कंकड़ फेंके फिर मक्के में जाकर लौटने का परिक्रमा करे और फिर चला आवे और उमरे की रस्म को इस प्रकार बयान किया है कि जिन दिनों में चाहे हज्ज करने की नियत बांधे और काबे का परिक्रमा करे और सफा मरवें के बीच दौड़े फिर हजामत कराकर अहराम उतारे और हज्ज और उमरे में कुरबानी का करना जरूरी नहीं इत्यादि क्या यह बुत परस्ती और मकान परस्ती नहीं।

सुम्मा अफ़ीज़ूमिनहयसु अफ़ाज़न्नासुव अस्तग़फ़िरुल्लाहा, इन्नल्लाहा ग़फूर्रहीम (१९९)

भाषार्थ—फिर वहां से फिरो कि जहां से लोग फिरते हैं और अल्लाह से बखशिश मांगो निश्चय कर अल्लाह बख्शने वाला और महरबान है।

फ़ इज़ा क़ज़यतुम्मिना सिकाकुम् फ़अज़्कुरुल्लाहा कज़िकिर्कुम् आबाअकुम् अउ् अशद्दा ज़िकन, फ़मिन-

न्नासि मय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या वमालहू फ़िल् आख़िरति मिन्ख़लाक़ (१९७)

भावार्थ—पस जब तुम अपनी इबादतें कर पूरी कर चुको तो तुम अल्लाह को याद करो जैसा तुम अपने बापों को याद करते हो या उससे अधिकतर याद करो बाज़ लोगों में से ऐसे हैं जो कहते हैं ऐ परवरदिगार हमको दुनियां में दे उनको आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं।

व मिन् हुम्मँय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतव्वफ़िल् आख़िरति हसनतउव्वक़िना अज़ाबन्नाउर (१९८)

भावार्थ—और कुछ लोग उनमें से वह हैं जो कहते हैं से परवरदिगार हमारे हमको दुनियां और आख़िरत के बीच भलाई दे और सदैव की आग (दोज़क़) के दुःख से हमको बचा।

उलाइका लहुम् नसीबुम्मिम्मा कसबू, वल्लाहु सरीउल् हिसाब वज़्कुरुल्लाहा फ़ी अय्यामिम्माअ्-दूदातिन, फ़मन्तअ्ज्जला फ़ी यंउ मय्नि फ़ला इस्मा अ़लयहि वमन् तअख़्ख़रा फ़ला इस्मा अ़लयहि लिमानित्तक़ा, व अत्तकुल्लाहा वाअ्लमू अन्नकुम्-इलयहि तुह्शरून- (१९९)

भावार्थ—और इन लोगों के वास्ते हिस्सा है उस चीज़ का जो उन्होंने कमाया है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है और अल्लाहको बीच गिने हुये दिनों के याद करो और जो कोई दो दिन में (हज्जसे) जल्दी करे उस के ऊपर कोई गुनाह नहीं और जो कोई पीछे रहे उस पर भी कोई गुनाह नहीं यह उसके लिये है जो परहेज़गारी करे और अल्लाह से डरो और यह जानों कि तुम उसकी तरफ़ इकट्ठे किये जाओगे।

(नोट) इस पर जलालैन भाष्यकार यों लिखता है कि कुफ्र के समय में यह रिवाज थी कि हज्ज से फारिग होकर तीन दिन ईद के बाद लोग खुशी करते और बाजार लगाते थे और अपने बाप दादों की शानें बखान करते थे सो अल्लाह ने बन्द करके तीन दिन हज्ज में ठहरना और दुपहर को कंकड़ फैंकना और अल्लाह को याद करना मुकर्रर कर दिया यदि किसी को शीघ्रता हो तो दो दिन ठहर कर आ सकता है।

वमिनन्नासि मँय्युअ्जिबुका क़ौलहूफ़िलहयाति द्दुन्या वयुशाहिदुल्लाहा अ़ला माफ़ी क़ल्बिही वहुवा अलद्दुल् ख़िसाम (२००)

भावार्थ—और लोगों में से बाज वह हैं कि जिन की बात तुझ को दुनियां की जिन्दगी के बीच भली लगती है और अल्लाह को उस चीज पर जो उसके दिल में है तू साक्षी करता है (निश्चय जान) वह बहुत झगड़ालू है सब झगड़ने वालों का।

व इज़ा तवल्ला सअ़ाफ़िल्अर्ज़ि लियुफ़्सिदा फ़ीहा वयुह्लिकल् हर्सा वन्नस्ला, वल्लाहु लाऽ युहिब्बुल् फ़िसाद (२०१)

भावार्थ—और जब हाकिम होता है तो जमीन के बीच कोशिश करता है फ़िसाद करे और खेती और जानवरों को हलाक करता है किन्तु अल्लाह फिसाद करने वालों को दोस्त नहीं रखता है।

वइज़ा क़ीलालहूअत्तक़िल्लाहा अख़ज़तहुल् इ़ज़्ज़तु बिऽल् इस्मि फ़हस्बुहू जहन्नमो, वला बिअ्सऽल् मिहाद (२०२)

भावार्थ—और जब उसको कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो उसको उसकी इज्जतगुनाहके साथ पकड़ताहै अर्थात् उसको गुनाहकरने से नहीं रोकती है पस उसके लिये दोजख (नर्क) है जो बुरा बिछौनाहै।

वमिन-न्नासि मँय्यश्री नफ्सहुइब्तिगाआ मर्ज़ाति-ल्लाहि, वल्लाहु रऊफ़ुन् बिल् इबाद (२०३)

भावार्थ—और बाज़ लोगों में से वह हैं जो अपनी जान को अल्लाह की रज़ामन्दी के साथ बेच देते हैं अर्थात् उस पर कुर्बान हो जाते हैं अल्लाह अपने बन्दों के साथ महरबानी करने वाला है।

या अय्युहल्लज़ीना आमनूअद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तन् , वला तत्तबिऊ ख़ुतुवाति-श्शय्तान, इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्मुबीन (२०४)

भावार्थ—ऐ मनुष्यो जो कि ईमान लाये हो इस्लाम में दाखिल हो और शैतानों (काफिरों) की पैरवी मत करो क्योंकि वह तुम्हारे खुले हुये दुश्मन हैं।

फ़इन् ज़लल्तुम्मिन् बाअ्दि माऽजाअत् कुमुल् बय्यिनातु फ़ाअ्लमू अन्नल्लाहा अज़ीज़ुन् ह़कीम (२०५)

भावार्थ—अगर तुम इसके बाद जब तुम्हारे पास दलीलें आवें और तुम उस (कुरान) से डिग जाओ तो यह निश्चय कर जानो कि अल्लाह शक्तिमान और हिकमत (ज्ञान) वाला है।

नोट—इन ऊपर की दोनों आयतों से ही मुसलमानों में अन्ध विश्वास की प्रथा पड़ गई और यही कारण है कि कुरान के मुकाबिल युक्ति और दलील को नहीं मानते बल्कि युक्ति करने वाले को काफिर कहते हैं।

हल् यन्ज़ुरूना इल्ला अँय्यातियाहुमुल्लाहु फ़ी ज़ुललिम्मिनल् ग़मामि वल् मलाइकतु वक़ुज़ियल् अम्रु व इलल्लाहि तुर्जउल् उमूर (२०६)

भावार्थ—किन्तु नहीं इन्तिज़ार करते हैं वे लोग कि आवें उनके निकट अल्लाह बादल के सायवानों (छतों) में अर्थात् अत्यन्त क्रोध और गुस्से के साथ और फ़रिश्ते आवें और तमाम काम को किया जावे (दलील करने वालों को दंड दिया जावे) और निश्चय जानो कि अल्लाह की तरफ़ तमाम काम फिरते हैं।

* इति चौबीसवां पाठ *

अथ पच्चीसवां पाठ

सल्बनी इस्राईला कम् आतय्नाहुम्मिन् आयातिन् बय्यिनातिन्, वमँय्युबद्दिल्ल् निअ्मतल्लाहि मिन् बाअ्दि माजाअत्हु फ़इन्नऽल्लाहा शदीदुल् इक़ाब (२०७)

भावार्थ—बनी इस्राईल से पूछो कि हम (अल्लाह) ने कितनी उन को निशानी प्रत्यक्ष रूप में दी यदि कोई अल्लाह की नियमत को बदल डाले कि जब उसके पास आवे निश्चय कर समझो कि अल्लाह उसको उसको कठोर दंड देने वाला है।

ज़ुय्यिना लिल्लज़ीना कफ़रुऽल्हयातुद्दुन्या व यस्ख़रूना मिनल्लज़ीना आमनू वल्लज़ीनाऽत्तक़ौ फ़ौक़हुम यौमल् क़ियामति, वल्लाहु यर्ज़ुक़ुमँय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब (२०८)

भावार्थ—जो लोग दुनियां की जिन्दगी के पीछे काफ़िर हुये उन लोगों को हमने जीनत दी और वो लोग उन लोगों के साथ ठट्ठा करते हैं कि जो ईमान लाये हैं और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उनके ऊपर क़यामत का दिन है। अर्थात् क़यामत के दिन अल्लाह उनको बख़्शेगा और अल्लाह जिसको चाहता है वे हिसाब रोजी दे देता है।

कानन्नासु उम्मतव्वाँहिदतन् फ़बाअ़सल्लाहुन्न बिय्यीना मुबश्शिरीना वमुन्ज़िरीना, वअन्ज़ला मअ़ा-हुमुल् किताबा बिल् हक़्क़ि लियह्कुमा बयन-न्नासि फ़ीमाख़्तलफ़ू फ़ीहि, वमाख़्तलफ़ा फ़ीहि इल्लल्लज़ीना

ऊतूहु मिन् बाअ्दि माजाअत् हुमुल् बय्यिनातु बग़यन् बयनहुम् फ़ाहदल्लाहुल्लज़ीना आमनू लिमाअख़्तलफ़ू फ़ीहि मिनल् हक़्क़ि बिइज़्निही, वल्लाहु यह्दी मँय्यशाउ इला सिरातिम्मुस्तक़ीम (२०६)

भावार्थ—पहिले लोग एक उम्मत के मानने वाले थे फिर अल्लाह ने उनमें पैग़म्बर ख़ुश ख़बरी देने वाले और डराने वाले भेजे और उनके साथ किताब उतारी जो कि सच्ची है ताकि लोगों में हुक्म करके विरोध को दूर करें और उन (पैग़म्बर आदी और उनकी पुस्तकों) में विरोध नहीं और नहीं विरोध किया उसमें कि जो उन लोगों के पीछे (उतारा गया) था किन्तु उनको लोगों ने जिनको यह पुस्तकें (तौरेतादि) दीगई थी दिये जाने के पश्चात् जब कि उनके निकट दलीलें प्रकट हुईं तो उन लोगों ने सरकशी की अर्थात् किताब परिवर्त्तन कर डाली इस कारण अल्लाह ने उनको हिदायत की और वह इस कारण उस पर (क़ुरान) ईमान लाते हैं क्योंकि उन्होंने हक़् बात से विरोध किया था और अल्लाह जिसको सीधे राह की तरफ़ चाहताहै हिदायत करता है।

ऊपर की आयत पर बैज़ावी भाष्यकार का कथन—

बैज़ावी भाष्यकार इस आयत पर इस तरह लिखता है कि अल्लाह ने अनेक पुस्तकें और नबी इस कारण नहीं भेजे कि मनुष्यों में पृथक् पृथक् मत मतान्तर होजावें बल्कि इस आयत से यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने मनुष्यमात्र को एक ही मज़हब भेजा जब उस रास्ते से लोग फिरे तब दूसरा नबी और दूसरी पुस्तक भेजी जब उससे लोग फिरे फिर दूसरी किताब और दूसरा नबी भेजा ताकि लोगों को समझावे और फिर जब किताब वाले बिचले तो और नबी और पुस्तकें लोगों के समझाने के लिये भेजीं यह सब पुस्तकें और नबी (पैग़म्बर) एक ही ईश्वर की राह क़ायम करने को आये हैं इसकी मिसाल इस प्रकार है जिस प्रकार तन्दुरुस्ती एक है और रोग अनेक जब एक

मर्ज पैदा होता है तो उसके लिये दवा और पथ उसके अनुकूल होता है और जब दूसरा रोग पैदा होता है तो उसके निदान पथ आदि दूसरा होता है इसी प्रकार सब पुस्तकें और पैगम्बर सांसारिक लोगों की निवृत्ति के लिये आये और सब ने लोगों को उपदेश किया किन्तु आखिर में कुरान मजीद ऐसी पुस्तक हजरत मुहम्मद साहब के जरिये से खुदा ने भेजी जिसमें हर रोग का निदान और पथ है पर वो ही सब के जानने योग्य है—

नोट—क्या इससे वेदादि पुस्तकें ईश्वरीय ज्ञान सिद्धि नहीं होती यही कारण है कि मुसलमानों के क़ादियानी व अहल कुरान वाले फिरके वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं—

अम् ह्.सिब्तुम् अन्तद्ख़ुलुल् जन्नता वलम्मा यातिकुम्मसलुल्लज़ीना ख़लउ् मिन् क़ब्लिकुम् , मस्सत् हुमुल् बासाउ वज़्ज़रोउ वज़ुल्ज़िलू ह्त्ता यक़ूलर्रसूलु वल्लज़ीना आमनू मआहू मता नस्रुल्लाहि, अल इन्ना नस्रल्लाहि क़रीब (२१०)

भावार्थ—क्या तुम यह गुमान करते हो कि तुम बहिश्त में दाखिल होंगे और क्या नहीं मालूम हुई हालत उनकी कि जो तुम से पहिले गुजर चुके हैं कि उनको फकीरी और बीमारी (गुनह) और यहां तक कि हिलाये (आजमाये) गये कि पैगम्बरने और उन लोगोंने कि जो उसके साथ ईमान लाये थे (मिल कर) कहा कि अल्लाह की मदद कब होगी खबरदार हो (ऐ ईमान वालो) निश्चय कर अल्लाह की मदद तुम्हारे निकट है ।

यस्अलूनका माज़ायुन्फ़िक़ूना, क़ुल्मा अन्फ़क़्तुम्मिन् ख़य्रिन् फ़लिल् वालिदयनि वल् अक़्रबीना वल्.यतामा वल् मसाकीनि वब्निस्सबील, वमा तफ़्अलू मिन् ख़य्रिन् फ़इन्नल्लाहा बिही अ़लीम (२११)

भावार्थ—(ऐ मुहम्मद) तुझ से लोग सवाल करते हैं कि क्या व्यय करें कह दे जो कुछ तुम खर्च करो अपने माल से वह अपने मां बाप के लिये हो रिश्तेदारों के लिये हो यतीमों और फकीरों के लिये हो और मुसाफिरों (पथिकों) के लिये हो (इसके अतिरिक्त भलाई से (व्यय) करोगे निश्चय जानो कि अल्लाह उसका जानने वाला है।

ऊपर की आयत पर कश्शाफ़ भाष्यकार का कथन

कश्शाफ लिखता है कि जब लोगों ने हजरत से पूछा कि मालों में से किस माल का खर्च करना सवाब (पुण्य) है। तब इस आयत का नुजूल (उतरना) हुआ कि माल को माता पिता आदि लोगों में खर्च करो अर्थात् अल्लाह ने खर्च करने का तरीक़ा बता दिया है।

नोट—हम भी अल्लाह मियां की अक्ल की दाद देते हैं लोग पूछते हैं कि मालों में से किस माल का खर्च करना बहुत सवाब (पुण्य है अल्लाह मियां जवाब देते हैं कि माता पिता आदि की सेवा में खर्च करो सच है कि सवाल गंदुम और जवाब चना इसी का नाम है।

कुतिबा अलयकुमुल् क़ितालु वहुवा कुर्हुल्लकुम्, वअ़ासा अन्तक्रहू शियअ़ंव्वहुवा ख़ैरुल्लकुम्, वअ़ासा अन्तुहिब्बू शयअ़ंव्वहुवा शर्रुल्लकुम्, वल्लाहु याअ्‌लमु वअन्तुम् लाताअ़्लमून (२१२)

भावार्थ—और तुम्हारे ऊपर लड़ना लिखा (आर्डर) गया और वह तुम्हारे लिये बुरा है इस कारण कि सम्भव है कि तुम एक चीज के लिये बुरा समझो और वह तुम्हारे लिये अच्छी हो और संभव है कि जिस चीज के लिये तुम प्रेम करो वह तुम्हारे लिये बुरी हो और (जो) अल्लाह जानता है वह तुम नहीं जानते।

❀ इति पचीसवां पाठ ❀

अथ छत्तीसवां पाठ

यस्अलूनका अनिश्शह्रिल्हरामि क़ितालिन् फ़ीहि, क़ुल्क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन् वसद्दुन् अन् सबीलिल्लाहि वकुफ़्रुन् बिही वल्मस्जिदिल्हरामि, वइख़राजु अह्लिही मिन्हु अक्बरु इन्दल्लाहि वल्फ़ितनतो अकबरो मिनल क़त्ले वलायज़ालूनायुक़ातिलूनकुम हत्ता यरुद्दुकुम अन्दीनकुम इनइस्तताऊ व मंई यरतदिद मिनकुम अन्दी नही फ़य मुत्त वहुवा काफ़िरुन् फ़ऊलाइका हाबितत आमालहुम फ़िदुनिया वल आख़िरते व ऊलाइका असहाबुन्नारि हुम फ़ीहा ख़ालिदून (२१३)

भावार्थ—(ऐ मुहम्मद) तुझ से लोग मुहर्रम के महीने में लड़ने के बारे में पूछते हैं (तू) कह उन लोगों से उस महीने में लड़ना गुनाह है और खुदा के रास्ते को बंद करना और उसके साथ कुफ्र करना और मसजिद हरामका बन्द करना और उससे लोगोंको निकाल देना उससे बड़ा गुनाह अल्लाह के निकट है और कुफ्र करना कत्ल करने से बड़ा पाप है। और सदैव रहेगा (तुम्हारे दुशमन) कि तुम से यहां लड़ें कि तुम को तुम्हारे दीन से फेर दें यदि वह शक्ति रखते हो और यदि कोई तुम में से कोई अपने दीन से फिर जावे तो वह मृत्यु के समान और काफिर है पस यह (काफिर) लोग इनके अमल दुनियां और आखिरत में खोये गये के समान (निकृष्ट) हैं और यह लोग आग (दोजख) के बीच सदैव रहेंगे।

इन्नल्लज़ीना आमनू वल्लज़ीना हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि ऊलाइका यरजूना रहमतल्लाहि वल्लाहो ग़फ़ूरुर्रहीम (२१४)

भावार्थ—जो लोग कि ईमान लाये (अल्लाह और रसूल पर) और जो लोग अपने घर को छोड़ कर अल्लाह की राह में लड़े ये ही लोग अल्लाह की महरबानी की उम्मेदवार हैं और अल्लाह (उन्हीं लोगों को) बख्शने वाला और दयालु है।

नोट—ऊपर की आयत में मुहम्मद साहब ने अल्लाह के नाम पर अन्य मतावलम्बियों के साथ लड़ना और जिहाद करने का हुक्म दिया है और यही कारण है कि मुसलमान लोग एक दूसरेसे लड़ते झगड़ते रहते हैं।

यस अलूनका अनिल खमरै वलमैसिरे कुल फ़ीहिमा इस्मुन कबीरुम वमनाफ़ि उन्लिन्नासे व इस्मुहुमा अकबरो . मिनन्नफ़्य हिमा वयसअलूनंकामाज़ायुन्फ़िकून कुलिलअफ़्फ़ज़ालिका युबय्यनुल्लाहुलकमुल आयातेलाअल्लकुम तत फक्करून (२१५)

भावार्थ—सवाल करते हैं तुझ से (ऐ मुहम्मद) शराब और जुए के बारे में (तू) कहदे उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों को फायदे हैं किन्तु उन दोनों का गुनाह उन दोनों के फायदे से बड़ा है और लोग तुझसे पूछते हैं कि क्या खर्च करें तू उनसे कह कि अपनी इच्छा से अधिक हो (तब खर्च करो) इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी निशानियां प्रकट करता है ताकि तुम फ़िक्र करो।

ऊपर की आयत पर अब्बास भाष्यकार का कथन

अब्बास भाष्यकार कहता है कि शराब और जुए के बारेमें कई आयतें उतरी और हर एक में उनकी बुराई प्रकट की गई है किन्तु आखिर में सूरयेमाइदह की आयत उतरी कि जिसमें साफ हराम की गई और जो चीज नशा लावे वह भी हराम है और जुआ भी हराम है इसी प्रकार खर्च के बारे में लोगों ने पूछा तो हुक्म हुआ कि धन जब हाजित से अधिक हो तब खर्च करो।

नोट—इससे प्रतीत होता है कि अरब देशमें शराब-जुआ और फ़िजूल खर्ची की रस्म बड़ी चढ़ी थी मुहम्मद साहब ने इनके दूर करने का यत्न किया किन्तु शोक है कि शराबन्तहूरा (साफ़ की हुई शराब को बहिश्त से न निकाल सके।

फ़िद्दुनिया वल आखिरते वयसअलूनका अनल यतामा कुल इस्लाहुन्लहुम खैरुन व इन्तुखालूतहुम फ़ इख्वानु कुम वल्लाहु या अलमुल मुफ़सिदा मिनल मुस्लहे व लौशा अल्लाहुलआनतकुम इन्नल्लाह अजीज़न्ह कीम० वलातन्किहुल मुशरिकाते हत्ता यूमिन्नां व लाअम्मतुम मूमिनतुन खैरुम्मिन्मुशरिकतिम व लौ आजबतकुम् वलातुनकिहल्मुशरिकीना हत्ता योमिनू वला अब्दुम्मूमिनुन खैरुम्मिन मुरिकम्ब वलौ आ-जबकुम ऊलाइ.का यदऊ.ना इलन्नार वल्लाहो यदऊ इल्लजन्नते वलमग़फ़िरते बि इजिनही वयुबय्यनो आया-तिही लिन्नासे ला अल्लहुम यतज़ कुरून (२१६)

भावार्थ—(ऊपर की आयत से सम्बन्ध) बीच दुनिया और आखिरत के (तुम फ़िक्र करो) (ऐ मुहम्मद) तुम से लोग यतीमों के बारे में पूछते हैं कह उनका दुरुस्त करना (संभालना बेहतर है और यदि तुम उनको मिलालो तो वह तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह संभालने से बिगाड़ने वाले को खूब जानता है और यदि अल्लाह चाहता तो तुझको कष्ट देता निश्चय कर (जानो) कि अल्लाह शक्तिमान और ज्ञानमान है और जब तक कि शिर्क करने वाली (काफ़िर औरतें) ईमान न लावें (मुसलमान न होजावें) मत निकाह (शादी) करो और ईमान वाली लौंडी (मुसलमान हुई) शिर्क करने वाली औरत से अच्छी है।

यदि तुमको पसन्द लगे और शिर्क करने वालों (काफिरों) के साथ निकाह मत करो (अपनी लड़की उनकोमत दो) जब तक कि ईमान न वो लावें और गुलाम ईमान वाला (मुसलमान नौकर) शिर्क करने वालेसे अच्छा है अगरतुमको पसन्द हो और यही लोग (काफिर) तुमको हुक्म करके (दोजक) की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह कृपाके साथ अपना हुक्म कर तुमको बहिश्त की तरफ़ बुलाता है और लोगों के लिये अपनी निशानी (आयतें) प्रकट करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें ।

जलालेन भाष्यकार का कथन ।

पहिले काफिर लोगों और मुसलमानों के दरमियान शादी विवाह होते थे किन्तु इस आयत ने हराम ठहरा दिया उसकी सूरत इस तरह से है कि जब एक मुसलमान मर्द किसी काफिर औरत से शादी करे तो उसको पहिले मुसलमान बनाले वरना शादी नाजायज ठहरेगी । इसी प्रकार मुसलमानऔरत किसी काफिरके साथ शादी करती है कि जब पहिले वह मुसलमान होवे वरना शादी हराम ठहरेगी । और काफिर से अभिप्राय उस मनुष्य से हैं जो अल्लाह के सिवाय किसी दूसरी चीज़ (बुत) से मिन्नत मांगे और उसको सिजदा करे किन्तु ईसाई और यहूदियों की औरतों से निकाह कर लेना चाहिये ।

नोट—इसी प्रकार की आयतों ने मुसलमानों को मुसलमानों का कट्टर पक्षपाती बना दिया है । क्या महात्मा गांधी कुरानी खुदा की इन आज्ञाओं के होते हुए मुहम्मदअली शौकतअली आदि मुसलमान भाइयों से दोस्ती की उम्मेद रख सकते हैं ।

* इति छब्बीसवां पाठ *

—:-०-:—

अथ सताईसवांपाठ

वयस अलूनका अनिल महीजे कुलहुवा अज़न् फ़आतज़िलुन्निसाआ फ़िलमहीज़ वला तकरबू हुन्ना हत्ता यतहुरना फ़इज़ातततहरनाफ़ातुहुन्ना मिनहैसो अमर कुम्मुल्लाहि इन्नल्लाहो युहिब्बुत्तव्वाबीना व युहिब्बुलमुत्ता हिरीन (२१७)

भाशार्थ—(ऐ मुहम्मद) तुझसे रजस्वला (मासिक धर्म) होने के बारे में प्रश्न करते हैं तू कह वो अपवित्रता है तुमको चाहिये कि मासिक धर्म के दिनों स्त्रियों से विषय भोग मत करो जब तक कि वह नहा धोकर पवित्र न होजावे और जब पवित्र होजावे तब उनके पास जिस प्रकार अल्लाह ने आज्ञा दी है जाओ निश्चय (रक्खो) कि अल्लाह तोवह करने वालों और पाकी करने वालों के साथ प्रेम रखता है ।

निसाउकुम् हरसुल्लकुम फ़ात् हरसकुम अन्नाशैतुम् व कद्दिमू लिअन्फ़ुसिकुमं व अत्तकुल्लाहा वआलमू अन्नकुम मुलाकूहो व बशिशरिलमोमिनीन (२१८)

भाषार्थ:—औरतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं पस अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो जाओ ।

ऊपर की आयत पर जलालैन भाष्यकार का कथन

ऊपर की आयत पर जलालैन भाष्कर इस प्रकार लिखता है कि स्त्रियां मर्दों के लिये मानिन्द खेत के हैं पस अपने खेत में जिधर से चाहो जाओ अन्ना का अर्थ कैफ़ा है कैफ़ा (किस प्रकार जाओ) शैतुम (जिस प्रकार तुम्हारी इच्छा हो) ।

नोट—इस आयत से मुसलमानों की तहजीब और उनका विषय भोग में लिप्त होना पाया जाता है हम पाठकों को इतनी ही चेता-

चनी देते हैं कि ऊपर की आयत का अर्थ ध्यान पूर्वक पढ़ें कि इसके कैसे अश्लील अर्थ निकलते हैं। और यही अर्थ कादिरी ने भी किया है।

वलातज अलुल्लाहा उरज़तन लिएमानिकुम् अन्त बरू व तत्तकू व तुस्लिहू बैनन्नासे वल्लाहो समीउन अलीम (२१९)

भावार्थ—और अल्लाह को अपनी शपथों के लिये निशाना मत करो इस कारण कि लोगों के बीच फूट दुराचार और दुष्टता करो। (इन सब कामों के लिये निशाना मत बनाओ और अल्लाह सुनने वाला व जानने वाला है।)

लायुवा खिज़कुमुल्लाहु बिल्लग़वे फ़ी एमानकुम वलाकईं युवांखिज़कुम बिमाकसबत कुलूबकुम्व वल्लाहो ग़फ़ूरुं हलीम (२२०)

भावार्थ—और अल्लाह तुम्हारी क़स्मों में (सपथों के खाने में) भुटाई, पर नहीं पकड़ता किन्तु तुमको इस वस्तु के कारण पकड़ता है कि जो तुम्हारे दिलों ने कमाया है अर्थात् (अन्तकरण से किया है) और अल्लाह दयालु और सहनशील है।

नोट—इससे प्रतीत होता है कि बेकार शपथ खाने की आज्ञा देता है।

लिल्लज़ीना योलूना मिन्निसाइहिम तरब्बसो अर्बातें अशहुरिन फ़इनफ़ाओ फ़इन्नल्लाह ग़फ़ूरु रहीम (२२१)

भावार्थ—जो लोग कि अपनी स्त्रियों से सपथें खाते हैं (अर्थात् इस प्रकार की सपथ खाते हैं कि जो अचानक मुंह से निकल जाय) उनको चार मांस का इंतजार देखना चाहिये यदि वह फिर आवें (शपथों को तोड़ दें) तो निश्चय जानो कि अल्लाह बख्शाने वाला और महरबान है।

वनी देते हैं कि ऊपर की आयत का अर्थ ध्यान पूर्वक पढ़ें कि इसके कैसे श्लील अर्थ निकलते हैं। और यही अर्थ कादिरी ने भी किया है।

वलातज अलुल्लाहा उरज़तन लिएमानिकुम् अन्त वरू व तत्तकू व तुस्लिहु वैनन्नासे वल्लाहो समीउन अलीम (२१९)

भावार्थ—और अल्लाह को अपनी शपथों के लिये निशाना मत करो इस कारण कि लोगों के बीच फूट दुराचार और दुष्टता करो। (इन सब कामों के लिये निशाना मत बनाओ और अल्लाह सुनने वाला व जानने वाला है।)

लायुवा खिजकुम्मुल्लाहु बिल्लग्वे फ़ी एमानकुम वलाकई युवांखिज़कुम बिमाकसबत कुलूबकुम्व वल्लाहो गफूरुं हलीम (२२०)

भावार्थ—और अल्लाह तुम्हारी क़स्मों में (सपथों के खाने में) भुटाई, पर नहीं पकड़ता किन्तु तुमको इस वस्तु के कारण पकड़ता है कि जो तुम्हारे दिलों ने कमाया है अर्थात् (अन्तकरण से किया है) और अल्लाह दयालु और सहनशील है।

नोट—इससे प्रतीत होता है कि बेकार शपथ खाने की आज्ञा देता है।

लिल्लज़ीना योलूना मिन्निसाइहिम तरबस्सो अर्बातें अशहुरिन फ़इनफाओ फ़इन्नल्लाह गफूरु रहीम (२२१)

भावार्थ—जो लोग कि अपनी स्त्रियों से सपथें खाते हैं (अर्थात् इस प्रकार की सपथ खाते हैं कि जो अचानक मुंह से निकल जाय) उनको चार मांस का इंतजार देखना चाहिये यदि वह फिर आवें (शपथों को तोड़ दें) तो निश्चय जानो कि अल्लाह बख्शने वाला और महर-वान है।

वइन अज़मुत्तलाक़ा फइन्नल्लाह समीउन अलीम (२२२)

भावार्थ—यदि तलाक़ देने का इरादा करें तो निश्चय जानो कि अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

वलमुतल्लक़ातो यतरब्बसनाबिअन्फुसिहिन्ना सलासता कुरुइन वलायहिल्लो लहुन्ना अइँ यक्तमुना मा खलक़ल्लाहो फी अरहामिहिन्ना इन्कुन्ना योमिन्ना बिल्लाहे वल योमिलआखिरे व बऊलतु हुन्ना अहक्क़ो बिरद्दि हिन्ना फीज़ालिका इनअरादू इस्लाहन वलहुन्ना मिस्लुल्लज़ी अलैहिन्ना बिलमारूफ़ वलिर्रजाले अलैहिन्नां दरजातुनवल्लाहो अज़ीज़ुन्हकीम (२२३)

भावार्थ—और जिन स्त्रियों को तलाक दी गई है उनको चाहिये कि तीन बार रजस्वला होने तक अपनी जानों का इन्तिज़ार करें। अर्थात् तीन बार रजस्वला होने तक दूसरा विवाह न करें) और नहीं हलाल है उनके लिये यह कि वही छिपावें उस वस्तु (हमल) को जो अल्लाह ने उनके गर्भआशों में पैदा किया यदि वह अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान लाती हैं यदि उनके मालिक चाहें कि सुलह हो जावे तो उनको फेर लें (अर्थात् वालक को तोड़ दे) और वह उनके (अपनी स्त्रियों के) अधिकांश में हक़दार हैं और उनके लिये (स्त्रियों के लिये) उन पर (मर्दों पर) उनकी तरह भले प्रकार (हक़) है किन्तु आदमियों के लिये उन पर (स्त्रियों पर) दरजा बड़ा है और अल्लाह शक्तिमान और ज्ञानवान है।

❀ इति सत्ताईसवां पाठ ❀

अथ अट्ठाईसवाँ पाठ

अत्तलाक़ो मर्रताने फ़इम्साकुन बिमारूफ़िन औ तसरीहुन बिअहसानिन वलायहिल्लो लकुम् अन्ताखुज़ू मिम्मा आतैतुमू हुन्ना शैअन इल्ला अईं युख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहे फ़इन ख़िफ़्तुम अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहे फ़लाजुनाहा अलैहिमा फ़ीमा अफ़्तदत बिहीतिलि काहुदूदल्लाहे फ़लातअ्‌तदूहा व मंईयत अ्‌दा हुदूदल्लाहेफ़ऊ लाइका हुम्मज्ज़ालिमून (२२४)

भाषार्थ—और यह तलाक़ दो बार है या तो बन्द कर रखना अच्छी तरह के साथ या निकाल देना है अच्छी तरह के साथ और नहीं हलाल है तुम्हारे लिये यह कि उनको (स्त्रियों) जो कुछ दिया है वापिस लेलो किन्तु दोनों डरें अल्लाह से कि यदि उसकी हदों को कायम न रक्खेंगे (तो उसका क्रोध हम पर होगा) यदि तुम डरो कि अल्लाह की हदों (आज्ञायों) को कायम न रक्खोगे तो नहीं गुनाह उनके ऊपर उसमें कि जो स्त्री उसके साथ परिवर्तनार्थ देवे यह अल्लाह की आज्ञायें हैं इनका उलंघन मत करो जो कोई इनका उल्लंघन करेगा वही ज़ालिमों में से है ।

नोट—एक हद्द (सीमा) तक मर्द चाहे तो स्त्री को फिर रखले यह बात पहिली तलाक़ में हैं और दूसरी में। उसके पश्चात् यदि न फिर सके तो शरह के अनुकूल उस के हक्क अदा कर सके तो रखले ताकि फिर झगड़ा न हो यदि न रख सके तो उसको रुख़सत कर दे इस कारण उसको न अटका रक्खे कि परेशान होकर स्त्री जो कुछ धनादि मुझको दिया है फेर दे किन्तु यह उस सूरत में ठीक है कि जब स्त्री पुरुष की आदत न मिले और पुरुष से स्त्री की सेवामें कोई त्रुटि न हो तो कुछ सज्जन पुरुष मिलाकर स्त्री से कुछ धन मर्द को दिलवा कर उसे तलाक़ दिलवादें इसी को खुला कहते ।

फ़इन्तल्लक़हा फ़लातहिल्लो लहू मिन्बअ्दो हत्ता तन्किहा ज़ौजन ग़ैरहू फ़इन् तल्लक़हा फ़लाजुनाहा अलैहिमा अंई यत राज आइन्ज़न्ना अंई युक़ीमा हुदू-दल्लाहे व तिलका हुदूदल्लाहे युबय्यनुहा लिक़ौ मईं यालमून (२२५)

भावार्थ—पस यदि (कोई) अपनी स्त्री को तलाक़ दे देवे तो उसको नहीं हलाल होता है दूसरे मर्द से निकाह करे अगर तलाक़ दी है तो इस में कोई गुनाह नहीं कि आपस में फिर आवें (तलाक़ का कुफ्फारा कर मिल जावे) यदि वह जानते हैं कि अल्लाह की आज्ञायों को पूरा करेंगे और अल्लाह की आज्ञायें हैं जिनको वह उस क़ौम के लिये बयान करता है जो कि जानती हैं।

नोट—इससे स्त्री को चाहिये कि यदि उसका मर्द उसको तलाक़ दे देवे तो वह किसी दूसरे मर्द के साथ शादी न करे बल्कि उसकी अवधि तक बैठी रहे और तलाक़ का कुफ्फारा कर उससे मिल जावे।

वइज़ा तल्लक़ तुमन्निसाआफ़बलग़ना अजलहुन्ना फअमसिकूहुन्ना बिमारू फ़िन् औसिरिंहू हुन्ना बिमाफ़िन वलातुम्सिकू हुन्ना ज़िरारन लितअ्तदू फ़ुहबमई यंफ़अल ज़ालिका फ़क़द ज़लिमा नफ़सहू वलांतत्तख़िज़ू आया-तिल्लाहे हुज़वन व अज़कुरू नैमतल्लाहे अलैकुमबमा अंज़ला अलैकुम मिनल्किताबे वलहिक्मते य इज़्ज़ुकुम बिहिवअत्तकुल्लाह व आलमू अन्नल्लाहा बिकुल्ले शयन अलीम (२२६)

भावार्थ—और जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो और जब वह अपने समय को पहुंचें अर्थात् उनकी अवधि समाप्त हो जावें तो या तो उनकी रक्षा करो नहीं तो उनको अच्छी तरह निकाल दो किन्तु दुःख और सताने के कारण उनको बन्द मत कर रक्खो और जो कोई ऐसा करेगा वह निश्चय कर अपनी जान पर आघात करता है

और अल्लाह की आयतों को ठट्ठा के साथ मत पकड़ो (उन पर मखौल मत उड़ाओ) और अल्लाह की वस्तुओं को जो कि तुम को (प्रदान) की हैं याद करो और जो कुछ तुम्हारे ऊपर पुस्तक और ज्ञान द्वारा उतारा है वह तुमको शिक्षार्थ हैं तुम अल्लाह से डरो और यह जानो कि वह हर वस्तु को जानने वाला है ।

(अथ उन्तीसवां पाठ)

वइज़ा तल्लक़्तुमुन्निसाआ फ़बलग़ना अजलहुन्ना फ़ला तअ़्लूहुन्ना अंईयन्कहिना अज़्वाजहुन्ना इज़ा तरांज़ू बैनहुम बिल्मारूफ़ ज़ालिका यूवाअ़ाज़ो बिही मन्काना मिन्कुम यूमिनो बिल्लाहे वल योमिल आख़िरे ज़ालिकुम अज़्कालकुम व अतहरो वल्ला होयालमो व अन्तुम्ला तअ़्लमून (२२७)

भावार्थ—और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और जब उनकी अवधि (तलाक़) समाप्त होजाय तो उनको इस बात की मनाई न करो कि वह अपने लोगों से निकाह न करें यदि वह आपस में प्रसन्नतापूर्वक करना चाहें ये उस मनुष्य के लिये नसीहत कीजाती है और यह (शिक्षा) तुम्हारे लिये अत्यन्त पवित्र है और अल्लाह (उसको भले प्रकार) जानता है (जिसको) तुम नहीं जानते ।

नोट—ये स्त्रियों के माता पिता आदिको आज्ञा दी है किजब वे स्त्रियां तलाक़ की अवधि को समाप्त कर चुकें तो उनकी मरजी पर शादी करो ।

वल वालिदातो युरज़िअ़्ना औलाद हुन्ना हौलैनि कामि लैनेलिमन अरादा अंई युतिम्मर्रज़ा अ़ता व अ़लल्मौलूदे लहू रिज़्क़ों हुन्ना व किस्वातु हुन्ना बिल्मअ़्रूफ़े लातुकल्लफ़ो नफ़्सुन इल्लावु स्आहा लातुज़ारीश वालिदतुन बिवलदहा वला मौलूदुन्लहू बिवलदिही व अ़लल्वारिसे मिस्लुज़ालिका फ़इन अरादा फ़िसालन अन्तराज़िम्मिन हुमा व तशा वुरिन फ़लाजुनाहा अ़लै-

और अल्लाह की आयतों को ठट्ठा के साथ मत पकड़ो (उन पर मखौल मत उड़ाओ) और अल्लाह की वस्तुओं को जो कि तुम को (प्रदान) की हैं याद करो और जो कुछ तुम्हारे ऊपर पुस्तक और ज्ञान द्वारा उतारा है वह तुमको शिक्षार्थ हैं तुम अल्लाह से डरो और यह जानो कि वह हर वस्तु को जानने वाला है।

(अथ उन्तीसवां पाठ)

वइज़ा तल्लक़ तुमुन्निसाआ फ़बलग़ना अजलहुन्ना फ़ला तअ़्ज़ुलू हुन्ना अईयन कहिना अज़वाजहुन्ना इज़ा तराज़ू बैनहुम बिल्मारूफ़ ज़ालिका युवाआज़ो बिही मन्काना मिन्कुम युमिनो बिल्लाहे वल योमिल आखिरे ज़ालिकुम अज़काल्कुम व अतहरो वल्ला होयालमो व अन्तुम्ला तअ़लमून (२२७)

भावार्थ—और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और जब उनकी अवधि (तलाक़) समाप्त होजाय तो उनको इस बात की मनाई न करो कि वह अपने लोगों से निकाह न करें यदि वह आपस में प्रसन्नतापूर्वक करना चाहें ये उस मनुष्य के लिये नसीहत कीजाती है और यह (शिक्षा) तुम्हारे लिये अत्यन्त पवित्र है और अल्लाह (उसको भले प्रकार) जानता है (जिसको) तुम नहीं जानते।

नोट—ये स्त्रियों के माता पिता आदिको आज्ञा दी है किजब वे स्त्रियां तलाक़ की अवधि को समाप्त कर चुकें तो उनकी मरज़ी पर शादी करो।

वल वालिदातो युरज़िअ़ना औलाद हुन्ना हौलैनि कामि लैनेलिमन अरादा अईं युतिम्मर्रज़ा अता व अलल्मौलूदे लहू रिज़क़ों हुन्ना व किस्वातु हुन्ना बिल्मअ़रूफ़े लातुकल्लफ़ो नफ़्सुन इल्लावु सआहा लातुज़ारीश वालिदतुन बिवलदहा वला मौलूदुन्लुहू बिवलदिही वि अलल्वारिसे मिस्लुज़ालिका फ़इन अरादा फ़िसालन अन्तराज़िममिन हुमा व तशा वुरिन फ़लाजुनाहा अ़लै-

फ़इन्तल्लक़हा फ़लातहिल्लो लहू मिन्बअ़्दो हत्ता तन्किहा ज़ौजन ग़ैरहू फ़इन् तल्लक़हा फ़लाजुनाहा अ़लैहिमा अंईंयत राज आइन्ज़न्ना अईंयुक़ीमा हुदूदल्लाहे व तिलका हुदूदल्लाहे युबय्यनुहा लिक़ौ मईं यालमून (२२५)

भावार्थ—पस यदि (कोई) अपनी स्त्री को तलाक़ दे देवे तो उसको नहीं हलाल होता है दूसरे मर्द से निकाह करे अगर तलाक़ दी है तो इस में कोई गुनाह नहीं कि आपस में फिर आवें (तलाक़ का कुफ्फ़ारा कर मिल जावे) यदि वह जानते हैं कि अल्लाह की आज्ञायों को पूरा करेंगे और अल्लाह की आज्ञायें हैं जिनको वह उस क़ौम के लिये बयान करता है जो कि जानती हैं।

नोट—इससे स्त्री को चाहिये कि यदि उसका मर्द उसको तलाक़ दे देवे तो वह किसी दूसरे मर्द के साथ शादी न करे बल्कि उसकी अवधि तक बैठी रहे और तलाक़ का कुफ्फ़ारा कर उससे मिल जावे।

वइज़ा तल्लक़्तुमुन्निसाअ़ फ़बलग़ना अजलहुन्ना फ़अम्सिकूहुन्ना बिमारू फ़िन् औसिर्रिहू हुन्ना बिमाफ़िन वलातुम्सिकू हुन्ना ज़िरारन लितअ़तदू फ़ुहबमई यंफ़अल ज़ालिका फ़क़द ज़लिमा नफ़सहू वलांतत्तख़िज़ू आयातिल्लाहे हुज़वन व अज़कुरू नैमतल्लाहे अलैकुमवमा अंज़ला अलैकुम मिनल्किताबे वलहिक्मते य इज़ुकुम बिहिवअ़त्तकुल्लाह व आलमू अन्नल्लाहा बिकुल्ले शयन अ़लीम (२२६)

भावार्थ—और जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो और जब वह अपने समय को पहुंचें अर्थात् उनकी अवधि समाप्त हो जावें तो या तो उनकी रक्षा करो नहीं तो उनको अच्छी तरह निकाल दो किन्तु दुःख और सताने के कारण उनको बन्द मत कर रक्खो और जो कोई ऐसा करेगा वह निश्चय कर अपनी जान पर आघात करता है

और अल्लाह की आयतों को ठट्ठा के साथ मत पकड़ो (उन पर मखौल मत उड़ाओ) और अल्लाह की वस्तुओं को जो कि तुम को (प्रदान) की हैं याद करो और जो कुछ तुम्हारे ऊपर पुस्तक और ज्ञान द्वारा उतारा है वह तुमको शिक्षार्थ हैं तुम अल्लाह से डरो और यह जानो कि वह हर वस्तु को जानने वाला है।

(अथ उन्तीसवां पाठ)

वइज़ा तल्लक़ तुमुन्निसाआ फ़बलग़ना अजलहुन्न फ़ला तअ़्ज़ुलू हुन्न अईंयन कहिना अज़वाजहुन्न इज़ा तरांज़ू बैनहुम बिल्मारूफ़ ज़ालिका युवाआज़ो बिही मन्काना मिन्कुम यूमिनो बिल्लाहे वल योमिल आख़िरे ज़ालिकुम अज़्कालकुम व अतहरो वल्ला होयालमो व अन्तुम्ला तअ़्लमून (२२७)

भावार्थ—और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और जब उनकी अवधि (तलाक़) समाप्त होजाय तो उनको इस बात की मनाई न करो कि वह अपने लोगों से निकाह न करें यदि वह आपस में प्रसन्नतापूर्वक करना चाहें ये उस मनुष्य के लिये नसीहत कीजाती है और यह (शिक्षा) तुम्हारे लिये अत्यन्त पवित्र है और अल्लाह (उसको भले प्रकार) जानता है (जिसको) तुम नहीं जानते।

नोट—ये स्त्रियों के माता पिता आदिको आज्ञा दी है किजब वे स्त्रियां तलाक़ की अवधि को समाप्त कर चुकें तो उनकी मरज़ी पर शादी करो।

वल वालिदातो युरज़िअ़्ना औलाद हुन्न हौलैनि कामि लैनेलिमन अरादा अईं युतिम्मर्रज़ा अता व अलल्मौलूदे लहू रिज़कों हुन्न व किस्वातु हुन्न बिल्मअ़्रूफ़े लातुकल्लफ़ो नफ़्सुन इल्लावु सआहा लातुज़ारीश वालिदतुन बिवलदहा वला मौलूदुन्लहू बिवलदिही व अलल्वारिसे मिस्लुज़ालिका फ़इन अरादा फ़िसालन अन्तराज़िममिन हुमा व तशा वुरिन फ़लाजुनाहा अ़लै-

हिना व इन अरद तुम्मा अन्तस्तर ज़िऊ औलाद कुम फ़लाजुनाह अलैकुम इज़ा सल्लमतुम मा आतैतुम बिल्माहफ़ व अत्तकुल्लाह व आलमू अन्नल्लाह बिमा तालमूना बसीर (२३३)

भावार्थ—और बच्चे वाली स्त्रियां (जिनको तलाक़ दी गई है) अपने बच्चे को दो वर्ष पर्यन्त दूध पिलावें और उनका दूध पिलाने का हक़ व खाना और कपड़े पहनाने का हक़ भले प्रकार उस मनुष्य को पूर्ण करना होगा और कोई जीव अपनी शक्ति के अनुकूल (किसी को) न सतावे और न मां को बच्चे के साथ कोई दुःख दिया जावे और न बच्चे वाले को अपने बच्चे के साथ दुःख दिया जावे (यदि बच्चे का बाप मरगया हो तो दूध पिलाने का उसकी माताका हक़) उसके अन्य सम्बन्धियों पर (बाप के तुल्य) होगा यदि आपस के समझौते आदि से दूध छुड़ाने का इरादा करें तो भी उन पर कोई गुनाह नहीं और यदि तुम अपने बच्चों के दूध पिलाने का (किसी अन्य जगह) इरादा कर चुको तो भी तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं यदि तुम (मां के दूध पिलाने का हक़) उसको भले प्रकार दे दो और अल्लाह से डरो यह जानो कि अल्लाह उस वस्तु को जिसको तुम करते हो देखने वाला है।

ऊपर की आयत पर बैज़ावी भाष्यकार का कथन

जब पुरुष स्त्री को तलाक़ दे देवे और बच्चा दूध पीता हो तो माँ दो वर्ष तक उसके दूध पिलाने को बन्द रहे यदि उस बच्चे का पिता उसकी मां के व्ययादि भार को अपने सिर ले लेवे और यदि पिता उस का मर गया हो तो उस लड़के के अन्य संबंधी उस ख़र्च को उठावें और यदि दो बरस से कम में छुड़ा देना चाहे तो भी ठीक है और यदि बच्चे का बाप और किसी से दूध पिलवाना चाहे और उसकी मां को बन्द न रखनाचाहे तो भी ठीक है। किन्तु मां के हक़ को किसी प्रकार न काटे।

नोट—शोक है कि इसी प्रकार की शिक्षा ने माता पिता की भक्ति और पतिव्रतधर्म को इस्लाम से उड़ा दिया।

वल्लज़ीना युतवफ़्फ़ौना मिनकुंम व यज़रूना अज़वाजंई यतरब्बसना बि अनफ़ुसि हिन्ना अरबाता अश-हुरिन व अशरनफ़ इज़ा बलग़ना अजलहुन्ना फ़ला जुनाहा अलैकुम फ़ीमाफ़अलना फ़ी अनफ़ुसिहिन्ना बिल्मारूफ़े वल्लाहो बिमा तामलूनाख़बीर (२२९)

भावार्थ—और जो लोग तुमसे अपनी स्त्रियों को छोड़ जाते हैं (स्त्रियों को चाहिये कि मरने के पश्चात्) अपनी जानों को ४ महीने और दस दिन का इंतिज़ार करें और जब वह अपनी अवधि को समाप्त कर चुकें तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने लिये तो वह उस चीज़ को जो अपने दिलों में रखती है (निकाह दूसरा) अच्छाई के साथ में कर लेवे और अल्लाह उस चीज को कि जिसको तुम करते हो भले प्रकार जानता है।

नोट—पाठको! जान लो कि तलाक की अवधि तीनवार रजस्वला होने की है और मौत की अवधि ४ महीन १० दिन की है दूसरे पश्चात् स्त्री शादी कर सकती है यदि स्त्री गर्भवती हो तो गर्भ पर्यन्त शादी हो।

वला जुनाहा अलैकुम फ़ीमा अर्रज़तुम बिही मिनख़ि तावतिन्निसायें औ अकनन्तुम फ़ी अन फ़ुसिकुम् अ़लिमल्लाहो अन्नकुम सतज़ कुरून हुन्ना वलाकिन ला-तुवाइदू हुन्ना सिर्रन इल्ला अनक़ूलू क़ौलम्मारूफ़नवला ताज़िमू उक़्दतन्निकाहे हत्ता यबलुगल किताबो अज-लहू वअ़लमू अन्नल्लाह यालमो माफ़ी अनफ़ुसिकुम फ़ अहज़रूहो व आलमू। अन्नल्लाहा ग़फ़ूरुन्हलीम(२३०)

भावार्थ—और तुम्हारे ऊपर इसमें कुछ गुनाह नहीं है उसमें कि जो तुमने अपने दिलों के बीच औरतों की मंगनी को छिपा रक्खा है

(जिनके साथ शादी करने का इरादा रखते हो और अल्लाह यह जानता है तुम उनके (निकाह करने) को प्रकट करोगे कि तुम उसको छिपे हुए वादे मत दो बल्कि उनसे अच्छी तरह से एक बात कह दो और उनके निकाह गिरह को इतना कड़ा मत बाधो कि लिखे हुये (मिहर) की अवधि समाप्त होजावे और यह जानो कि जो कुछ तुम्हारे अन्तःकरण के बीच है अल्लाह जानता है बस उससे डरो और यह जानो अल्लाह दयावान और सहनशीलवान है।

* इति उन्तीसवां पाठ *

अथ तीसवां पाठ

लाजुनाहा अलैकुम इन्तल्लक़ तुमुन्निसा आमाल-म्तम स्सू हुन्ना औतफ़रजू'ल हुन्ना फ़रीज़तन व मत्तिऊ हुन्ना अलल्मूसे ए क़दरोहू व अलल्मुक़तिरै क़द-रोहू मता अन बिल्मारूफ़ हक़्क़न अलल मुहसिनीन (२३१)

भावार्थ—तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं है यदि तुम (स्त्रियों) को तलाक़ दो जब कि तुमने उनको स्पर्श न किया हो या (तुम) ने न नियत किया हो उनके लिये उनका मिहर (वह धन जो विवाह के समय स्त्री के नाम कर देते हैं और उनको हृदय खोल कर अपनी शक्ति के अनुकूल दो किन्तु धन हीन के लिये उसकी शक्ति अनुकूल दो (यह सब) भले प्रकार नेकी करने वालों पर नियुक्त हुआ है।

बैज़ावी भाष्यकार का कथन

यदि निकाह के समय मिहर न बांधा गया हो तो भी निकाह दुरुस्त है यदि बिना स्पर्श किये स्त्री को तलाक़ दीजाय तो मिहर का ऋण पुरुष पर वाजिब न होगा किन्तु अपनी शक्ति के अनुकूल ऐसी अवस्था में स्त्री को अवश्य दे।

व इंतल्लक़ तुम हुन्ना मिनक़ब्ले अन्तमस्सू हुन्ना वक़द फ़रज़्तुम लहुन्ना फ़रीज़तन फ़ानिस्फ़ो माफ़रज़ तुम् इल्ला अईं या फूना औय फुल्लज़ी बियेदिही उक़दतु न्निकाहे व अंताफू अक़रबो लित्तक़वा वलातन्सु- वल् फ़ज़्ला बैनकुम इन्नल्लाह बिमा तामलूना बसीर (२३२)

भावार्थ—और यदि तुम स्पर्श करने के पश्चात् तलाक दो और यदि तुम उनके लिये मिहर मुक़र्रर कर चुके हो तो आधा (देना) उसका वाजिब है किन्तु (स्त्रियां) (मिहर) को छोड़ दें या वह मनुष्य जिसके हाथ में निकाह का कराना है छोड़ दे (तो भी उचित है) या तुम छोड़ दो तो भी परहेज़गारी के निकट है किन्तु आपस में भलाई के करने को न भुलाओ निश्चय जानो कि अल्लाह जिसको तुम करते हो देखने वाला है ।

नोट—ऊपर की आयत का यह अभिप्राय है कि यदि मिहर ठहर चुका हो और बिना स्पर्श किये स्त्री को तलाक दे देवे तो उसका आधा मिहर पुरुष को अवश्य देना होगा यदि स्त्रियां (मिहर) को छोड़ना चाहें तो छोड़ दें या पुरुष जिसके हाथ में निकाह का रखना और तोड़ना है यदि वह पूरा मिहर भी देना चाहे तो और भी अच्छा है क्योंकि अल्लाह ने मर्द को स्त्रियों पर बड़ाई दी है उनको अधिकार है कि निकाह रक्खें या तोड़ें उनको अपने अधिकार का क़ायम रखना ज़रूरी है ।

हाफ़िज़ू अलस्सलाते वस्सल्वातिल वुस्ता व कूमूल्लि लिल्लाहे क़ानतीन (२३३)

भावार्थ—(तुमको) चाहिये कि सब नुमाज़ों (उपासना करने का मुसलमानी ढंग) की और (अधिकतर) बीच की नुमाज़ की और अल्लाह के लिये चुपके खड़े हो (अर्थात् ध्यानपूर्वक खड़े होकर उसकी उपासना करो) ।

नोट—ये ही एक आयत है कि जिससे खेंचतान कर मुसलमान लोग तीन समयकी नुमाज़ सिद्ध कर सकते हैं बाक़ी सारी क़ुरानको छान डालिये कोई आयत पांच समय नुमाज़ पढ़ने का हुक्म नहीं देती है और न ही किसी भाष्य में भाष्यकार ने पांच समय की नुमाज़ पढ़ने को सिद्ध किया है।

फ़इन ख़िफ्तुम फ़रिजालन्औरुक्‌बानन फ़इज़ा आमिन्तुम फ़अ्ज़ कुरूल्लाहा कमा अ़ल्लम कुम् मालम्तकूनू तालमून (२३४)

भाषार्थ—यदि तुम डरो (शत्रु से) हो पैदल अथवा सवार (होने की अवस्था ही में नुमाज़ पढ़ो) और जब तुम शत्रु से सुरक्षित होजाओ तो अल्लाह को उसी प्रकार याद करो जिस प्रकार तुम नहीं जानते थे और तुमको सिखाया।

नोट—इससे सिद्ध होता है कि लड़ाई में घोड़े पर भी नुमाज़ पढ़ सकते हैं।

वल्लज़ीना युतव फ़्फ़ौना मिनकुम व यज़रूना अज़्वाजम वसीयतल्लिअ्ज़ वाजिहिम मताअन इलल्हौले ग़ैराख़्राजिन फइन ख़रजना फ़लाजुन्अनाहा अ़लैकुम फ़ीमा फ़अ़ला फ़ीअन्फ़ुसहिन्न, मिम्मा फ़िन वल्लाहो अज़ीज़ुन्ह कीम (२३५)

भाषार्थ—और जो लोग तुम में अपनी स्त्रियों को छोड़कर मरजाते हैं और अपनी स्त्रियों के लिये वसीयत (मरते समय पर माल को बाटना) कर जाते हैं कि एक साल तक उनको न निकालना (घर से) और धनादि द्वारा उनको एक लाभ पहुंचाना यदि वह घर से निकल जायं (अर्थात् दूसरा विवाह कर लें) तो तुम पर उसका कोई दोष नहीं है क्योंकि जो कुछ उन्होंने किया वह अपनी आत्मा के लिये अच्छा किया है। (निश्चय जानो) अल्लाह शक्तिमान और विशेष ज्ञान वाला है।

वलिल्मुतल्ल क़ाते मनाइन बिलमारूफ़े हक्क़न अ़लल मुत्तक़ीन (२३६)

भावार्थ—और जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गई है उनके लिये अच्छाई के साथ उनका (मिहर देना) हक्क़ अदा करना परहेजगारों (मुसलमानों) के ऊपर आवश्यकीय है।

क़ज़ालिका युबैयनुल्ला हो लकुम आया तिही लअ़ल्लकुम ताक़िलून (२३७)

भावार्थ—और इसी प्रकार तुम्हारे लिये अब निशानियां प्रकट करता है ताकि तुम समझ जाओ—

॥ इति तीसवां पाठ ॥

अथ इकतीसवां पाठ

——:०:——

अलम्तरा इलल्लज़ीना ख़रजू मिन्दयारिहिम व हुम उलूफ़न हज़रल्मौते फ़क़ाला लहुमुल्लाहो मोतू सुम्मा अहयाहुम इन्नल्लाह लज़ू फ़ज़लिन अ़लन्नासे वलाकिन्ना अकसरन्ना सेलाय श्कुरून (२३८)

भावार्थ—क्या नहीं देखा तूने उन लोगों की तरफ कि जो अपने घरों से निकले और जो संख्या में हजारों थे अल्लाह ने उनके लिये कहा मरजाओ और फिर उनको जिलाया निश्चय है कि अल्लाह सब मनुष्यों के ऊपर दयालु है प्रायः ऐसे लोग हैं जो उसके अनुगृहीत नहीं होते।

ऊपर की आयत पर बैज़ावी का कथन

यह पहिले यहूदी और ईसाइयों में हो चुका है कि कई हज़ार मनुष्य घरबार छोड़ कर अपने शत्रु के भय से निकले और लड़ाई

(जिहाद) से जी चुराया इन्होंने अपनी तक़दीर पर विश्वास न किया एक मंजिल में पहुंच कर सब के सब मरगये फिर सात दिन के पश्चात् पैग़म्बर की दुआ से जिन्दा हो गये ये सब अल्लाह ने इसलिये बयान किया है कि कोई मनुष्य मौत के भय से जिहाद करने से जी न चुराये।

वक़ातिलू फ़ीसबी लिल्लाहे व आलमू अन्नल्लाह समीउन अलीम (२३९)

भावार्थ—और अल्लाह के रास्ते में लड़ो और यह समझो कि अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

मनज़ल्लज़ी युक़रिज़ुल्ला करज़न हसनन् फ़युज़ाइफ़हू लहू अज़ आफ़न कसीरा वल्लाहु यक़बिज़ो व यब सुतो व इलैहे तुर्जऊन (२४०)

भावार्थ—और ऐसा कौन मनुष्य है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे अल्लाह उसको उसका दुगुना उससे अधिक देगा अल्लाह ही कम और अधिक करता है (अर्थात् सब कुछ करता है) और निश्चय जानो कि तुम उसीकी तरफ़ फिराये जाओगे।

अलम्तरा इलल्मलामिन बनी इसराईला मिनबादे मूसा इज़ क़ालू लिनबी इंल्लहुम अबअसलना मलिकन् नुक़ातिल फ़ीसबीलिल्लाहे क़ाला हल् असैतुम् इनकुतिबा अलै कुमुल क़िताला अल्लातु क़ातिलू क़ालू व मालना अल्ला नुक़ातिला फ़ीसबी लिल्लाहे व क़द उख़िरिजना मिन्दयारि ना व अब नाइना फ़लम्मा कुतिबा अलै हुमिल क़िताला तवल्लू इल्ला क़लीलम हुमि नहुम वल्लाहो अलीमुन बिज़्ज़ालिमीन व क़ाला लहुम नबियोहुम इन्नल्लाह क़दबासा लकुम्तालूताला

मलिकन् क़ालू अन्ना यकूनो लहुल्मुल्को अ़लैना व नहनो अहक़्क़ो बिल्मुल्के मिनहो वलम् यूता सअ़तम् मिनल्माले क़ाला इन्नल्लाह अस्तफ़ाहु अ़लैकुम व ज़ादहू व सततन् फ़िल्इ़ल्मे वल्जिस्मे वल्लाहो योती मुल्कहू मई यशाओ वल्लाहो वासिउन अ़लीम (२४१)

भावार्थ—क्या तूने बनीइसराईल से मूसा के पश्चात् सरदारों को न देखा जिस समय के उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे लिये बादशाह चुन ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें तब (नबी) ने कहा तुमको बहुत जल्दी लड़नेकी आज्ञा मिलेगी (किंतु) तुम न लड़ोगे उन लोगों ने (बनीइसराईल की क़ौम) ने कहा कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे तो क्या करेंगे क्योंकि हम अपने घरों से निकाले हुये और अपने बेटों से अलग हुये हैं जब उनको लड़ने की आज्ञा दी गई तब थोड़ों को छोड़कर अधिकांश ने अपने मुंह को लड़ाई से फेर लिया अल्लाह जालिमों को (भली प्रकार) जानता है और उनके नबी ने उनके लिये कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये तालूत को बादशाह बनाया (तब उन्होंने) कहा कि वह क्योंकर हमारे ऊपर बादशाह हो सकता है बादशाहत के हम हक़दार हैं उससे क्योंकि न तो उसके पास अधिकांश में माल है (तब पैग़म्बर ने उत्तर में) कहा कि अल्लाह ने उसको तुम्हारे ऊपर पसन्द किया है और विद्या और शरीर में तुमसे अधिकतर है और अल्लाह अपने मुल्क को जिसको चाहता है देता है और अल्लाह अधिकाँश में (तुम से) जानने वाला है।

मुआ़लिम भाष्यकार का कथन

ऊपर की आयत के नाजिल होने का कारण यह है कि हजरत मूसा के बहुत वर्ष परियन्त बनी इसराईल का काम और उनकी बादशाहत बिगड़ गई जब उनकी नियत बुरी हुई तो उनके शत्रु जालूद काफिर बादशाह ने उनके आस पास के नगरों को छीन लिया और बहुत को पकड़ कर ले गया बनीइस राईल भाग कर बैतुल मुक़द्दस में

जमा हुये और शमूएल पैगम्बर से चाहा कियदि कोई बड़ा बादशाह हमारे ऊपर हो तो हम खुदा की राह में दिल खोल कर लड़ें। इत्यादि।

व क़ाला लहुमनबी ओहुम इन्ना आयाता मुल्केही अई यातीयाकुमुत्ता बूतोफ़ीहे सकीनतुम मिरब्बिकुम व बक़ीयतुम मिम्मा तरका आलो मूसा व आलो हारुना तहमिलहुल मलाइकतो इन्ना फ़ीज़ालिका लआयातन्लुकुम इन्कुन्तुम्मोमिनीन् (२४२)

भावार्थ—और उनके नबीने उनसे कहा कि उसकी (तालूत) बादशाहत का चिन्ह यह है कि तुम्हारे पास सन्दूक उसके निश्चय से ईश्वर द्वारा आ जावेगा और १ (सन्दूक) निशानी है कि जिसको मूसा की वहारून की क़ौम छोड़ गई है उसको फरिश्ते उठालावेंगे, और उसमें तुम्हारे लिये अल्लाह के चिन्ह हैं यदि तुम सच्चे ईमान वाले हो।

१ नोट—यह बनी इसराईलकी क़ौममें सन्दूक था जिसमें अल्लाह की कुछ दी हुई चीजें थीं यह हारून और मूसा की फौज के आगे आगे चलता था। और उनको फतह होती थी और जब उनकी नियत बदल गई तो उस सन्दूक को उनका शत्रु छीन लेने पर जब तालूत बादशाह हुआ तो वह संदूक स्वयं उनके घर के सामने आ विराजमान हुआ इत्यादि कहावतें यहूदियों में प्रचलित हैं।

॥ इति इकतीसवां पाठ ॥

अथ बतीसवां पाठ

---:○:---

फ़लम्मा फ़सला तालूतो बिल्जुनूदे क़ाला इन्नल्लाह मुबतलीयकुम बिनहरिन फ़मन् शरिबा मिनहो फ़लैसा मिन्नी व मल्लमयतअमहु फ़इन्नहू मिन्नी इल्लामन् अग़तरफ़ा ग़ुर्फ़तन् बियेदिही फ़शरिबू मिनहो इल्ला

क़लीलम मिनहुम फ़लम्मा जावज़हू हुवावल्लज़ीना आमनू माहू क़ालू लाना क़ता लनल योमा बिजालूता वजुनूदिही क़ालल्लज़ीना यज़ुन्नूना ना अन्नहुम मुला कुल्लाहेकम मिनफ़ी अमिन क़लीलतिन् ग़लबत फ़ी अतन् कसीरतन बिइज़निल्लाहे वल्लाम अस्साबिरीन (२४३)

भा०—और जबतालूत बादशाह अपनी फौजके साथ जुदा हुआ(तब बनी इसराईल से) कहा कि अल्लाह तुमको एक नहर द्वारा जाचने वाला है जिस किसी ने उसका पानी पी लिया वह मुझ से अलग हो जायगा और जो कोई नहीं चक्खेगा वह मेरा है किन्तु जो कोई अपने हाथ का एक चिल्लू भरे और उसमें से थोड़े से पी गये और जब वह नहर के पार उतरा और वह लोग जो उस पर उतरा और वह लोग जो उस पर ईमान लाये थे उन्होंने (तालूत) से कहा कि आज हम में इतनी शक्ति नहीं कि जालूद के लशकर से (लड़ें) किंतु उन लोगों ने जो जानते थे कि हम अल्लाह के मिलने वाले हैं और प्रायः ऐसा हुआ है कि थोड़े लोग बहुतों पर विजय पाये हैं पर अल्लाह के हुक्म के साथ विजय पाते हैं और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

वलम्मा बरज़ूलजालूता वजनूदही क़ालू रब्बना अफ़रिग़ अलैना सबरम् व सब्बित अक़दामना व अन्सुरना अलल्क़ौमिल काफ़िरीन (२४४)

भा०—और जब प्रगट हुए जालूद और उसकी सेनाओं के लिये (मदद करने वाले) तब उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पालक हमको सब्र दे, और हमारे पैरों को जमाये रख और हमको काफिरों के साथ लड़ाई में मदद कर।

फ़हज़मूहुम बि इज़्निल्लाहे वक़तला दाऊदो जालूता व आता हुल्लाहुल मुल्का वलहिक मता वअल्लमहू

मिम्मा यशाओ व लौलादफ़ उल्ला हिन्नासा बअज़हुम बि बाजिनलफ़सदतिल अरज़ोवलाकिन्नल्लाह ज़ूफ़ज़लिन अलल आलमीन (२४५)

भा०—पस उनको खुदा के हुक्म के साथ हार हुई और दाऊद ने जालूद को क़तल किया और अल्लाह ने उनको बादशाहत (राज्य) और हिकमत (ज्ञान) देकर अपनी इच्छा के अनकूल सिखाया यदि अल्लाह कुछ मनुष्यों को कुछ मनुष्यों के ऊपर विजय न करता तो सब पृथ्वी बिगड़ जाती (आपस में लड़ मरते) किन्तु अल्लाह की मिहरबानी दोनों लोकों (लोक और पर लोक) पर है।

ऊपर की आयत पर जलालैनभाष्यकार का कथन

इन लड़ने वाले मनुष्यों की संख्या ३१३ थी हज़रत दाऊद और उनके बाप और बेटे और उनके ६ भाई थे उनको राह में ३ पत्थर मिले और बोले कि हमको उठा ले हम जालूद को मारेंगे जब जालूद मुक़ाबिले के लिये निकला तो उसने कहा कि मैं तुम्हारे सब के लिये काफ़ी हूं मेरे सामने आते जाओ तब तालूत पैग़म्बर ने हज़रत दाऊद के बाप को बुलाया और कहा कि अपने बेटों को मुझे दिखा उसने अपने ६ बेटे जो कि युवक और योद्धा थे दिखला दिये किन्तु दाऊद को न दिखाया क्योंकि वह छोटे थे और बकरियां चराया करते थे और पैग़म्बर तालूत ने उनको बुला कर पूछा कि तू जालूद को मार सकता है उन्होंने कहा कि मैं मार सकता हूं फिर जालूद के सामने गये और उन्होंने वही तीनों पत्थर जो कि रास्ते में मिले थे गोफन में रख कर चलाये वह जालूद के माथे पर लगे जिससे कि वह मर गया इसके पश्चात तालूत ने अपनी लड़की कीशादी दाऊदके साथ कर दी और वह बादशाह हुये इस कहावत से सिद्ध होता है, कि नबियों को खुदा की राहमें जिहाद करनी चाहिये और वह लोग बेवक़ूफ़ हैं जो कहते हैं कि लड़ाई करना नबियों का काम नहीं।

तिलका आयातुल्लाहे नतलूहा अलैका बिलहक्के व इन्नकालिमनल मुरसलीन (२४६)

भा० यह अल्लाह की निशानियाँ है कि जिनको हम सचाई के साथ पढ़ते हैं और निश्चय कर तू (मुहम्मद) अल्लाह के भेजे हुओं में से है।

॥ इति बत्तीसवां पाठ ॥

—:०:—

अथ प्रथम सोपना व द्वितीय परिच्छेद का तृतीय तिलकर रुसुलो अध्याय

अथ तेतीसवां पाठ

तिलकर रुसलो फज्जलना बाज़हुम अलाबाज़िन मिनहुम मन्कल्लमल्लाहो वरफ़आ बाज़हुम दरजातिन व आतैना ईसा बिनमरीयमल बय्यनातेवअय्यद-नाहो बिरूहिल कुदसे व लौशा अल्लाहो मा अक़्तल-लज़ीना मिन्बादे हिम मिन्बा दे माजा तहुमुलबय्यनातो व लाकिन अख़तलफ़ू फमिन हुम मन आमना वमिन हुमन मन क़फ़रा व लौशा अल्लाहो मा अक़्तलूवला किन्नल्लाह यफ़्अलो मायुरीद (२४७)

भा०—यह रसूल (खुदा का है) और हमने कुछ को कुछ के ऊपर बड़प्पन दिया उनमें से कुछ वह हैं कि जिनके साथ अल्लाह ने बातें की और कुछ के दरजे बड़े किये और मर्यम के बेटे ईसा को प्रत्यक्ष दलीलें (प्रमाण) और शक्ति उसकी पाक जान के लिये दीं और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग नहीं लड़ते क्योंकि उनके पूर्वज उसके (अल्लाह) के पीछे चलने वाले थे जिन पर प्रत्यक्ष प्रमाण

(तौरात और इन्जील आदि) प्रगट हुये किन्तु उन्होंने उनका (तौरात आदि) का विरोध किया उनमें कुछ ऐसे हैं जो ईमान लाये और कुछ उनमें से काफ़िर हुए यदि अल्लाह चाहता तो वह आपस में नहीं लड़ते किन्तु वह जो चाहता है सो करता है।

नोट—इससे प्रतीत होता है कि अल्लाह ने ही लड़ाया।

या ऐय्योहल्लज़ीना आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम मिन्क़ब्ले अंय्याती यौमुल्लाबैउन फ़ीहे वला खुल्लतुम व लाशफ़ाअतुन वलकाफ़िरूना हुमुज़्ज़ालिमून (२४८)

भा०—ऐ वो लोगों जो ईमान लाये हो (अल्लाह पर) जो कुछ तुमको अल्लाह ने दिया है उस दिन के आने के प्रथम कि जिस दिन लेन देन और दोस्ती और सुफारिश न होगी (अर्थात् कोई किसी का न होगा) दान दे डालो और काफिर (कुरान को न मानने वाले) ज़ालिम हैं।

अल्लाहो ला इलाहा इल्लाहुवल हीउल क़यूम वलाता खुज़ हो सिन तुमं वला नौमुन लहू माफ़िस्समावाते वमा फ़िल्अरज़े मन्ज़ल्लज़ी यशफ़अउ इन्दहू इल्ला बिइज़्नही यालमो मावयना एंदे हिम व मा खल्फ़हुम व ला युहीतूना बिशयम मिन इल्मही इल्ला बिमाशाआ व-सिआ कुरसी हुस्समावाते वल अरज़ा वला यूदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवलअ्.ली उलअ्.ज़ीम (२४९)

भा०—और अल्लाह के सिवाय कोई पूजने के योग्य नहीं जो सदैव रहने वाला है जिसको ऊंघ और नींद कभी नहीं आती और जो कुछ आस्मान और जमीन के बीच हैं वह सब उसीका है और कौन है ऐसा जो उसके निकट उसकी बिना आज्ञा के किसी की सुफारिश कर सके और वह (अल्लाह) जो कुछ लोगों के आगे है पीछे हैं उसको (भली प्रकार) जानता है और उसको किसी चीज के ज्ञान की सीमा

नहीं घेरती यदि वह चाहे (तो हो सकता है) और उसकी कुरसी ने आसमान और जमीन को घेर लिया है और जमीन की निगरानी उसको नहीं थकाती (जमीन आसमान की रक्षा से नहीं थकता) और वही बुलन्द मरतबे वाला है।

लाइकराहाफ़िद्दीन क़दतबैयनर्रुशदो मिनल ग़ीआ फ़मई यकफ़ुर बित्ताग़ूते व यूमिन बिल्लाहे फ़क़दे इस्तमसका बिलउरवतिलवुस्क़ा लाअन फिसामा लहा वल्लाहो समीउन अलीम (२५०)

भावार्थ—और दीनामुआमलात में जबरदस्ती नहीं (करो) निश्चय कर यह बात प्रकट हो गई (कि तुमने) गुमराही से रास्ता पा लिया और जिस किसी ने शैतान के साथ कुफ्र किया अल्लाह पर ईमान लाया उसने ऐसा मजबूत कड़ा पकड़ रक्खा है जो कभी टूटता ही नहीं (उसका अल्लाह के साथ सदैव का सम्बन्ध हो गया) और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

अल्लाह वली उल्लज़ीना आमनू युख़ु रिजु हुम मिन्ज़ुल्माते इल्लंनूरे वल्लज़ीना कफ़रू औल्याहुम्त्ताग़ूतो युख़रुजूनिहुम् मिन्नूरे इल्ज़ुल्माते ऊलायकुम असहाबुन्नारे हुम फ़ीहा ख़ालिदून (२५१)

भावार्थ—जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये हैं उनका वह दोस्त (मित्र) है और उनको अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की तरफ ले जाता है (अज्ञानी से ज्ञानवान् बनाता है) जो लोग काफिर हुए उनके मित्र शैतान हैं वह उनको प्रकाश से निकाल अन्धकार की तरफ ले जाते हैं ये लोग दोजख की आग के बीच सदैव रहने वाले हैं।

* इति तेतीसवां पाठ *

अथ चौंतीसवां पाठ

अलम्तरा इल्लज़ी हाज्जा इबराहिमा फ़ीरब्बे ही अन आतुनाल्लाहुल्मुल्का इज़क़ाला इबराहिमोरब्बि अल्लज़ी युही व युमीतो क़ाला अना उही व उमीतो क़ाला इबराहिमो फ़इन्नल्लाह याति बिशमशि मिनल मशरक़ फ़आतिबिहा मिनल मग़रबे फ़ बुहि तल्लज़ी क़फ़रा वल्लाह लायहदिल्कौमिज़्ज़ालिमीन (२५२)

भावार्थ—क्या तूने उस शख्स को नहीं देखा जिसने इब्राहीम के साथ खुदा के बारे में झगड़ा किया इस कारण कि जब अल्लाह ने उसको बादशाही दी (तो) इब्राहीम ने कहा कि मेरा परिवरदिगार वह है जो (लोगों को) मारता जिलाता है उसने (झगड़ालू) कहा कि मैं भी मारता हूं जिलाता हूं। तब इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह पूर्व से पश्चिम को सूर्य लाता है तू उसको पश्चिम से पूर्व को ले आपस वो काफिर भौचक्का रह गया और अल्लाह ज़ालिमों की क़ौम को राह (कदापि) नहीं दिखाता।

औकल्लज़ी ममरा अला करियतिन्ववहिया खावियतुन अला उरूशेहा क़ाला अन्ना युही हाज़िहिल्लाहो बअदा मौतिहा फ़ अमात हुल्लाहो मिअ़ाता आमिन सुम्मा बअ़स क़ाला कम लबिस्तो यौमन औबअ़ज़ यौमिन क़ाला बल लबिसता मिअ़ाता आमिन फ़अन्ज़ुर इला तआमिका वशराबिका लेमयतसन्नहो व अन्ज़ुर इला हिमारिका वलिनजअल्का आयेतनल लिल्नासे व अन्ज़ुर इलल इज़ामे कैफ़ा नुनशिज़ुहा सुम्मा नक्सूहा लहहामा फ़लम्मा तबयनालहू क़ाला आलमो अन्नल्लाह अला कुल्ल शैयन क़दीर (२५३)

भावार्थ—अथवा उस मनुष्य के सदृश जो एक गांव में होकर निकले और वह ग्राम जिसकी छतें गिरी हुई हों वह मनुष्य कहे कि अल्लाह उसको मर जाने (गिरने) के पश्चात् किस प्रकार जिन्दह करेगा अल्लाह ने उसको १०० वर्ष मरा रक्खा फिर उसको जिलाया फिर उससे पूछा कि तू कितनी देर मुर्दा रहा उसने जवाब दिया कि मैं एक दिन या थोड़े दिन (मुर्दा) रहा अल्लाह ने कहा कि तू १०० वर्ष (मुर्दा) रहा तू अपने खाने पीने की वस्तुओं को देख कि नहीं सड़ी और अपने गदहे को देख ताकि लोगों के लिये तुझको अपनी निशानी बनादे और अपनी हड्डियों को देख कि क्यों कर (हम) उनको एक दूसरे पर चढ़ाते हैं फिर उन पर मांस लिपटाते हैं। पस जब उस पर यह प्रकट हुआ (तो मनुष्य) ने कहा कि मैं जानता हूं कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है।

नोट—ऊपर की आयत में कल्पना करके यह सिद्ध किया है कि मनुष्य शरीर का रचने वाला अल्लाह ही है।

यह शख्स हजरत अजीज पैगम्बर थे बख्तनसर एक बादशाह था काफिरी इसराईल ग़ालिब हुआ शहर बैतुलक़दस को वीरान किया तमाम लोग बन्दी में पकड़े गये तब हजरत अजीज इसमें गुजरे ताज्जुब किया कि यह शहर फिर क्यों कर आबाद हुआ इस जगह इन की रूह क़ब्ज हुई सौ बरस के बाद जिन्दह हुए उनका खाना और पीना पास धरा था इसी तरह सवारी का गदहा मर कर हड्डियां उसी शक्ल से धरी थी उनके रूबरू जिन्दह हुआ इस १०० वर्ष में बनी इसराइल क़ैद से खलास हुए और शहर फिर आबाद हुआ उन्होंने जिन्दह हो कर आवाज़ ही दे।

वइज़ क़ाला इबराहिमोरब्बि अरिनी कैफा तुहि़ल-मौता क़ाला औलम् तूमिन क़ाला बला व लाकिनिल यतमइन्ना क़ल्बी क़ाला फ़ख़ुज़ अरबअतम मिन्तैर फ़सुर्हुन्ना इलयका सुम्मा अजअल अला कुल्ले जबलिम

मिनि हुन्ना जुज़अन सुम्मा अद्ओहुन्नायातिं यनका सैअन व आलम अन्नल्लाह अज़ीजुनहकीम (२५४)

भावार्थ—और जब इब्राहीम ने अपने परवरदिगार से कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार तू मुझको यह दिखादे कि मुर्दों को किस तरह जिलाता है (अल्लाह) ने पूछा क्या तू ईमान मेरे ऊपर नहीं लाया तो (इब्राहीम ने) कहा कि मैं ईमान लाया हूं किन्तु मैं (इसलिये तुझ से यह देखना चाहता हूं) ताकि मेरे दिल को धैर्य बंधे (खुदा ने) कहा कि चार जानवर ले और उनकी सूरत पहिचान और उनके टुकड़े करके प्रत्येक पर्वत पर फैंक दें फिर उनको बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए चले आवेंगे इससे जान कि वह अल्लाह शक्तिमान और ज्ञानवान है।

नोट—वह चार जानवर एक मोर दूसरा मुर्ग तीसरा कौआ और चौथा कबूतर था।

उनको बुला कर पहिचाना फिर उनको जिबह किया फिर एक पहाड़ पर चारों जानवरों के सिर दूसरे पहाड़ पर बाजू और तीसरे पर धड़ और चौथे पर टांग फेंक दी फिर बीच में खड़े हो कर एक जानवर को पुकारा पुकारते ही उसका सिर हवा में खड़ा हुआ फिर उसमें धड़ मिला फिर उसमें बाजू फिर पैर मिल गये और वह दौड़ता हुआ इब्राहीम के पास चला आया इस प्रकार चारों जानवर जिन्दह हुए इस प्रकार की कपोल कल्पित गाथा मुआलिम कश्शाफ बेजावीय जलालैन आदि अरबी भाष्यकारों ने लिखी हैं कि जो पुराण की गपोड़ों से कम नहीं है।

* इति चौंतीसवां पाठ *

अथ पैंतीसवां पाठ

मस्लुल्लज़ीना युन्फ़िक़ूना अमवालहुम फ़ीसबी लिल्लाहे कमस्ले हब्बतिन अनबातात सबआ़ सना-बिल फ़ीकुल्लि सुन्बुलतिम मिअ़ातहू हब्बतिन वल्लाहो युज़ाइफ़ो लिमईयशाओ वल्लाहो वासिउन अ़लीम (२५५)

भावार्थ—जो लोग कि अपने माल दौलत को अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उनकी मिसाल इस प्रकार है जैसे कि एक दाना कि जिससे सात बालें पैदा हों और हर बाल में १०० दानें (इसी प्रकार अल्लाह दूना करता है) जिसको चाहे और अल्लाह अधिक देने वाला और जानने वाला है।

अल्लज़ीना युन्फ़िक़ूना अमवालहुम फ़ी सबीलिल्लाहे सुम्मा ला युतबिऊ़ना मा अन्फ़क़ू मन्नम वल अज़्ज़-लहुम् अजरुहुम रब्बहिम वला खौफ़ुन अलैहिम वल हुँम यह ज़नून (२५६)

भावार्थ—और वह लोग जो अल्लाह की राह में अपने माल को खर्च करते हैं और फिर खर्च करने के पश्चात् अहसान को नहीं जतलाते हैं वह अपने रब्ब के निकट किसी प्रकार का दुख और रंज न उठायेंगे और न उनको किसी प्रकार का भय होगा बल्कि उनको उनके किये का श्रेष्ठ फल मिलेगा।

कौलुम्ब मारुफ़ुम्ब व मग़फ़ितुंन खैरुन मिन सदा कतइयतबउहा आज़न वल्लाहो ग़नीउन हलीम् (२५७)

भावार्थ—उस पुण्य के पश्चात् कि जिससे दुख हो क्षमा करना बहतर और श्रेष्ठ बात है और अल्लाह बेपरवाह और सहन शील है।

या ऐय्योहल्लज़ीना आमनू लातुब्तिलू सदा क़ातिकुम बिलमिन्ना वल अज़ाकल्लजी युन्फ़िक़ो मालहू रिया अन्नासि वलायौमिनबिल्लाहे वल यौमिल आख़िरे फ़मस्लहू कमस्लि, सफवानिन अलेहे तुराबुन् फअसाबहू व इब्लुन फतरकहू सल्दनलायक्दरूना अला शैयम मिम्मा कसबू वल्लाहो लायहदिल कौमल काफ़िरीन (२५८)

भावार्थ—ऐ ईमान वालो तुम अपने पुण्य के अहसान को जतला कर निरर्थक और दुखदाई मत बनाओ जिस प्रकार कि एक मनुष्य जो अपने माल को लोगों को दिखलाने के लिये खर्च करता है और अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान नहीं लाता है, वह मनुष्य उस पत्थर की सिल के समान है कि जिस पर मिट्टी (जम गई) हो और जब उस पर मेह पड़े और वह (मिट्टी) उस पत्थर को छोड़दे और जो कुछ उन्होंने कमाया है उसको किसी चीज पर शक्ति नहीं और अल्लाह काफिरों की कौम को ज्ञान मार्ग नहीं दिखाता।

नोट—जब काफिरों की यह अवस्था है तो काफिरों को अल्लाह ने पैदा ही क्यों किया है।

वमसलुलल्लज़ीना युन्फ़िक़ूना अमवालहुमबतिग़ा आमरज़ा तिल्लाहि व तस्बियतम मिन अनफुसेहिम कमस्ले जन्नातिम बिरबवतिन असाबहा वाबिलुन फआतत् उकुलहा ज़िआफ़ैने फ़इन्लम युसिबहा वाबिलुन फतल वल्लाहो बिमा तामलूना बसीर (२५९)

भावार्थ—और उन लोगों की उपमा जो अपने माल को अल्लाह की सम्मति की अनुकूल व्यय करते हैं और अपने जीवित होने का (प्रत्यक्ष) प्रमाण देते हैं वह उस वाटिका के समान हैं जो अति रमणीय

हो और जिस से वृष्टि हुई हो और दुगुने फल लग रहे हों यदि उस पर वृष्टि न होवे तो (रात की) ओस ही उसके लिये काफी है (निश्चय जानो) कि अल्लाह जिसको तुम करते हो देखने वाला है ।

कबीर भाष्यकार का कथन ।

ऊपर की आयत में वृष्टि की उपमा अधिक धन व्यय करने और ओस की उपमा थोड़ा धन व्यय करने से दी गई है यदि नियत ठीक है तो (अल्लाह की राह में) बहुत खर्च का बहुत सवाब (पुण्य) होता है और थोड़ा पुण्य भी काम आता है जिस प्रकार कि पृथ्वी की वाटिका कि जितना ही उस पर मेह बरसे उतना ही उसको लाभदायक होगा (यदि न बरसे) तो ओस भी उसके लिये काफी है किन्तु इन सब के साथ में नियत का ठीक होना आवश्यकीय है यदि नियत ठीक नहीं होगी तो सब दिखावा हो जायगा ।

एयब्वदो आहदुकुम अन्तकूना लहू जन्नातुम मिन नखीलिब्व अनाबिन तजरी मिन तहतहल अन-हारो लहू फ़ीहा मिनेकुल्लस्समराते व असा बहुल किबरो व लहू ज़ुर्रीयतुन ज़ौफाओ फ असाबहा एसारुन फ़ीहे नारुन फअहतरकत कज़ालिका युबंयुल्लाहो लकुमन आयाते लअल्लकुम ततफ़करुन (२६०)

भावार्थ—क्या तुम में से कोई यह चाहता है कि उसके लिये खजूरों और अंगूरों के बाग हों और जिनमें नहरें बहती हों और सब प्रकार के मेवे वहां उसको प्राप्त हों और जब उसको बुढ़ापा आये और उसकी औलाद कमजोर हो (पस ऐसी अवस्था में) इसको ऐसा बगूला कि जिसमें आग हो उस पर पहुंचे और वह जल जावे इसी प्रकार तुम को (उपमायें देकर) अपनी निशानियाँ दिखाता है कि तुम सोचो ।

* इति पैंतीसवां पाठ *

अथ छत्तीसवां पाठ

याऐहुल्लज़ीना आमनू अन्फ़िक़ू मिनतयबाते माक-सा बतुमवमिम्मा अख़रजना लकुम मिनल अरजे व ला तयम्मममुलख़बीसा मिनहो तुन्फ़िक़ूना व लस्तुम्म बिआख़ज़ीहे इल्ला अन तुग़मिज़ू फ़ीहे व आलमू इन्न-ल्लाह ग़नीउनहमीद (२६१)

भाषार्थ—ऐ मनुष्यों जो तुम (कुरान पर) ईमान लाये हो तुम उस पवित्र वस्तु से कि जिसको तुमने कमाया है और उस वस्तु से कि जिसको हमने तुम्हारे लिये पृथ्वी से निकाला है (अन्नादि) अपने व्यवहार आदि में लाओ और उसमें से अनुचित और दुष्ट मार्ग में व्यय करने का इरादा मत करो क्योंकि तुम उसके लेने वाले (हरगिज़ नहीं) इसके अतिरिक्त तुम अपने आप को छिपाओ और निश्चय कर जानो कि अल्लाह निराधार और बड़ाई के योग्य है।

अश्शयतानो याएदकुमल फ़क़र व या मुरकुम बिल फ़हशाय वल्लाहो याइदकुम मग़फ़िरतमिनहो व फ़ज़्-लन वल्लाहो वासिउन अलीम (२६२)

भाषार्थ—और शैतान तुमको दुखी रखने का वादा करता है और बेशरमी की आज्ञा देता है (किन्तु) अल्लाह तुमको बख़्शिश (दयालुता) अपनी तरफ़ से वादा देता है और वह अधिक जानने वाला है।

नोट–जब ख़ैरात करने के समय दिल में अपने ग़रीब होने का ख्याल आवे और बे हियाई के साथ खर्च करने में रुक जावे तो समझे कि सब कुछ शैतान की तरफ़ से है और जब ख़ैरात करने के समय अच्छे ख्याल हो और श्रद्धा से किया जावे तो समझ ले कि यह अल्लाह की तरफ़ से हुआ है।

यूतिल्हिक्मता मईयंशाओ वमईं यूतलहिकमता फ़क़द ऊतीया खैरन कसीरा वमा यंज़करो इल्लाऊलल बाब (२६३)

भावार्थ—अल्लाह जिसको चाहता है ज्ञान देता है और जिस किसी को अल्लाह ने ज्ञान दिया उसको अधिक श्रेष्ठता के साथ में दिया किन्तु बुद्धिमानों के सिवाय और कोई शिक्षा नहीं पकड़ता है।

वमा अनफ़क़्तुम मिन्नफ्क़तिन औनज़र तुम मिन नज़रिन फ़इन्नल्लाहा यालमहूवमा लिज़्ज़ालमीना मिन अन्सार (२६४)

भावार्थ—और जो कुछ तुम खर्च करो खर्च करने (खैरात करना) से या तुम नजर करो नजर (अल्लाह के नाम पर देना) से निश्चय कर अल्लाह उसको खूब जानता है किन्तु ज़ालिमों के वास्ते कोई मदद करने वाला नहीं।

इन्तुब्दुस्सदा क़ाति फ़नेअमाहि या व इन्तुख़्फ़ूहा व तो तूहा अलफ़ुक़रा आ फ़हुवा खैरुल्लकुम व युकफ़िरों अनकुम मिन् सय्यात कुम वल्लाहो बिमा तामलूना ख़बीर (२६५)

भावार्थ—यदि तुम खैरात को प्रकट करो तो श्रेष्ठ है और यदि तुम प्रकट न करो और उसको फ़कीरों को दो तो तुम्हारे लिये अति श्रेष्ठ है और तुमसे कुछ बुराइयों को अल्लाह दूर करेगा और उस चीज को कि जिसको तुम करते हो *अल्लाह भली प्रकार जानता है।*

लैसा अलैका हुदाहुम् वलाकिन्नल्लाहा यहदी मईं यशाओ वमा तुन्फ़िक़ू मिन खैरिन फ़ले अन्फ़ुसकुम वमा तुन्फ़िक़ूना इल्ला ब्तिग़ाआ वजहिल्लाह वमा तुन्फ़िक़ू मिन खैरईं युव्वफ़ा इलयकुम्व वअन्तुम ला तज़्लिमून (२६६)

भावार्थ—और तेरे ऊपर (ऐ मुहम्मद) उनका (काफ़िरों का) हिदायत करना नहीं है लेकिन अल्लाह् जिसको चाहता है हिदायत करता है और जो कुछ तुम (नेक कामों) में खर्च करो वह तुम्हारी जानों के लिये लाभदायक है। सिवाय अल्लाह् की रजामन्दी के तुम खर्च न करो और जो कुछ तुम नेक काम में खर्च करोगे तुमको पूरा (बदला) दिया जायगा और तुम न सताये जाओगे।

लिल्फ़ुक़रा इल्लज़ीना उह्सिरू फी सबी लिल्ला हे लायस्ततीऊना ज़रबन फिल अरज़े यह्सबो हुमलजाहिलो अग़निआआ मिनत्तअफ़्फ़ुफ़ि तअरिफ़हुम बिसीमाहुम लायस अलूनन्नासा इलहाफ़ा वमा तुन्फ़िक़ू मिन खैरिन् फ़इन्नल्लाहा बिही अलीम (२६७)

भावार्थ—और खैरात उन फ़क़ीरों के लिये है जो अल्लाह् के रास्ते में बन्द किये गये हैं (चल फिर नहीं सकते) उनको जाहिल दौलतमन्द (भली प्रकार) जानते हैं कि वह सवाल नहीं करते तू उनको उनके चहरे से जानता है कि लोगों किपट कर सवाल नहीं करते और जो कुछ तुम भलाई में खर्च करते हो अल्लाह् उसको खूब जानता है।

नोट—ऐसे फ़क़ीरों का देना सवाब (पुण्य) है कि जो अल्लाह् की राह में अटक गये हैं और किसी से अपनी हाजत को ज़ाहिर नहीं करते।

❀ इति छत्तीसवां पाठ समाप्त ❀

सैंतीसवां पाठ

अल्लज़ीना युन्फ़िक़ून अमवालहुम बिल्लयल वन्नहारे सिर्रंव्वअलानियतन ,फलहुम अजरुहुम इन्दा रब्बहिम वला खौफुन अलैहिम वलाहुम यह ज़नून (२६८)

भावार्थ—और जो लोग कि अपने माल को प्रकट रूप से अथवा गुप्त रीति से (खुदा की राय में) खर्च करते हैं उसका फल उनके मालिक के निकट मिलेगा उनको किसी प्रकार का भय नहीं और न वह दुखी होंगे।

नोट—ऊपर की आयत से अल्लाह की राह में खर्च करना श्रेष्ठ माना गया है और भाष्यकारों ने उस व्यय को इस प्रकार बताया है कि वह खुदा की राह में लड़ने वालों और क़ुरान के पढ़ने वालों तथा आदा में खर्च किया जावे।

अल्लजीना यअ्कूलू नर्रिबा लायक़ूमूना इल्लकमा यक़ूमुल्लजीयत्त रव्वतहुश्शयतानो मिनेल मिस्सज़ालिका बिअन्नहुम क़ालइन्नमलबयओ मिसलुर्रिबावाह ल्लाहुल बैया हर्मर्रिबा फ़मन जाआहू मुवाइज़तुव्वं मिर्रब्बिही फ़तअन्तहा फलहू मासलाफ़ वं अमरहू इल्लाह व मन आदा फऊलाइका असहावुन्नारे हुम फ़ीहा खालिदून (२६६)

भावार्थ—जो लोग कि सूद खाते हैं व क़ब्रों से उस शख्स की तरह से खड़े होंगे जिसको शैतान अपने आसेब से (व्याध) बावला कर देता है यह (फल) इस कारण है कि उन्होंने कहा कि सौदागरी भी व्याज के तुल्य है किन्तु अल्लाह ने सौदागरी को हलाल किया और व्याज को हराम किया पस जिस किसी के पास; उसके रब की नसीहत आये और वह (सूद खाने से) डेर उसके लिये उसकी आज्ञा अल्लाह की तरफ से है और जो कोई फिरे (सूद खावे) वह लोग दोजख की आग में सदैव रहने वाले हैं।

नोट—इस आयत के अनुकूल मुसलमानों में सूद हराम है किन्तु सैकड़ों मुसलमान मौलवी मुल्ला लोग सूद खाकर अपने पेट क्यों भरते हैं।

यमहकुल्ला हुरिबा व युरिब्बिस्सदाकाति वल्लाहु ला युहिब्बो कुल्लाकफ्फारिन असीम (२७०)

भावार्थ—अल्लाह सूद को मिटाता है और खैरातों (दान) को बढ़ाता है और किसी कुफ्र करने वाले गुनहगार को दोस्त नहीं रखता है।

इन्नल्लजीना आमनू व आमिलुस्सालिहाते व अकामुस्सलाता व आतुज्जकाता लहुम अजूहुम इन्दा रब्बेहिम वला खौफुन अलैहिम व लाहुम यह जनून (२७१)

भावार्थ—और जो लोग ईमान लाये (कुरान पर) और अच्छे काम किये और नुमाज को क़ायम रक्खा और (जकात) (खुदा की राह पे खैरात) को दिया उनके लिये उसका फल उनके मालिक के निकट है और वह अभय हैं और न दुखी होंगे।

याएओहुल्लजीना आमनू अत्तकुल्लाह। वज़रू मा बकेया मिर्रिबावा इन्कुन्तुम मोमिनीन (२७२)

भावार्थ—ऐ लोगो जो ईमान लाये हो (कुरान पर) अल्लाह से डरो यदि तुम ईमान वाले हो तो जो बाकी सूद रहा है उसको छोड़दो।

फइन्नलमतफअलू फअज़नू बिहरब्बें मिनल्लाहि व रसूलिहीं व इनतुबंतुम फलकुम रुऊसु अमवालिकुम लातज़्लिमूना वलातुज्लमून (२७३)

भावार्थ—यदि तुम (उपरोक्त कहावतों को) न करो तो तुम अल्लाह और इसके रसूल के साथ लड़ाई के लिये तैयार होजाओ यदि तुम तो वह करो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा अस्ल माल है और तुम छोड़दो ताकि तुम न सताये जाओ।

वइनकाना ज़ुउसरतिन फनाज़िरतुन इलामय सरतिन व अन्तस्सदकु खैरुल्लकुम इन्कुन्तुम ताअलमून (२७४)

भावार्थ—यदि कर्जदार दुखी हो तो उसको फरागत (खुले दिल से) के साथ छोड़दो यदि तुम जानते हो तो खैरात करदो यह तुम्हारे लिये बहतर है।

व अत्तकू यौमन तुर्जऊना फीहे इललाहे सुम्मा तुव्वफा कुल्लोनफसिम्बं मा करबत वहुम लायुज्लमून (२७५)

भावार्थ:—और उस दिन से डरो कि जब अल्लाह की तरफ फेरे जाओगे (अर्थात् क़यामत के दिन) फिर हर जीव को जो कुछ उसने कमाया है उसका (फल) पूरा दिया जायेगा और वह (मुसलमान) नहीं सताये जावेगें।

❀ इति सैंतीसवां पाठ ❀

अथ अड़तीसवां पाठ

याओहल्लजीना आमनू इज़ा तदाइयनतुम बिदैनिन इला अजलिम्वे मुसम्मन फक्तबूहो वल यक्तुब्बय्यन कुम कातबुन बिल अदले वला याबा कातिबुन अई युक्तबा कमा अल्लमहुल्लाहु फल्यक्तुब वल युमलिल्लज़ी अलय हिल हक्को वल यत्तिकल्लाह रब्बहू वला युबख्स मिनहो श्यंनफइन कानल्लज़ी अलय हिल हक्को सफीहन औज़ईफन अउला यस्ततीओ अई युमिल्ला हुवा फलयुमलिल वलीहोबिल अदल व अस्तश्हीदू शहीदैने मिर्रिजालिमकु फइल्लम यकूना रजलैन फरजलुम व अमरातानें मिम्मन तर्ज़ौना मिनश्शुहदाए अन्तज़िल्ला यहदाहुमाफतुज्जकिरा इहदा हुमल उखरा व लायब्राशुहदाओ इज़ा मादुऊ व-

लातसअमू अन्तक्तबूहो सग़ीरन औं कबीर न इला अजलही ज़ालिकुम अक़सातो इन्दल्लाहि व अक़्मो-लिश्शहादते व अदना अल्ला तरताबू इल्ला अन्त कूना तिजारतन हाज़िरतनतुदी रूनहा बयन कुम फ़लैसा अलय कुम जुनाहुन अल्ला तक्तबूहा व अश्हिदू व इज़ा अतबा याअ़तुम वला युज़ारी काति बुम् व लाशहीदुं व इन्तफ़ अलू फ़ इन्नहू फ़ु सूकुन बिकुम् व अत्तकुल्लाहा व युल्लमकुमल्लाहो वल्लाहो बिकुल्ल शयन अ़लीम (२७६)

भावार्थ:—ऐ ईमान वालो जब तुम कर्ज़ का मामला एक नियत समय में करो तो उसको लिखो और तुम्हारे बीच में लिखने वाला न्याय के साथ लिखे उसको जैसा अल्लाह ने सिखाया है उसके लिखने से इन कारन करे अर्थात् (अल्लाह की आज्ञा के अनकूल लिखे) और उसका अभिप्राय: वह मनुष्य कहे जो सत्य पर चलने वाला और अल्लाह से डरने वाला और उसमें से न्यून व अधिक न करने वाला हो यदि ऐसा मनुष्य बेवकूफ या कमजोर हो कि जो न लिख सकता हो (और उस लिखे हुये) का अभिप्राय: न्याय के साथ कहे तो अपने आदमियों में से दो आदमियो को साक्षी करा लो यदि दो आदमी न मिलें । तो एक मर्द और दो औरतें जिनको तुम साक्षी के लिये पसन्द करो (उनकी साक्षी ले लो) यदि उनमें से कोई एक अपनी साक्षी भूल जावे तो दो उसको स्मरण करा देवें किन्तु बुलाये जाने के समय इनकार न करें और न कहिली करो तुम इस बात में (कि उस लिखने वाले को) उसको छोटा या बड़ा करके लिखो क्योंकि यह अल्लाह के निकट अधिक न्याय वाला है और साक्षी के लिये पूरा करने वाला है यदि हाथों हाथ सौदागरी करो तो तुमको इस शक में न पड़ना चाहिये और उसका लिखना तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं और जब तुम सौदा करो तो तुमको उस समय एक साक्षी कर लेना चाहिये किन्तु लिखने

वाले और साची को कोई दुःख न दिया जावे और यदि तुम ऐसा करोगे तो उसका दंड तुम्हारे ऊपर है और अल्लाह से डरो कि वह तुमको सिखलाता है और हर वस्तु का जानने वाला है।

वइन कुन्तुम अला सफरिव्वं व लम्य तजदू कातिबन् फरिहानुम मक्बूजतिव्वं फ़इन् आमना बअ्ज़कुम् बाजन फलि युवद्दल्लजी औतुमिना अमाने तहू वल यत्तकिल्लाहा रब्बहू वला तक्तमुश्शहादता वमई यक्तमुहा फइन्नहू आ सिमुन्क़ल्बुहू वल्लाहु बिमा ताम-लूना अलीम (२७७)

भावार्थः—यदि तुम सफर में हो और लिखने वाला न पाओ तो रहिन कब्जा की हुई को अगर अमानत दार तुममें से किसी को जाने तो रहिये कि वह मनुष्य जो अमानतदार है उसकी अमानत को अदा कर देवे और अल्लाह से डरे और तुम गवाही को मत छिपाओ और जो कोई उसको छिपायगा तो निश्चय कर उसका दिल गुनहगार है और अल्लाह उस चीज को, कि जिसको तुम करते हो जानने वाला हो।

नोट—ऊपर की आयत से प्रतीत होता है कि यदि रहिन की हुई चीज कि जिसका लिखने वाला नहीं है और दो गवाह उसको जानते हैं तो उनके सामने दे दी जावें जो अमानतदार दो गवाहों की गवाही पर यदि उस वस्तु के देने में आना कानी करे तो वह गुनह-गार है।

❀ इति अड़तीसवां पाठ ❀

अथ उन्तालीसवां पाठ

लिल्लाहि माफिस्समावाति वमा फिल अरजे व इन तुब्दू माफी अनफुस्कुम औतुहखफहो युहासिबकुम बिहिल्लाहु फयग़फिरो लिमईयशाओ व युअजबो मईं यशाओ वल्लाहु अला कुल्ल श्यन कदीर (२७८)

भापार्थ—जो कुछ पृथ्वी और आस्मानों के बीच है वह सब अल्लाह के लिये है यदि तुम जो कुछ तुम्हारे हृदयों में है उसको प्रगट करो अथवा छिपाओ उसका अल्लाह तुमसे हिसाब लेगा जिसको चाहेगा उसको बख्शेगा और जिसको चाहेगा उसको छोड़ देगा और अल्लाह हर वस्तु के ऊपर शक्तिमान है।

नोट—जब अल्लाह जिसको चाहेगा बख्शेगा जिसको चाहेगा छोड़ देगा ऐसी अवस्था में घोर अन्यायी होजायगा फिर न्याय कहां रहा।

आमनर्रसूलु बिमाउन्जिला इलैहे मिर्रबही वलमो मिनूना कुल्लुन आमना बिल्लाहि व मलायकतिही व कुतबिही व रुस्लही लानुफर्रिकु बयना अहदिम्मं मिरुस्लही व क़ालू समैयना व अतयना गुफरानका रब्बना व इलयकल्मसीर (२७९)

भापार्थ—और पैग़म्बर ईमान लाया उस वस्तु के साथ कि जो उसके रब्ब की तरफ से उतारी गई है और मुसलमान ईमान लाये और हर एक ईमान लाया अल्लाह और उसके फरिश्तों उसकी किताबों पैग़म्बरों पर और हम किसी पैग़म्बरों और उसके रसूल के बीच जुदाई नहीं डालते और उन्हों (काफिरों) ने कहा कि हमने सुना और मानो ऐ रब्ब हमारे हम तुझ से ही बख्शिश चाहते हैं और तेरे तरफ ही फिरना है।

लायुकल्लफुल्लाहु नफसन इल्ला वुसअ़ह़ा लहा मा कसबत व अलैहा माअक्तसबत रब्बना लातुवा खिज़ना इन्नसयना औ अख़तावा रब्बना वलात हमिल अलैना इसरन कमा हमलतहु अलल्लज़ीना मिनक़बलना रब्बंना वला तुहम्मिलना मालाताकतालना बिही व अफो अन्ना वग़फिरलना व अरहमना अन्ता मौलाना फ़अन्सुरना अ़लल क़ौमिल काफिरीन (२८०)

भावार्थ—और अल्लाह किसी जीवधारी को दुख नहीं पहुंचाता किन्तु उसकी शक्ति के अनुकूल जो कुछ उसने किया है (छोड़ देता है) जो उसने कमाया है उस पर उसका (फल है) ऐ रब्ब हमारे यदि हम भूल या चूक कर गये हैं हमको (उसमें) न पकड़ ऐ रब्ब हमारे ऊपर बोझ (गुनाहों का) जैसा कि तूने इन लोगों पर जो हमसे पहिले थे उन पर रक्खा हम पर मत रख ऐ रब्ब हमारे हमसे वह वस्तु के जिसके (उठाने की) शक्ति नहीं रखते हमसे मत उठवा और हमको क्षमाकर और कृपाकर क्योंकि तू हमारा मित्र है तू हमको काफ़िरों (कुरान के न मानने वालों पर) की कौम पर मदद कर

नोट—जब काफ़िरों पर मुसलमानों की इतनी मिहरबानी है कि वह सदैव उनको फतह और कत्ल करना चाहते हैं तो अल्लाह मियां की मिहरबानी का क्या ठिकाना ऐसे अल्लाह से हम बगैर अल्लाह के भले।

इति द्वितीय सोपान का उन्तालीसवाँ व चालीसवाँ पाठ

समाप्तम्

॥ ओ३म् ॥

आर्यमुसाफिर पुस्तकालय की नवीन पुस्तकें

अलकारियों का दुनिया	हिन्दी -)	उर्दू)॥
,, की सूरत	,, -)	,,)॥
,, की चालों का नमूना	,, =)	,, -)
,, का फोटो	,, -)	,,)॥
इस्लामी गप्पें	,, -)	,,)॥
इस्लाम अछूतोद्धार	,, =)	,, -)॥
विचित्र जीवन	,, ।॥)	
ईशोपनिषद्	,, =)॥ यह हिन्दी, उर्दू, अरबी सब में है।	
सत्यार्थप्रकाश अरबी	१)	
कुल्लियात स्वामी दयानन्द उर्दू	१॥)	
व्याख्यान मुक्तावली ,,	१)	
सत्यार्थप्रकाश हिन्दी	१।)	

नोट—इसके अलावा और हर प्रकार की पुस्तकें हमारे यहां से मिलती हैं।

मैनेजर, आर्यमुसाफिर पुस्तकालय,
आगरा।

शर्तिया इलाज

प्रमेह, नामर्दी, तपेदिक, कुष्ठ, संग्रहणी, सुजाक, आतशक, गठिया, मिर्गी, बवासीर और दूसरे भयानक रोगों में अति निराश रोगियों का हमारे यहां शर्तिया इलाज होता है।

पं० बाबूराम शर्मा राजवैद्य और आयुर्वेद भूषण
आयुर्वेदीय औषधालय, आगरा।

मुद्रक:—रवि वर्मा कोठारी, आर्यभास्कर प्रेस, आगरा।